ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

जनवरी 2026/ वर्ष 10 अंक 10

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518
CNS
Network Services
CompuNet Solution
COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING
GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates
बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला

विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ **कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से** ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

जेकर खेती ओकर मति–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

आलेख/शोध लेख/निबंध

अन्हरिया में दउरत आदमी–कृष्ण कुमार/26–27

कविता/गीत/गजल

दू गो कविता–गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'/6
भोजपुरी गजल– डॉ शंकर मुनि राय /7
भोजपुरी गजल– अनिल कुमार दुबे 'अंशु'/7
भोजपुरी गजल दृ मो इश्तेहाक कामिल /7
जातिए पहचान बा–डॉ राम बचन यादव /8
मुखिया जी ! कमीशन बोला
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /8
गजल–डॉ कमलेश राय /12
गीत–संगीत सुभाष/16
गजल–कौशल मुहब्बतपुरी 'कौशल'/21
जरावै दियना–डॉ कमलेश राय/24
पढ़ ललमुनिया–डॉ आकृति विज्ञा 'अर्पण'/25
दुनिया देखि हिम्मत खाँटी
–डॉ आकृति विज्ञा 'अर्पण'/25
हे चच्चा चुपचाप रहा–उमाशंकर शुक्ल 'दर्पण'/28
आर्किमिडीज के यूरेका– शशि रंजन मिश्र
'सत्यकाम'/37–38
हमार उहाँ के – डॉ विष्णु देव तिवारी /38
दोहा–राम प्रसाद साह /38
आखिर में जवन बचल–सोनी पाण्डेय/43
आजकल बियाह में–सविता गुप्ता/43
गीत–डॉ उषा किरण/44
सुदामा जी के तकलीफ– विद्या शंकर विद्यार्थी/44
सपना–केशव मोहन पाण्डेय/44

समीक्षा/पुस्तक चर्चा

भोजपुरी भाषा विज्ञान के एगो महत्वपूर्ण पुस्तक
–'भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी– जयशंकर
प्रसाद द्विवेदी /32–34

समीक्षा/पुस्तक चर्चा

आस–अंजोरः सामाजिक सच्चाई,मानवीय संवेदना आ
भोजपुरी स्वाभिमान के जियत–जागत दस्तावेज –
डॉ संतोष पटेल/35–37

कहानी /लघुकथा/रम्य रचना

बिगनी–सिगनी–शालिनी कपूर/9–12
गरम चाय – अंकुश्री/13–16
डहकत जिनगी– जनक देव जनक /17–21
करार–जितेंद्र कुमार 'नूर'/22–24
सपना के गठरी – स्वर्णलता/40–42

एकाँकी

परधान काका– कनक किशोर /39

साहित्य समाचार

भोजपुरी साहित्यनामा– डॉ सुनील कुमार
पाठक/29–31

बिसनाथ दुअरिया बइठ के

उहे अदिमिया– डॉ सुमन सिंह/45–46

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता साहित्यांगन

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

जेकर खेती ओकर मति

शीतलहर के प्रकोप में अलग अलग तरह से गरमी के पैदा करे क उताजोग हो रहल बा आ लोग ओकरा के महसूसतो बा। ओह पर चरचा के बजारो गरम हो चुकल बा। कबों कवनो बैठक त कबों कवनो खिलाड़ी गरमी के श्रोत बन रहल बाड़ें। समइयो एक्के आँख से देखउवल के चल रहल बा। चाल चरित्र के बात करे वाला लोगवो एक्के आँख से देखे क आदती हो चुकल बा। उ लोग देखते भर नइखे बलुक फीरी में धमकियो दे रहल बा उहो भोंपू लगा के । मुख पोथी के बात त पुछीं मति, उहाँ त लमहर लमहर विचारकन के चौकड़ी जम के एकर जाम छलका रहल बा। मुसकिया के पीही भा मुँह बिजुका के सोमरस के पान त करही के बा, नाही त देस के बर–बेवस्था हिले डुले लागेले। ई बतिया त कोरोना काल में सभे के बुझा गइल रहे। ढेर थोर गरमी त एसआईआर से पसरले रहल ह, लखनऊ के बैठकियो से ओकरा ताप में अउर बढ़ोत्तरी हो गइल। अबले बैठकी का चलते बड़की छोटकी कुल्हि सेना आपन आपन असलहा के धार तेज क के लागले रहल ह कि जाने केने से किरकेट के बयार बह गइल। अब किरकेट के बयार ह कि कुछ अउर एकर लेखा जोखा करत रहीं सभे। एहमें जयचंद आ बिभिसनो आ गइलें, दाल भात में मुसरचंद लेखा। बुद्धू बकसवा पर त बड़का बड़का ज्ञानी लोग ज्ञान गंगा बहावे ला जुट गइल बा। देखनिहार लोग के मन होखे भा मति होखे, देखही के पड़ी।

अइसना में साहित्यो आपन गति मति अपना हिसाब से चलिये रहल बा। इहवों एक्के आँख के खेला बा। आपन आपन मेला बा । आपन आपन देखवइया सुनवइया बा । कहवाँ केकर मान मर्दन हो जाई आ केकरा सिरे सेहरा बन्हा जाई, एकर कवनो मानक नइखे। मानक हइयो बा त अपना अपना परिभाषा का हिसाब से। तबो लिखनिहार लोग के कलम चल रहल बा। साहित्य लिखा रहल बा। पढ़ल केतना जा रहल बा, ई रउवा सभे जानते बानी। सन् 2025 में 60–65 गो अलग अलग विधा में भोजपुरी के पोथी छप चुकल बा,साहित्य जगत का सोझा परोसल जा चुकल बा। एगो संतोष के बाति त मानले जा सकत बा। काहें से कि एहमें से 5–7 के छोड़ दीहल जाव त बकिया लेखक लोग के जेबवे पर पड़ल बा।

मंच,माला, माइक पर त 2014 से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची ला कहा रहल बा। सुने वाला लोग वाह वाह कर रहल बा बाकिर जमीन पर हाल जस के तस बा। जंतर मंतर के बात त जइसे लोगन के ना देखाई देला, वइसहीं सरकारो के ना लउके। कुछ लोग देखबो करेला त अलगा रंग के चसमा लगा के देखेला । अब रउवा का कहब, इहवाँ त जेकर खेती ओकर मति वाल हाल बा। बाकिर भोजपुरिया लोग के आपन हठ बा, उ लोग जवना काम में लाग जाला, लागले रहेला, जबले ओह काम के परिणाम तक न चहुंपा देस। तबे नु गिरमिटिया से गौरमेंट तक के जतरा पूरा होखेला। मने हरला के काम नइखे, लागल रहला के काम बा। डूबत सुरूज के पूजे वाला लोग के पता रहेला कि बिहान होखबे करी। एह नवका बरिस में एही उमेद से आगु बढ़ला का भरोस मन में राखि के भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार रउवा सभे के नवका बरिस के बधाई आ शुभकामना दे रहल बा। जय भोजपुरी ।

■■

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

दू गो कविता

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

(1)
नियराते चुनाव कहियो नेता करे ना कुला
पार्टी चाहे कवनो होखे देता फ्री फार्मूला

होत फजिरे एक दूसरा पर,
उघटा पइंची करावे।
गाँवा गाईं घुमि घुमि के,
आपन शान देखावे।
रैली रोज लगाके बोले खाली ऊल जुलुला
पार्टी चाहे कवनो होखे देता फ्री फार्मूला

जाति धरम के नाम पर,
बाटे अरु उकसावे।
पूछी जब रोजगार के तब
लागे पोंछि हिलावे
नवहा लइका भइले बेरोजगारी पर आगबबूला
पार्टी चाहे कवनो होखे देता फ्री फार्मूला

पटना,छपरा,आरा,सिवान से,
होता रोज पलायन।
पाँच साल पर शिक्षा,स्वास्थ के,
नेता बाटे बायन
महंगाई पर सत्ता कबहु कइलस नाही कबूला
पार्टी चाहे कवनो होखे देता फ्री फार्मूला

(2)

कुहुके करेजवा में हमरो करेजवा
एजवा मारिये दिहले
देबे के परित दहेजवा
एजवा ....

कवन कसूर हमार तनिका बतइति
एगो रहे सोना एगो चानियो अपनइति
परी गइनी फेरा में पावे खातिर पुतवा
एजवा........

केतना हम सोंचनी आ केतना भोकरनी
होत अन्याय पर ना कबहु चोकरनी
काहे के त्यगनी रउआ, कोखि के करेजवा
एजवा.......

अइती अँगनवा त गुलजार करिती
बेटा अउरी बेटी के भेदवा बतइति
सगरो जहान के ई दिहत्ती सनेसवा
एजवा........

कुहुके करेजवा में हमरो करेजवा
एजवा मारिये दिहले
देबे के परित दहेजवा
एजवा ....

❑❑

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी
साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com

भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाजियाबाद, उ.प्र.

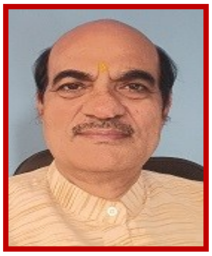

भोजपुरी गजल

डॉ. शंकर मुनि राय

जिनिगी जंजाल जीयत जंगल निकल गईल।
ठोकर ना कबहू लागल अपने फिसल गईल।।

सोचल रहे जे बात कि कबहूं ना हम कहब।
घुंघटा में उनके देखके झट् से निकल गईल।।

तकिया–कपार सेवत जिनिगी पिछड़ गईल।
अंगुरी दबाके केहू आगे निकल गईल।।

सुर साधके ना गवनीं कबहू बधार में ।
घुंघरू बजाके केहू महफिल में छा गईल।।

झिंगुर के गीत सुनके कोइलर लजा गईल।
गिरगिट पहिरके टोपी थपड़ी बजा गईल।।

सोजहग संवरके आंख में आइल ना जे कबो।
सपना में आके 'गड़बड़' दिल में उतर गईल।।

❑❑

❍ शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनादगांव

भोजपुरी गजल

अनिल कुमार दूबे "अंशु "

बेवजह बात कइला से का फायदा।
हाथ अचके त धइला से का फायदा।।

साथ बा गर निभावे क सपना कहीं।
सामने से लुकइला से का फायदा।।

लोग खुद ही जमाना के समझी मरम।
साथ सभका सनइला से का फायदा।।

बा जमाना ई आपन नया रुत रही ।
छोड़ जंगल में गइला से का फायदा।

अब जिये के करामात हम का लिखीं।
सब लुटा के धधइला से का फायदा।।

अश्क से 'अंशु'आपन दरद मत लिखे।
सब अनेरे बतइला से का फायदा।।

❑❑

❍ नगवां, सिवान (बिहार)

भोजपुरी गजल

मो 0 इश्तेयाक कामिल

बन के वर्षा गगन उतर जाला
फूल बगीया के सब निखर जाला

चाँद चमकेला जब अंधरीया में
दीप तब जा के हमरे घर जाला

प्रेम में जाने का छुपल अैसन
कुछ बिगड़ जाला कुछ संवर जाला

बात कुछ बा जरूर दीपक में
हंस के जेहपे पतंगा मर जाला

फूल मुरझाला जैसे खिल खिल के
जिंदगी ऐसहीं गुजर जाला

याद आवे ला जब भी सावन के
मन के संसार तब सिहर जाला

ई सियासत के फूल ह कामिल
जेह पे भंवरा भी जा क मर जाला

❑❑

❍ नासरीगंज, रोहतास

जतिए पहिचान बा

डॉ राम बचन यादव

जात में जात इहां जतिए प्रधान बा
इ ह भारत इहां जतिए पहिचान बा।

जात में जात जइसे केला के पतिया
छिलका पियाज के जस मोथा के घसिया
जात के मान इहां जतिए अभिमान बा
इ ह भारत इहां जतिए पहिचान बा।

पानी के जात इहां मटका के जतिया
भात के जात इहां रोटियो के जतिया
जात से बड़ा–छोट जतिए भगवान बा
इ ह भारत इहां जतिए पहिचान बा।

पीड़ित भयल इहां जतिए से मानव
जतिए से मानव कहाइल दनुज–दानव
चरित–गुनहीन देखा तबो सम्मान बा
इ ह भारत इहां जतिए पहिचान बा।

नेह–मानवता के जाति गइल खाई
हक–अधिकार गयल जाति से लुटाई
जतिए से हमनीं के मिटल पहिचान बा
इ ह भारत इहां जतिए पहिचान बा।

मिलल अजादी बाकी के के अजाद भयल
बंधुआ अजादी अ बंधुआ अधिकार भयल
जतिए अजाद भइल जतिए गुलाम बा
इ ह भारत इहां जतिए पहिचान बा।

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय
इंटर कॉलेज, चकिया–चंदौली

मुखिया जी! कमीसन बोला

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

काहें थुथुन सुजवले हउवा
अब त आपन मुँहवाँ खोला।
मुखिया जी ! कमीसन बोला॥ 2॥

दुई हजार शौचालय के बा
आवास ला कतना लेबा
खोरी में बजकत पनरोहा
बिरधा पेंसन केकरा देबा।
घूमत खूब दहावत हउवा
कान्ही पर लटकउले झोला।
मुखिया जी ! कमीसन बोला॥ 2॥

बी पी एल के कारड चाही
रासन मिलल बजारे जाई
जहवाँ जहवाँ आँखि गड़ल हौ
ओकरो से ह ठसक उगाही ।
हर योजना पचावत हउवा
नइखे बाचल कउनो टोला।
मुखिया जी ! कमीसन बोला॥ 2॥

चउरा छाजन चाहे नाली
बचि ना जाये एक्कौ खाली
दुई झउवा माटी चकरोटे
दसखत बनी दबाके जाली।
आपन भाव बनवले हउवा
कब्जावत जी एस के कोला।
मुखिया जी ! कमीसन बोला॥ 2॥

बिजुरी बत्ती दुअरे दुअरे
सभले बेसी अपना पजरे
उढ़ुक लगते फूटल ठेहुन
दखिन टोला रात जे गुजरे ।
जाति क राग कढ़वले हउवा
सभका सोझा बदलत चोला।
मुखिया जी ! कमीसन बोला॥ 2॥

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

बिगनी–सिगनी

शालिनी कपूर

आह! आधी रात के मारे पियास के गला अइसन सुखा गइल कि चट चट करे लागल। खटिया के नीचे राखल पानी के लोटा उठावे खातिर झुकली त एतना जोर क दरद उठल देह में कि फेरु ओही टुटही खटिया पर पटका गइली। बगले क खटिया पर सुतल बहिन अधनिदिये में झिड़क देहली,– ''चुपचाप सुत रहू त अबे पानी पियबी आ फेर कहबि कि दिसा–मैदान जाये के बा। हमरो देह में एतना जोर नइखे हर बेर तोरा संगेदौड़त रहीं। मनहूस, मउवतो नइखे आवत कि ए जंजाल से छुटकारा मिले। नींद अब का जाने कहाँ बिला गइल, अब सबेर भइला ले अइसहीं बिना पानी के मछरी नियर तड़फड़ात रही मन। थिर देह के भीतर छनछनात याद के भंवर बनले जाता, ए कैसे पार पाइब हे देवता। लागता जैसे कल्हुवे के त बात ह।

''तनी जोरनवा हमरो के दे दिहा''– लेखपाल एगो आँख दबा के चवन्निया मुस्कि काटत आवाज देहलन।

''काहें लेखपाल बाबू, दुलहिन नइहर गइल बाड़ी का जे जोरन हमरा से माँगत बानी।''

पीछे से आवत बिगनी एकदम तिरछोल लेखा पट से जवाब दिहलस।

चटक पियर रंग के फूलदार घघरी जेवना पर लाल रंग के छोटे–छोटे फूल बनल रहे आ ओहिसने फूलन से बनल चौड़ा बाडर, लाल रंग क जेब वाली कुर्ती ओह पर से एकदम मेल खात के पियरे ओढ़नी कस के कान्ही पर से डाँड़ पर ले बान्हल। दूध में मध मिलावल गोर रंग ओह पर एकदम फिरोजी रंग के आँख। नाक–नक्स अइसन कि किस्सा– कहानी के दमयन्ती उहनी के आगे पानी भरे। दरमियाने कद काठी की इ दुनों बहिनन के देह के बनावट देख बुझाये जे विधाता एके जइसन दू गो मूर्ति गढ़लें फेर ओहि साँचा के तोड़ दिहलें। माथ पर चटक चमकत नया डिजाइन के टिकुली, नाक के बीचोबीच लटकत सोना के झुलनी, गरदन में चाँदी की मीनाकारी कइल हँसुली जवना में मछरी और मोर बनल बा, गोड़ में छह– छह गो छाड़ा और हाथन में चाँदी के मोटहन कड़ा के संगहि सीसा के रंगीन चूड़ी। डाँड़ पर चानिये के खूब घुंघरू लागल तगड़ी पहिन उ सौदा बेचे निकल स। दही के तीन गो कहतरी एक के ऊपर एक सइहरले कपार पर साध आ माठा से भरल गगरी डाँड़ प टिका जब उ बेचे निकल स त अच्छा अच्छा लोग के मन डोल जाये। ''दही लियायी हो, की टेर लगावट जब बाजार की ओर चले त घर के मेहरारू बच्चा से पहिले मरदाना दुआर पर खड़े हो जा स। घर के बाल–बच्चों के दूध तक के कबो फिकर ना करे वाला इहे लोग मुँहमाँगा दाम में कहतरी भर दही कीन घर में भिजवा देवे। घर के मेहररुअन के करेजा पर साँप लोट जावे। पूरा देह जैसे कान और आँख बन दुवारी पर टिक जावे।

नाम त इहन के सीमा अउर गीता राखल रहे बाकिर का जाने कइसे पुकार के नाम बिगनी–सिगनी धरा गइल। ई जुड़वाँ बहिन गाँव खातिर आन्ही – तूफान से कम ना रहली स। कब के उहनी के लपेटा में आ जाइ, केहू के अंदाजा ना होखे। शरीफ घरन के मेहरारू पूजा करिहन त हाथ जोड़ ई बिनती जरूर करिहें कि उनका घर के मरद एह तूफान से बाचल रहे। लेकिन मरद के जात घर के बहरा काहें के सराफत ओढ़े, बजार में ढुकते संवसे रंग–ढंग बदल जाये।

कपड़ा के ऊंच दुकान पर बइठल रामबली उहनी के देखते हांक लगइहे , – '' का हो बिधान, देखे ते तोहरो दूध लेवे के बा?

हो–हो – हो– हो हँसत बिधान मोटहन पेट सहरावत दुकान के आगे ठाड़ हो जासु त दुनों बहिन के माथ से जरे त एड़ी पर बुताये।

ओहू दिने दुनों बहिन कहतरी सम्हरले बाजार पहुँचते बाड़ी स कि रामबली फेर टेर लगवलें। बिगनी तनी ढेर बोलता रहे रामबली के व्यंग्य पर तनतनाते त बोली मार दिहलस– '' काहें, राय साहब के दुनों भइंसिया बिसुख गइल बाड़ी स का?

घाव एकदम गहिराहे त लागल आ बिधान राय अपन संयम भुला के झपट बिगनी के एक हाथ से बांह मोड़त दूसरा हाथ से ओकर झोंटा थाम एतना जोर से खिंचलन कि जब तक आस

पास के आदमी कुछ करे, तबले बिगनी कहतरी लेले देले जमीन पर गिर गइल। दही माठा कुल्हि माटी में रिलमिल गइल। सुगनी के काठ मार गइल। दुःख– तकलीफ पहिलहुँ उहनी के जिनगी में कम ना रहे लेकिन भरल बाजार में ई मारपीट...... ......दुनों बहिन मुड़ी झुकवले ओहिजा से लवट गइली स अउर बाजार में कुछ देर खातिर एकदम सुन्न–सपाटा पड़ गइल।

अइसन ना रहे कि बिधान राय कवनो दूध के धोवल रहलन। आपन गाँव का, अगलो–बगल के गाँव वाला जानत रहे कि उ चमटोली के सिलिया चमाइन के रखले बाड़न। ओकरा घर के मय खर्चा त चलइबे करे लें, अपना बड़की हवेली के दुआर के कोठरियन में से एगो पिछलका कोठरी हमेसा ओहि सिलिया खातिर रिजरव रहेला। जहाँ सिलिया के कपड़ा–लत्ता, जेवर गुरिया, इत्तर–फुलेल से ले–के देसी बिदेसी शराब के का जाने केतना वेराइटी ध इल रहेला। बिधान राय के जब मन करे, तब उ चमटोली सनेस भेजवा दिहें अउर सिलिया आपन छब बनवले, मुँह में पान दबवले जब राय साहेब के दुआरी पर गोड़ धरे त घर के मलिकाइन पूजा घर में भगवान के सोझा बइठ जासु। घर के मेहररुअन के कुल खबर बा लेकिन उहो जानत बाड़ी लोग कि मालिक क खिलाफ जा के 'कउवा हँकनी' बने के पड़ जाइ। मरजाद एहि में बा कि चुपचाप एहि नागिन के दुअरे तक ले राहे दिहल जाव। हवेली के मलिकाइन त बिधान राय के बियाहते नु रहिहें। पूजा में भा कवनो तीज–तेवहार गठजोड़ बियाहते से नु होइ, घर के बहरा के कूड़ा बस घर के चौखट ना पार करे। बड़े आदमी लोग के ई ऐब थोड़े न मानल जाला, ई त सदियन से रीत चलल आ रहल बा। अइसन छिनार त का जाने केतन आवत–जात रहिहें।

राजस्थानी खानाबदोश बाप और अफगानी माँ के पैदाइश ई दुनों बहिन ओहि गांवे में ना आसपास के इलाका वालन खातिर भी अजूबा ही रहली स। बाप लालचंद गाँव के बाजार में तरकारी क दुकान लगावे। बटइया पर लिहल खेत में जवने साग – तरकारी उगावे, ओकर एक हिस्सा खेत मालिक के देवे और बाकी के बेच आपन कुनबा पाले। लालचंद ओ गाँव क ना रहल। लगभग तेरह साल पहिले राजस्थान क सीमा से लागल इलाका से भागके इहँवा तक आ गइल अउर का जाने का सोचके इहँवे बस गइल। कमउमरी से ही लाल. चंद घूम–घूमकर मेहरारुन क सिंगार के सामान बेचत रहल, चूड़ी, टिकुली, लाली, कान क झुमका–बाली, रंग –बिरंगा परांदा अउर कबहुँ कवनो शहराती लइकी भा पतोह क विशेष डिमांड पर बॉडी भी ले आवे। संवराहे छरहरा लइका देखे में ओतना सुघर त ना रहे लेकिन आपन मुस्कान अउर बातन से केहू के भी आपन मुरीद बना लेव. । एहि लालचंद के मेहरारू एतना सुघर कि परदा में रहला के बादो ओकर सुन्दरता के चरचा आसपास के गाँव में भी होखे। उड़ता खबर त इहे रहे कि कवनो अफगानी क बेटी के भगा ले आइल रहे लालचंद अउर कवनो मंदिर में भगवान के सामने पुजारी दुनों के बियाह करवा दिहलें, ओकरी बाद जवन इ मरद मेहरारू आपन देस गाँव छोड़के भागल त फेर एहि गाँव से लवटे के ना सोचल। जेतना मुँह, ओतना किस्सा। साँच का बा उ त बस मियाँ–बीवी जाने। गाँव के सरपंच ने दीनदयाल जी ओह मासूम जोड़ा के गाँव मे बसे खातिर इजाजत दे दिहलें अउर लालचंद एहिजा के होकर रह गइल। नया जोड़ा मन लगाके बटइया पर लिहल खेत में जी जान लगा के अपन जिनगी के गाड़ी हँसी खुसी चलावे लागल। समय आपन चाल से आगे बढ़त गइल अउर लालचंद–बो जुड़वाँ लइकिन के जनम देत घरी में चल बसल। बिछोह में पगलाइल लालचंद आपन महजबीं के मरला क जिम्मेदार एहि बचियन के समझ उहनिये से रार पाल बइठल। बिना महतारी के लइकी टुवर नियर पास पड़ोस क दया पर पलाये लगली। खेतियो के काम भी बस जइसे तइसे चलत रहे। बेढंगे पलाये वाली बेटी आपन खेले–खाये के दिन में ही बाप खातिर चूल्हा जरावे से लेके खेत के निराई–गुड़ाई तक के काम करे लगली स। गरीबी में पलाये वाली दुनों लइकी आपन महतारिये के नाक–नक्सा अउर रंग ही ना चोरवली स, उहन के हँसी अउर आँखिन के फिरोजी रंग भी महतारिये के मिलल रहे।

समय से पहिलहीं उहनी के सुन्द. रता लोगन क आंख में खटके लागल। गरीब क बेटी सुन्दर होखे ओहू पर केहू देखे–भाले वाला ना होखे त सबकरे खातिर मनोरंजन के साधन हो जाले। अपने दुख में डूबल लापरवाह बाप के कुछ–कुछ अंदाजा होखे लागल, तबसे उ आपन बेटियन के सम्हारे के जतन सुरु कर दिहलस। अब खेत पर जाये त रात होखे से पहिले लइकिन के पास लवट आवे। खेत की रखवाली से बेसी जरूरी अब बेटियन के रखवाली हो गइल रहे। जवना दिने ओके देर होखे त बगल के विधवा फुआ उहनी क साथे रुकल रहिहें।

पूस के हाड़ कंपावत जाड़ पड़त रहे। बुझाये कि सूरजदेव भी जाड़ा–पाला से काँपत आसमान में कहीं चुपचाप मुड़ी गाड़ के लुका गइल बाड़न। बड़ा मुश्किल से चार– छह दिन पर कबहूँ झाँक लेवें। हाँड़ कँपावत एहि जाड़ा–पाला में बिगनी–सिगनी खाना लिहले खेत पर पहुँच गइली स। अलाव जरवले लालचंद इन्तजार करत आँख मुंदले पीठ पेड़ से लगवले ओठन्गल बुझाये कवनो सपना देख रहल बा। पहिला बार बेटी अपना बाप के अइसन मुस्कियात देखली स। दुनों बहिन एक–दूसरा ओर देख फिक्क से हँस दिहल. ी। लालचंद अचकचा के आँख खोल लिहलें अउर लइकिन के खी खी करत देख तनी लजाते झिड़ीक दिहलें। लइकी बाप क ई रूप देखके तनी दिलेर हो गइली स अउर संगहि अलाव घेर बैठ गइली स। कौर बना – बना लालचंद एक–एक कर बेटियन के खियावे फेर खुद खाये। बेटी बाप के ए दुलार पर खुस त बाड़ी स लेकिन अझुराइलो बाड़ी स कि आज बाबू के का हो गइल बा।

खाना खत्म कइके लालचंद तनी देर सुस्ताये बइठल त दुनों लइकी रखवाली खातिर खेत के चक्कर लगावे लगली। थोड़की देर भइले रहे कि खूब जोर से चिल्लाये क आवाज सुनि के लालचंद हड़बड़ाइले उठल अउर पूरा दम लगा के आवाज क दिसा में भागल। देखता ते जमीन पर गिरल बिगनी अपना उपर झुकल लइका के हटावे के कोसिस में नोच–बकोट रहल बिया अउर सिगनी के दु गो लइका जोर से पकड़ले मुँह के जोर से अपना हाथ से दबा देले बाड़न स। लालचंद पहिले त अकबका गइल, जब बुझाइल त बिगनी के ओर लपक के जाते बा कि लाठी क एगो जोरदार वार कपार पर पड़ते खून क धार से जमीन रँगाये लाग. ल।

डेराइल लइकी भला केहू से का कहिहन स, के सुने वाला बा उहनी के कुछ दिन त अगल बगल के लोग खियावल–पियावल लेकिन कब तक? सरपंच जी खेत फेर अपना कब्जा में ले लिहलें धान–पान नियर लईकी भला कवना बूता पर खेती जइसन हाड़तोड़ मेहनत कर पइहन स? फुआ उहनी के ले के केकरा दुआरे ना गइली लेकिन लईकी जात ओहू पर आगे नाथ ना पीछे पगहा। लेकिन हाय रे विधाता! उहनी के सुन्दरता ही दुश्मन बन गइल, कहीं ठौर ना मिलल। मेहरारू अपना घर के मरदन के खूब निमन से जानेली स। बुझ गइली स जे फूस के नजदीक अलाव राखि ओहि आग में जलकर सर्वस्व भसम हो जाई। फुआ जब दुनों लइकिन के लेके मंटू क आजी के गोड़ ध के रोवे लगली त तरस खाके उहो अपना काम खातिर दुनों बहिनन के रख लिहली। मंटू क दबंग आजी से उनकर खर– खानदाने ना लगभग मय गाँव डेराये एहि से फुआ निफिकिर हो गइली। पैंसठ पार कर चुकल आजी गाँव भर में सबसे बड़े जोत क मालकिन रहली। रुतबा अइसन कि सरपंच भी उनका आगे हाथ बान्ह खड़ा होखसु। हुक्का के शौकीन आजी कलफ लगावल सफेद साड़ी पहिन जब अपना घर के दलान में बइठल हुक्का गुड़गुड़ावस त घर क पतोहन संगे दुआर पर बइठल दूनों बेटवा भी एकदम मुस्तैद हो जासन कि अम्मा अब का कही।

बिगनी–सिगनी इहवाँ आ के निफिकिर हो गइली स,उहनी के बुझा गइल कि आजी के रहते केहू उहनी के नुकसान ना पहुंचाई। बस एहिजा त गलती भ गइल। आजी बूझिये ना पइली कि सरवन कुमार नियर उनकर बड़का बेटा रात होते कवनो राछस में बदल जाला। उनका त इहो ना बुझाइल कि तनी सा खटका भइला पर नींद उचाट होखे वाली रात खानी बेटा के भरल हुक्का गुड़गुड़ावत आजी अइसन कवन नींद सुतस कि सबेर से पहिले एकहू बेर नींद ना खुले। बिगनी–सिगनी जेवना घर के सुरक्षित मान के आसरा लिहली स, उहे जेलखाना बन गइल । घर के भीतर कुढ़त पतोह जब बेटा दुनों बहिनन से नजदीकी देखली त अगिया बैताल बन गइली। हमउमिर मंटू अउर बिगनी–सिगनी के नजदीकी बर्दास्त के बहरा रहे। मंटू क सिगनी खातिर आजी के अगल–बगल चक्कर काटल उनका महतारी क छाती में गड़े लागल। बाप क जुठारल लईकी बेटा से प्रेम करे, ई कहाँ के न्याय हवे?मामिला आजी के दरबार में पहुँचल त फुआ के आगे हाथ जोड़ आजी दुनों के लवटा दिहली। आन क बाल बच्चा खातिर आपन घर ना नु तोड़ी केहू। सही–गलत का होखेला। तुलसी बाबा कहिए गइल बाड़न ' समरथ के नाहि दोस गुंसाई।'

जवना उमिर में बाल बच्चा खेलौना से खेले लें, ओहि उमिर में बिगनी–सिगनी खुदे ि खलौना बनल एने ओने डोलत बाड़ी स। बूझ गइली स कि उ दूसर लइकिन से अलगा बाड़ी स आ इहे उहनी के नियति बा। फूआ एक बार फेर उहनी खातिर महफूज ठिकाना खोजे में लाग गइली।अबकी दोनों ने खुद ही अपने लिये ठिकाना तलाश कर लिया। गाँव के सीमा पर चौधरी क गौशाला रहे जहाँ पहलवानी क शौकीन चौधरी

खाली दूध–दही क कारोबारे ना करे य ओकर पुलिस और अपराधियन से भी बढ़िया नाता रहे। जवानी की दहलीज पर ठाड़ बहीनन के नया ठेकाना अब चौधरी क गौशाला हो गइल। बहुत कम उमिर में दूनों बुझ गइल रहली स कि अकेले जियल आसान नइखे। पुलिस आ अपराधियन के सोहबत उहनी के आपन कीमत के अंदाजा करा देले रहे। दही बेचके दूनों लवट के आव सन त अँचरा के गांठ में खाली दही भर के पइसा ना रहे। लोक के सोझा दुत्कारे गरियावे वाला केतना सफेदपोश लोगन के कुंडली इहनी के अँचरा में बन्हाइल आवे। लईकी धीरे–धीरे जमाना के रंग–ढंग बुझ गइली स कि एहिजा केहू बेमतलब चुटकी भर महुरो ना देइ। कबहुँ धूर माटी में लपटाइल, डेराइल सकुचाइल अइसन बढ़ली स कि सज–धज जब उ बाजार में दही बेचे निकले त बड़–बड़ जाना के मन डोल जाए।

दिन बीतत गइल आ बिगनी–सिगनी दुनिया के उ कुल्हि रीत–रिवाज सीख लिहली स जवना के सभ्य कहाये वाला समाज कवनो लइकी खातिर कबहूँ सही ना कही। गाँव के मेहरारू मनौती मांगिहें त देवी –देवता से ई जरूर मंगिहे कि बिगनी–सिगनी के टोना से घर के मरद बाचल रहस।

समय बीतत गइल आ बिगनी–सिगनी के फिरोजी आंख के चमक भी धुँधलाये लागल। नस्वर देह भला कब तक जवान रहे, चमड़ी के पुजारी धीरे–धीरे मुँह फेरे लागल आ बिगनी–सिगनी के आतंक कम होत गइल। चौधरी क गुजरते ओकर बेटवा दूनों बहिनन के गौशाला से भगा देहलन स। बिसुख गइल गाय व्यापार करे वाला कसाई के बेचत के देरी ना करे त बिगनी–सिगनी के कवन औकात कि उहनी के केहू राखे । ढलती उमिर में दूनों बहिन आपन बाप के बनावल ओहि माटी के ढहत घर में फेर आ गइली स। का जमाना आ गइल कि कबो एहि बहिनन के देखे खातिर दिन भर में का जाने केतना फेरा लगावे वाला अब कनखिया के निकल जाता। बहिनन के जवानी त ढल गइल बाकी जुबान के तेज आरी अबहियों ओइसहीं तेज कि सरीफ कहाये वाला मरद ओह गली से गुजरत घरी डेराये कि कब पोल खोल द स।

बिगनी–सिगनी अब गाँव के लोगन क कहानी किस्सा बन गइली स। जब कबहूँ खिसिया के दूनों बहिन नाम लेके फूहर – फूहर गारी देवे लागे त मोहल्ला टोला के छोटहन लड़िकवन के एगो नया खेल मिल जाये। कवनो केवाड़ी के साँकल बजा के भाग जाये त कवनो उहनी के अंग. ना में इंकड़ी/ ढेला मार गरियावे के आनंद लेवे।

मंटू क अम्मा चोरी–छिपे जब तब आपन कमकरिन से खाना– कपड़ा लत्ता जवन जुटे तवन भेजवा देस। पतोह देख के दुविधा में पड़ जाये कि जवन बिगनी सिगनी क डरने अम्मा देवी–देवता से मनौती मांगे, उहनी खातिर एतना सरंजाम काहे क रहल बाड़ी। मंटू के अम्मा कवना मुंहे कहती कि बिगनी–सिगनी क दुर्दसा में एह घर के मरदाना सबसे आगे रहलन स। कवना मुंहे कहती कि उ टुवर लड़किन के आसरा देहला से बेसी उनके आपन मालिक के मरजाद बचावे खातिर के ए घर से निकाले वाली उहे रहली।

❑❑

❍नोएडा, उ0 प्र0

गजल

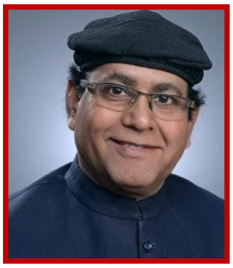

डॉ कमलेश राय

देखींला सुधि क झाँकि के दरपन कबों–कबों
आवे इयाद नेह क आँगन कबों–कबों ।1

अइलीं शहर में रूठि के हम घर बिसारि के
अबहूँ हवा करेले मनावन कबों–कबों।।२

हमरा बदे त हर घरी मौसम रहल उदास
जिनगी में पवलीं भोर सुहावन कबों–कबों।।३

जाने कहाँ–कहाँ उड़े बदरा के पाँखि से
उतरेला हमरा गाँव में सावन कबों कबों।। ४

पाथर भइल समय क ई बदले बदे मिजाज
हमहूँ करीं जतन आ उधापन कबों–कबों ।५

❑❑

❍ मऊ ,(उ0प्र0)

गरम चाय

अंकुश्री

रेलगाड़ी से उतर के टेसन से बाहर आवते राकेश के आउटो रिक्सा मिल गइल। ओकरा से ऊ पकवा इनार लगे पक्की सड़क पर उतर के पैदले अपना घरे चल अइलन। दुआरी पर चंद्रभूषण के बेटी बइठल मोबाइल देखत रहे। मोबाइल में ओकर अतना धेयान लागल रहे कि राकेश के आइल आ बेग रखल ओकरा पता ना चल पाइल। ऊहाँ रखल प्लास्टिक के कुर्सी खींच के ऊ बइठे लगलन त भूषण के बेटी के उनकरा पर नजर पड़ल। ऊ झट से उनकर गोड़ छुअत कहलस, ''प्रणाम बड़का पापा।''

''खुश रहऽ।'' कहते राकेश कुर्सी पर बइठ गइलन। दुआरी पर पहिले एगो बड़का भारी चौकी रहत रहे। पता ना ऊ का भ गइल। अब ओहिजा प्लास्टिक के कुर्सी रखल बा। ऊ पूछलन, ''तहार पापा ?''

''ऊ मंदिर गइल बाड़न।''

''मंदिर, अतना देर से ?''

हँ बड़का पापा ! उनकर इहे समय ह।'' ऊ चहक के कहलस, ''मंदिर के बाद ऊ नयकाटोला ट्यूशन पढ़ावे जालन। ई उनकर रोज के नियम ह।''

''बाह, ई त बहुत अच्छा नियम बा। हमार बेग अंदर रख द, हम त्रिलोकी चाचा किहाँ से आवत बानी।'' बेग में से मोबाइल आ पर्स निकाल के ऊ चल देलन। रास्ते में कुईयां के पछिम त्रिलोकी चाचा के घर बा। उनका के देख के बड़ा खुश भइलन, ''आव बबुआ, आव ! बहुत दिन के बाद अइल ह। हमरा बुझाता कि तू सात–आठ बरिस पर गाँवे आवत बाड़ ? कब अइल ह ?''

''अबहिंए अइनी हँ। घरे बेग रखके चलल आवत बानी।'' राकेश कहलन, ''चंद्रभूषण के बेटी दुआरी पर बइठल रहली। ऊ कहली कि पापा मंदिर गइल बाड़न। ओकरा बाद ऊ ट्यूशन पढ़ावे जइहन। मंदिर जाए के बात सुन के हमरा बड़ा खुशी भइल।''

''भूषणे ना, उनका लेखा गाँव के ढ़ेर लोग मंदिर जाला।'' त्रिलोकी चाचा कहलन, ''हमरा घर के पूरब ओर थोड़ा अगवा पारस चाचा के बनावल मंदिर तहरा इयाद होखी। आ तहरा घरे के पछिम ओर पंडितजी वाला मंदिर बा। भोर में गांव के मेहरारू लोग ओह दूनों मंदिर में पूजा करेली। ओह लोग के गइला के बाद ई लोग ऊहँवा जाला। अबहीं ले दुनो मंदिर में मर्दन के जुटान हो गइल होखी। ई रोज के नियम बा। एह लोग के जाड़ा, गरमी चाहे बरसात के कवनो असर ना पड़ेला।''

''चाचा, रउरा ई त बड़ा नीमन बात सुनवनी। गाँव के संस्कार अतना बदल गइल ई हमरा पते ना रहे।'' राकेश कहलन, ''हम इहँवा ना रहेनी त एही से हमरा अइसन बात पता नइखे। मंदिर में ऊ लोग केतना देर ले पूजा–पाठ करेलन ?''

''बबुआ, मंदिर में ऊ लोग जाला जरूर, बाकिर ऊहँवा पूजा–पाठ ना करेला। ऊ लोग ऊहँवा दिन भर मंदिर के खाली पड़ल जगह के उपयोग करे खातिर जाला।'' चाचा बतवलन, ''गाँव में दूनो मंदिर लेखा एकांत जगह कहँई नइखे। एही से दिन भर लोग ऊहँवा जुटल रहेला।''

''जब ऊ लोग पूजा–पाठ ना करेला त उनका मंदिर के एकांत जगह से का मतलब बा ?'' राकेश पूछलन, ''ऊ लोग ऊहँवा धेयान करे चाहे पढ़े जाला का ?''

''ह–अ, ह–अ–अ ! ऊ लोग दिन भर ऊहँवा ना त धेयान करे जाला, ना पढ़े जाला। ऊ लोग ऊहँवा जुआ खेलेला, जुआ।'' त्रिलोकी चाचा बतावे लगलन, ''जुआ जीत–हार के खेल ह। एहमें कोई जीते ला तबे जब कोई हारे ला। हारे वाला के मुँह लटक जाला। जीते वाला के तरफ से बीच–बीच में एकाध चीलम गाँजा हो जाला। गाँजा हारहूं वाला के पिआवेलन स। मंदिर ह, एहसे लोग ऊहँवा दारू ना पिएला। तू जे कहलऽ ह नू कि भूषणा मंदिर के बाद ट्यूशन बढ़ावे जाई। जुआ में जीतला के बाद ओकनी के नयकाटोला जालन स। ऊहँवा ओकनी के ट्यूशन पढ़ावे ना, दारू पिए जालन स। जीत–हार आ पीअला–पीअइला के बाद मार–पीट आ माई–बहिन सब हो जाला। ई रोज के किस्सा बा।'' कुछ रुक के चाचा कहलन, ''एकनी के किस्सा छोड़ऽ, आपन बताव, का हाल बा ?''

राकेश आपन हालचाल बतवला के बाद पूछलन, ''हम देखनी हँ कि एगो आदमी छोट चुल्हा पर ''

बड़का केतली रख के हाथ में लटकवले कहँई जात रहे। गाँव में कवनो चाय बेचे वाला आवेला का ?''

''ऊ चाय बेचे आवेला ना, चाय बेचे जाला।'' चाचा बतवलन, ''झरी दूबे के त तू जानते बाड़, उनके बेटा ह। उनकर बड़का बेटा त किशोरावस्थे में कहाँ चल गइल केहू के पते ना चलल। ई छोटका बेटा ह, चाय बेच के आपन आ मेहरारू के पेट भर रहल बा।''

''ई जुआ खेले आ शराब पिए ना जास का ?'' गाँव के हालत सुनला के बाद उनकर ई सवाल वाजिब रहे।

''ना, ई ओने से एकदम दूर रहेलन। ई मेहनत क के कमाए–खाए लन।''

''झरी चाचा त अपकारी के दरोगा रहस। उनकरा बेटा के चाय बेचे के ई नौबत कइसे आ गइल ?'' राकेश के दिमाग में झरी चाचा के चेहरा घुमे लागल। ऊ लंबा–चौड़ा आ गोर आदमी रहस। ''झरी चाचा गाँव में ईमानदार आ दबँग आदमी कहात रहस ?

''देखऽ बबुआ ! जादेतर आदमी के सोभाव हाथी के दाँत लेखा होला – देखावे के दोसर आ खाए के दोसर। आदमी के जवन रूप देखाई देला उहे रूप ओकरा भीतरो रहल जरूरी नइखे। बाहरी आ भीतरी रूप के आपसी सामंजस्ये पर आदमी के व्यक्तित्व बनेला आउर ओही अधार पर ओकर बिकास चाहे बिनास होला। बहुते लोग के जिनिगी गाँव–घर में देखाई दोसर देला आ नोकरी पर चाहे शहर में दोसर तरह के जिनिगी जिएला। बाहर में कोई कइसे रहत बा – एकरा बारे में लोग खुल के ना जान पावेला। बाकिर गाँव के हर बात मुँहा–मुँही बच्चा–बूढ़ा सब कोई जान जाला।'' एही बात पर ऊ गाँव के नरोत्तम दूबे के बारे में बतावे लगलन।

नरोत्तम दूबे के घर पक्का के रहे। एहसे गाँव में उनकर घर 'पक्का पर' कहात रहे। गाँव आ जवार भर में ऊ एगो आदर्शवादी के रूप में प्रचारित रहस। ई प्रचार जमुना लाल जादे करत रहस। दूबेजी रेलवई जहाज पर टीटीगिरी करत रहस। ओह पार से गाँव के अवनिहार कतना लोग के ऊ बिना टिकटे गंगा पार करा देवत रहस। ऊपर से त ऊ बड़ा अच्छा लागत रहस, बतिआवतो बड़ा नीमन से रहस। एहसे जे केहू मिलत रहे, उनकरा से प्रभावित होले बिना ना रहत रहे। बाकिर उनकर सोभाव के सच्चाई कुछ आउर रहे। दोसरा के खुशी देख के ऊ खुश ना होत रहस, बलुक भीतरे–भीतर उनका जलन हो जात रहे। अपना से मिले वाला के ऊ पेट के बात ले लेवत रहस आ बाद में ओकर हितैषी बनके अइसन राय देवत रहस जेसे ओकरा नुकसान हो जाए। ऊ केहू के भलाई करे के ना चाहत रहस। दोसरो कोई जदि केहू के भलाई करे के चाहत रहे त ओकरा के ऊ घुमा–फिरा के मना कर देत रहस। धेयान–ज्ञान आ दिनचर्या के बात ऊ खूब बतिआवत रहस। बाकिर मेहरारू के मुअते उनकर संबंध गाँव के एगो बिधवा औरत से भ गइल, जे रिस्ता में उनकर पतोह लागत रहे। गोर–सुंदर आ नाट मेहरारू साँझी बितला के बाद जब छिप–छिपा के अपना घर से दूबेजी के घरे जाए त कुछ लोग ओकरा के देखिए लेवत रहे। दोसरा दिन गाँव भर में चर्चा होखे लागत रहे। लोग कहे लागत रहे कि हम देखनी हँ त हमहूँ देखनी हँ। नरोत्तम दूबे दुरूपा आदमी के साछात उदाहरण रहस। ऊ छोट मनोवृत्ति के लंबा आदमी रहस।

''राकेश बबुआ, तहरा के एगो बात बतावत बानी।'' त्रिलोकी चाचा राकेश के ओर देखत बोललन, ''तहरे घर के बात ह, तहरो जाने के चाहीं। बुरा मत मनीह। हम जे बात बतावे जात बानी ऊहो आदमी के दोहरा आचरण के बखान करत बा। तू आपन चचेरा भाई भुषणा के कम समझत बाड़ का ? ऊ कहत फिरेला कि तू लोगनी गाँव में अइबऽ त टाँग तूड़ दी। ऊ आपन घर फोड़े में लागल रहेला, गाँव में भी लोग के घर फोड़त फिरेला। जुआ आ शराब के साथे ओकर इहो काम ह – गाँव में लोग के एक–दोसरा से अझुरावल आ बाद में ओकरे के सझुरावल। एह तरह से ऊ आपन खाए–पिए भर के बेवस्था कर लेवे ला। कवनो के केस सझुरइला से चाहे जुआ में जीतला से जब ओकरा नीमन कमाई होखेला त ओह दिन ऊ घर में शिकार ले जाला आ पूरा परिवार के साथे जश्न कर के खाएला–पिएला।''

त्रिलोकी चाचा से गाँव के लोग के दुरंगा आचरण के बात सुन–सुन के राकेश हयफ रहस। ऊ गाँवे बहुत कम आवेलन। कबहीं पाँच बरिस पर त कबहीं आठ बरिस पर। अइबो करेलन त एक–दू दिन रहके चल जालन। एहसे ऊ घर–गाँव के बारे में बहुत कम बात जान पावत रहस। त्रिलोकी चाचा अपना जमाना के ग्रेजुएट रहस आ बाँसुरी बहुत नीमन बजावत रहस। एक–दू जगह नोकरी कइलन, बाकिर मालिक के बेवहार अच्छा ना लगला से घरे आके बइठ गइलन। घर के इकलौता बेटा, खेत बेच–बेच के जिनिगी गुजार देलन। राकेश

आ उनके लेखा कुछ आउर लोग जब गाँव आवेला त उनका से भेंट करेला। ओही लोग से उनका कभी–कभार कुछ नगद मिल जाला। ऊ कहलन, ''तू लोगनी बाहर रहे लऽ, एहसे इहँवा के छोट–बड़ ढ़ेर बात तहरा मालूम नइखे। इहँवा गाँव में औरत लोग के एके गो काम बा – अपना सवाँग के बारे में झूठ–साँच बतिआ के खूब प्रचार कइल आ उनका के ऊँचा उठा देवल। इहँवा नरोत्तमे दूबे ना, उनकरा जइसन ढ़ेर लोग बा, जे खीरा लेखा ऊपर से चिकना देखाई देवेलन।'' ऊ जमुना चाचा आ उनकर बेटा हरीशो के बारे में बतवलन।

बाहर जे काम करेलन उनकरा बारे में गाँव वालन के जल्दी जनकारी ना मिल पावेला। एहसे उनकरा से जुड़ल कुसमाचार प्रचारित ना हो पावेला। हँ, उनकरा से जुड़ल नीमन समाचार साँझी होते–होत पूरा गाँव में चमगादर के उड़ान लेखा फइल जाला। ई काम घर के औरत लोग करेली। ऊ औरत मेहरारू होखस चाहे मतारी। ऊ भर–भर दिन खाली आपन सँवाग के सुप्रचार में लागल रहेली। वर्तमान के प्रचार में उनकर आ उनकरा परिवार के भविष्य भले खराब हो जाला, लेकिन आपन बेटा–भतार के प्रचार करे से ऊ बाज ना आवेली। भूषण के बाबूजी रेलवे डाक में नोकरी करत रहस। ऊ ईमानदारी, सावधानी आ लगनशीलता के बारे में खूब बतिआवत रहस। सुननिहार के उनकर बात सुन के लागत रहे कि जब ई अतना अच्छा आदमी बाड़न त इनकर परिवार के लोग कतना अच्छा होखी। उनकर ई गुण के बखान उनकर परिवारो वाला खूब करत रहे। बुझाए कि साचहूँ कतना बड़ा संत बाड़न। लोग एही भ्रम में उनका आउर उनकर परिवार पर बिसवास करके उनका साथे सटे के कोसिस करे लागत रहे। बाकिर उनकर सोभाव के सच्चाई उनका रिटायरमेंट के साल–दू साल पहिलहीं सामने आ गइल। ऊ लाप. रवाही के आरोप में सस्पेंड हो गइल रहस आ सरकार के बेईमानन के सूची में उनकरो नाम शामिल भ गइल रहे।

भूषण के बड़ भाई के नाम हरीश रहे। ऊ स्टेनो जमादार के रास्ते दरोगा बनल रहस। सैद्धांतिक बात बतिआवे में ऊ अपना बाबूओजी से आगे निकल गइल रहस। जब ऊ बोलस त उनकर काबलियत के आगे उनकर बाबूजी आउर माई एकदम चुप हो जात रहस। बापो–मतारी के चुप करा देवे के क्षमता वाला बेटा के मन अइसन बढ़ल कि नोकरियो में ऊ मनमानी करे लगलन। बतिआवे में जतना तेज रहस, ओतना जनकार ना रहस। लालच आ चोरी उनकरा सोभाव में कूट–कूट के भरल रहे। एहसे ऊ नोकरी में तीन–तीन बेरा सस्पेंड भ गइलन। आ सबसे बड़ बात रहे कि सस्पेंशन के ऊ अपराध ना समझत रहस, बलुक ओकरा के अपना शहरी समाज में तगमा लेखा बतावत रहस। एने नोकरी पर ई हालत रहत रहे आ ओने घर पर माई दरोगाजी के तारीफ करत ना थाकत रहस। अपना बेटा के बारे में उनकर नाँव लेके ना बतिआवत रहस। उनका के ऊ हमेशा दरो. गाजी–दरोगाजी कहत रहस। मेहरारूअन के प्रचार तंत्र बड़ा तगड़ा होला। अइसन लोग बिना मिठाइ खिअवले खाली मीठ–मीठ बोल के आपन मिठास बाँटत रहेली। दरोगाजी भले गाँव वालन के कवनो काम ना अइलन, बाकिर उनकर पदनाम के माला जप–जपके परिवार के लोग गाँव वाला से लाभ उठावत रहल।

''तहरा त मालूमे होखी कि हरीश नोकरी में जायज–नजायज अतना कमइलन, बाकिर जिनिगी में कुछ कर ना पइलन। बाल–बच्चा के परवरिस होखे चाहे घर–दुआर, ऊ कुछो ना कर पइलन। जिनिगी के कमाई बोतले के रास्ते उड़ा देलन।'' त्रिलोकी चाचा निश्पक्ष भाव से बतिआवत रहस, ''जानत बाड़, झरी भइया के बेटवा के चाय बेचल हमरा सबसे अच्छा लागेला। अपना मेहनत से कुछ कमा त लेवत बा ! जतना लगन से ई आपन काम कर रहल बा, एकरा मवका मिलल रहित त ई कहाँ–कहाँ से पहुँच जाइत।''

''झरी चाचा के बेटा रहस, उनका मवका काहे ना मिलल ?''

''गाँव के केतना लोग के बारे में तहरा के बताईं ?'' त्रिलोकी चाचा झरी दूबे के बारे में जे बतवलन ओकरा के सुनके राकेश के माथा घुमे लागल।

झरी दूबे बाहर नोकरी करत रहस आ एगो किराया के मकान लेके रहत रहस। मकान मालिक के एगो बिधवा बेटी रहे। उहे दूबेजी के खिआवे–पिआवे। जानत बाड़ बबुआ, उनका के ऊ का खिअइलस, उनके के खाए लागल। ऊ हर महीने भारी–भारी गहना खरीदावे आ नगदो झपट लेवत रहे। बेतन से ना पूरल त झरी भइया जीपीएफ से रुपया निकाल–निकाल के ओकर फरमाइस पूरा करत रहस। बाकिर ओकर फरमाइस कबहीं खतमे ना होत रहे। दूबेजी

ओकरा पर अइसन लट्टू भइलन कि ऊ जे कहे पूरा हो जाए। अपकारी के नोकरी, दूबेजी एने–ओने हाथ मार के खूब कमात रहस। घरे उनकर दू गो बेटा आ मेहरारू रही। बड़का बेटा बारह बरिस के रहे आ छोटका छव बरिस के। बाकिर घरे गइला उनकरा ढ़ेर दिन भ गइल रहे। छोटका बेटा के ऊ मुँहो ना देखलन। दिन भर ऊ खूब कमास आ रात के पी–पा के ओही बिधवा के गोदी में ढ़ेमला जास। घरे आइल त भुलाइए गइल रहस, ईहाँ पइसो ना भेजत रहस। ओह बिधवा के मोह–माया में पड़ के उनकरा कमाए के अइसन चस्का लागल कि ऊ जायज–नजायज के भेद भुला गइलन। बाकिर ऊ जादे दिन नजायज कमाई ना कर सकलन, नोकरी से सस्पेंड हो गइलन। सस्पेंसन के दंश उनकरा जादे दिन ना झेले के पड़ल, साले भर में उनकरा के नोकरिए से हटा देहल गइल। ऊ कहाँ बाड़न आ बाड़न कि ना – ई बात कोई के पता नइखे। पता करे के कोई कोसिसो ना कइल.स। कोसिस के करो आ काहे करो ?

जब पइसा मिलल बंद हो गइल त झरी दूबे के मेहरारू एकदम अलचार हो गइली। ऊ गाँव में मेहनत–मजूरी क के दूनों बेटवन के पाले लगली। बाकिर उनका खाए–पिए के बहुत दिक्कत होखे लागल। कुछ दिन बाद ऊ बड़का बेटा के मामा किहँवा भेजवा दिहली। लेकिन साल भीतरे पता चलल कि ऊ मामा किहाँ से कहीं चल गइल। कहँवा गइल आज तकले पता ना चल पाइल। बड़का बेटा के कहँई चल गइला से ऊ बड़ा दुखित रहे लगली। पहिलहीं कवनो कम दुख ना रहे। छोटका बेटा के साथे आपन पेट पाले के कष्ट में दूबाइन बेमार हो गइली। उनकरा खाहहूँ पर आफत रहे, भला ऊ दवा–दारू कहँवा से करइती ? बेमारी आ भूख से उनकरा जाल्दिए मुक्ति मिल गइल। ओकरा बाद छोटका अकेले घर में बाँच गइल। ऊ गाँव में जेकरा–तेकरा दुआरी पर जाके बइठल रहत रहे। जेकरा दुआरी पर बइठत रहे ऊ कुछ खाए के दे देवत रहे। एही तरह ओकर जिनिगी के कुछ दिन कटल। एक दिन ऊ गाँव के एगो चाचा के साथ टेसन गइल रहे। ऊँहवा देखलस कि एक आदमी केतली में चाय लेके लोग के पिआ रहल बा। ओकरा बाद इहो चाय बेचे वाला काम शुरू कर देलस। ई काम करत ओकरा जमाना हो गइल। एही बीच ओकर शादियो भ गइल। आपन कमाएला आ दुनो बेकत खाएला।

बातचीत होअते रहे कि झरी दूबे के बेटा चाय के केतली लेले ऊहँवा आ गइल। ऊ तीन–चार बजे रोज त्रिलोकी चाचा के चाय पिआवे आवत रहे। जब उनकर नजर राकेश पर पड़ल त उनकरा आँख में प्रश्न उभर आइल। त्रिलोकी चाचा ओकर जिज्ञासा समझ गइलन। ऊ बोललन, "इनका के तू ना चिन्हब। ई भूषणा के बड़का बाबूजी के बेटा हवन – राकेश।"

"प्रणाम भइया ! ल, चाय पीअ।" ऊ दुनो जना के गरम–गरम चाय देके चल गइल।

❑❑

❍ नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010

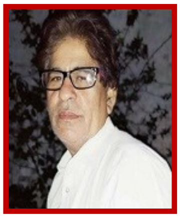

गीत

संगीत सुभाष

मौन गगन धरती चंदा रवि
मौन दिवस आ रात।
हमहीं झूठे करत रहीले
सबसे सबके बात।

नदियन साथे बहल गइल ना
तट से अइनीं खाली।
दीया से ना हिया मिलवनीं,
रहल अन्हार दिवाली।
ना सझुरवनीं सम्बन्धन के,
छुटलें सगरे नात।

ना गइनीं बारी फुलवारी ,
लेबे गंध सुमन के।
बइठल रहनीं बिना काम के
दउरावत बस मन के।
चउकी पीढ़ा खटिया तुरनीं
बइठल पीयत खात।

ना उतजोग तनिक पुरवे के
सोचल कवनो सपना।
साँझि भइल अब सुरुज पहुँचलें,
पच्छिम ठेहा अपना।
राति कहे अबहूँ से ए मन!
सुति जा तू मुसकात।

❑❑

❍ मुसहरी,गोपालगंज,बिहार

डहकत जिनगी

जनकदेव जनक

" बेटी कजरी हो बेटी आंखि के रे पुतरिया, दिनवा हरेलू हो बेटी भुखिया रे पिअसिया....."
ई मंगल गीत गुनगुनात सुनैना अपना पड़ोसी राधा के घर से निकल के अपना घरे जात रही।
उनुकरा 18 बरीस के एगो जवान बेटी कजरी बिया, जवना के शादी तय हो गईल बा. एही सिलसिला में ऊ कुछ जरूरी सामान अपना पड़ोसियन से जोगाड़ करे में लागल रही।
एने घर में अपना माई के ना देखके कजरी चिल्लाइल,
'' माई...,ए माई...,आरे कहवां चल गइलिस रे...!''
कजरी अपना माई के खोजे खातिर घर से बाहर निकल आईल आ मने मन कुछो बुदबुदाए लागल,
" पता ना माई, बिना कुछो बतवले कहवां चल जाले... कबहीं एह घरे तअ कबहूं ओह घरे...ऊ खालिस घर घुमनी हो गईल बिया....."
" आव तानी बेटी...आव तानी... घबरा जन... अरे.. तोरा भाई गंगुआ के ढूंढ़े चल गइल रहीं नूं... आज ओकरा ऑफिस से तनख्वाह मिले वाला बा नूं!... शादी– विआह के मौका बा. डर लागता कि कतहीं पैसा एने ओने खरचा ना कर देव... हमरा सुने में आवत बा कि ओकरा शराब पीए आ जुआ खेले के चस्का लाग गइल बा.... ओकरा के कइसे रोकीं..., कुछो समझ में नइखे आवत..."
" खैर, उ सब छोड़ माई, ई बताव कि तोर वृद्धा पेंशन मिलल कि ना.इहो बताव कि बाबुजी के पीएफ के पैसा के का भइल? " सुनैना कुछो आउरी बोले के चाहत रही, तभीए बीच में बात काटत कजरी टपक पड़ल.
" ना रे बेटी, कुछो पता ना चलल ह. ऑफिस के चक्कर लगावते–लगावते तअ हमरा पांव में फोड़ा पड़ गईल बा.आफिस के बड़ा बाबू बोलत बाड़ें कि छोटका बाबू से मिलअ..., छोटका बाबू कहतारे कि फाइल अभी तकले आईले नईखे. एह दुनूं बाबुअन के बीच में तअ हम आसमान में कटल कवनो तिलंगी नियर डगमगात फिरत बानीं ... दुनूं के मनसा ठीक नइखे बुझात...पइसवा लूटे के फिराक में बाड़ेंसअ... बिना घूस लिहले मनीहनस ना...तोर बाप जीवित रहतें तअ आज ई बुरा दिन ना देखे पड़ित... पता ना बिना पैसा के तोर शादी बिआह कइसे होई...."

अतना बोलत बोलत सुनैना के आंखी भर आईल. ऊ अपना आचरा के कोर से आंखी के लोर पोंछत मुंह झाप के कवनो लइकी निअर सुसुके लगली.
'' आरे माई, तें अतना जल्दी काहे अधीर हो जालिस.आदमी के हर बखत धीरज राखे के चाहीं . धीरज आदमी के सबल बनावेला.हम तोरा के छोड़के ना जाइब, ते हमरा के पराया मत समझ.... "
कजरी अपना माई के अंकवाड़ी में बांध के समुझात कहलस।
बेटी के नेहछोह आ प्यार पाके सुनैना के दिल मारे खुशी के दरियाव हो गईल. उ बेटी के माथा पर आशीष देत बोल पड़ली,
"ए बेटी, तू का जान पइबू कवनो माहतारी के दिल पर पड़े वाला शादी के बोझ के! खैर,चलअ. अब तोहार भाई गंगू आवत होइहें."
'' सोनल पुरवा से अइले सोनरवा भइया, ले अइलें सोनवा बेसाह जी, उ सोनवा पहिरे लें दुलहा राजन दुलहा, पहिरी चलेलें ससुरार जी..... '' तभीए सड़क पर गीत गावत पगला लउकल. ओकरा के देखते कजरी अपना माई से पूछ बइठल,
" माई रे, ई पगला हरमेसा विआह के गीत काहे गावत रहेला ? हम जब सुनेनीं तअ ऊ ' सोनल पुरवा से...' के गीत गावते रहला."
कजरी पगला के मंगल गीत से व्यथित होत ओ. करा गाना के मकसद जाने के कोरसिस अपना माई से कइलस.
" आरे बेटी, पगला राम के दरदिला गीत सुनके पथरो कलेजा एक बार जरूरे कांप जाला. ओकरा जिनगी के कहानी बड़ा दारून आ बाउर बा. पूरा जवार जानत बा कि ई सोझिया राम अपना जव. ान बहिन लाली के मुअला के बादे से पगला गईल. दुनूं भाई बहिन के बीच गजब के स्नेह आ प्रेम रहे.लाली के जरको सा बुखार आ जावे तअ ओकरा के नीमन करें खातिर राम दिन रात एक कर देव. बाकिर लाली के शादी के बाद पता ना कवना के नजर लाग गइल.ससुरार में ओकरा के आउर दहेज लावे खातिर घर में जलाके मार दिहलेंस. जब राम अपना फूल जैसन बहिन के

जरल रूप आ देह देखलस तअ उ अपना के संभार ना पवलस.ओहीजी मुरछा खाके के जमीन पर गिर गईल. जब होश आइल तअ उ जमीन से उठल आ कबहूं हंसे लागे तअ कबहूं रोवे लागे.

ई सब देख के राम के माई बाबू के बरदास ना भइल. उहो लोग बेटी के गम आ बेटा के पगलाइल दशा देखके घबरा गईल। ओझा गुनी से पगला राम के देखावे लोग, बाकिर रोग ठीके होखे के जगे आउर बढ जाव। कुछ लोग राम के पगलखाना में भरती करावे के सलाह दिहलस, बाकिर पइसा के अभाव में राम के इलाज ना भइल।

ओहो लोग कईसहूं आपन डहकत जिनगी काटत रहे। एही बीच अइसन कोरोना बेमारी आइल कि ओहलोग के एक दिन चबा गइल। ओकरा बाद राम अनाथ आ बेसहारा हो गईल।"

'' ओह, राम के ऊपर तअ आफत के पहाड़े टूट गईल। हे काली माई ! दुखिया राम पर दया करीं, दुख सहे के ताकत दिहीं....''

" दहेज लोभियन से खबरदार, बाज, गीध आ पाखंडी राक्षसन से होशियार, ई सोना के चिरई के मांस नोंच लिहनसन, खबरदर भइया..खबरदार.... "

चेतावनी देत पगला सुनैना के पास आके ठहर गईल.कजरी एक टक ओकरा के देर तक देखते रह गईल. उ राम के मुरझाइल चेहरा देखके टो. कलस,

" भइया, पानी पीअब का, अबही लावत बानी ....''

अतना बोलके उ घर के भीतर चल गइल. बाकिर पगला कवनो तरेके जिज्ञासा ना जतवलस.

" आरे राम बेटा, कतहीं तू हमरा गंगू बेटा के देखल ह का ?"

" हअ चाची, ओकरा के देखनीं हअ. शराब के नशा में उ चौराहा के पास खड़ा रहे. ओकरा के समुझावत काहे नइखूं, दिन रात जुआ आ शराब में डूबल रहता.पानी लेखा पैसा बर्बाद करता.ई जुआ शराब दुनूं व्यसन जान लेवा हटे.तू तअ सुनलहीं हो खबू कि जुआ में धर्मराज युधिष्ठीर अपना मेहरारू पंचाली के हार गइल रहलें आ ओकरा बादे पांचों भाई के दुर्दिन शुरू हो गईल रहे... अतने ना चाची, इहे गती राजा नलो के भोगे के पड़ल रहे. जब उ जुआ में आपन समुचा राज पाट हार के बेघर हो गइल रहलें...जंगल में अपना मेहरारू के छोड़ के रात दिन भटकत फिरस। "

''ए राम, तें तअ बड़का ज्ञानी बारीस रे, ई सब बातवा हमरा गंगू के काहे ना समुझावेलिस? जाहिआ ऊ तोर बात समझ जाई, ओह दिन आमदी बन जाई!''

''सांच कहतानी चाची, तू हमरा के पगलेट ना नूं बुझेलूं, जबकि गंगुए ना, पूरा दुनिया हमरा के पागल कहेला. उ हमारे बात के हंसी में उड़ दिहीं तअ कहला से का फायदा?''

एही बीच कजरी पानी लेके आ गइल,

" लअ भइया, पानी पी लअ..." कजरी पगला के हाथ में पानी के गिलास दिहलस. उ एके सांस में पूरा गिलास खाली कर दिहलस. कजरी आउर पानी देवे के बात अबहीं पूछहीं के रहे कि ओकरा पहिले पगला गलास फेंकके गीत गावते उहां से भाग पराइल.

" कावना बने रहे लूं हो कोइलर कावना बने जास...... , देख रे... देख..., हमरा बहिन... के डोली... आ रहल बा ... देखे ...चलस ...रे... चलस.....रे... डोली... आवता.. .''

ओकरा बाद पगला फेरू अपना लय में गीत गावते जाए लागल.

'' सोनल पुरवा से अइले सोनरवा भइया, ले अइलें सोनवा बेसाह जी, उ सोनवा पहिरेंलें दुल्हा राजन दुल्हा, पहिरी चलेंलें ससुराल जी.....''

एकबएक पगला गीत गावल बंद कर दिहलस आ भीड़ के चेतावनी देत आगे बढ़े लागल.....'

होशियार होशियार, समाज के सियारन आ बन के हुरानन से होशियार..., कमाई धोती आला खाई टोपी वाला...होशियार होशियार....'

शहर के चउराहा पर एगो चाह के दोकान रहे. जहवां चाह पीए वालन के बहुते भीड़ लागल रहे . ओह दोकान पर गली मोहल्ला के नवछेरियन के रोजे जमघट लागे.जेमे अक्सर लटकन, तप्पू आ लोरिक लउकस। लोगन के बुरबक बना के ठगसं। आजो तीनों चाह पीए के बहाना से खड़ा रहसं।

तभीए चाह दोकान पर इलाका के बदनाम गुंडा दारा पहुंचल. ओकर नजर वहां खड़ा लटकन आ ओकरा साथियन पर पड़ल.ओकनी से मुखातिब होत उ पूछलस,

'' का तोहनी के एने गंगुआ के देखल ह सअ ? पता ना कहां मर गइल साला..., लउकते नइखे..., ओ. करा के कबे से खोज रहल बानी. मालूम भइल ह कि उ चउराहा के तरफ आइल बाटे."

"हां हां, गंगू के देखनी हअ . थोड़का देर पहिले एहीजी रहलस ह. कहत रहे कि ओकरा बहिन कजरी के शादी होखे वाला बाटे. अब जुआ आ शराब से तौबा कर लेवे के बा.एही से चाह पीए खातिर आइल रहे. बाकिर उ बिना चाह पीएले तुरंते कतहीं चल गइल हा."

लटकन दारा के हाथ में चाह के कुल्हड़ थमावत जबाव दिहलस.
" साला मक्कार , हमरा से बचके जाई कहां. दे खतानी कतहीं शराब खाना में मिल जाव! "
दारा ओकरा हाथ से चाह के कुल्हड़ लेके जल्दी जल्दी फूंकफूंक के सुरूके लागल.चाह पीअला के बाद उ उहां से आगे बढ़ गइल.
ओहीं समय पर लोक धुन में एगो गीत गावत पगला चउराहा से गुजरल.
'' कइसे में बसु सासू आज के रतिया हो, अम्मा जोहत होइहें बाट हो जी, छतिया फाटत होई, नयना से ढरकत होई लोर हो......सोनलअ पुरवा से आईलें सोनरवा भैया.... ''
पगला के गीत में अतना पीड़ा, करूणा, संवेदना आ व्यथा भरल रहे कि चाह पीअत लोग ओने ताके लागल. साथ ही ओकरा बारे में तरह तरह के बात करे लागल.
केहू के जवना चीज के लत लाग जाला, ओकरा से छुटकारा पावल बहुते कठिन होला.उ आमदी अपना इच्छा के दबा ना पावे.अइसनके हाल गंगू के रहे. उ चाह ना पीके चाउर के माड़ी पिअलस.ओहू से नाशा ना भइल तअ महुआ के शराब नरेटी तक ले चढ़ा लेहलस.
गंगू जब शराब खाना से निकल के सड़क पर आईल तअ उ नशा में चूर रहे.ओकर गोड़ डगमगात रहे. ओकरा महुआ के ठर्रा कुछ जादही चढ़ गइल रहे. ओकर पांव जमीन पर सीधे ना पड़त रहे. उबर खाभर राहता पर हिचकोला खात जाए लागल।एही बीच उ बुदबुदातो रहे,
" पगला...ठीक ...ठीक ...ठीके ...कहेला...(हींच की आवाज के साथे ओकरा हींचकी आवे लागल.)." ताड़ी ह ...जग... तारनी...जस ...गंगा सामान.."(हाथ जोड़ के गंगा माई के प्रणाम कइलस .) .हां...हां ...पगला ठीके . ..कहेला ...." ताड़ी ह ...जग... तारनी...जस ...गंगा सामान... बैंकुंठ...जाए के३.होखे तअ..... पीअस....गिलास पर गिलास,....बोलअ, ३.बोलअ..
सिया पति सिरी रामचंदर जी के जय...हां...हां....हां...(गंगू पगला जैसन हंसे लागल).
गंगू जब कोलियरी के नुक्कड़ पर पहुंचल तअ उहां पुटुस के झाड़ियन के आड़ में तप्पू, तपन, लोरिक संगे लटकन आ दुसर लोग जुआ खेलत रहे. ओह लोग के देख के उ बोलल, " तु लोग... हमरा के... बुलइह मत. .., आजु... जुआ... नइखे... खेले के... हमरा... घरे.... गइल बहुते... जरूरी...बा...भाई लोग... बहुते जरूरी...बा.. . घरे गईल..."
तबहीं लटकन ओकरा पास गइल आ गंगू के घेट में बांह डालके नीचे बइठा दिहलस. साथे ओकरा से पूछलस,
" आरे गंगू भाई, आज तू फेरू शराब पी लिहलअ. आज सुबेरहीं तू कहले रहअ कि अब शराब के हाथो ना लागाइब...फेरू ई....,"
"झूठ कहले रहीं..., एगो बेचारी कजरीए तअ बिया.. . कि ओकरा नाम पर.... उधार मिल जाला... दारा ओकरा से... रोजे मिले खातिर आवेला....सेठ राशन दे देला...,सूदखोर बिना सूद लिहले कारजा दे देला...जब... हमरा... तन्ख्वाह... मिलेला तअ...सभकर पैसा... लवटा... देनीं....अब जाए दे लटकन भाई...द ारे जाए दे...ढेरे देर... हो गईल बा...माई आ कजरी. .. हमार राहता...ताकत होई लोग...अब हमरा के... मत रोक भाई..."
गंगू अपना जगे से उठल आ जाए खातिर डेग बढ़वलस. तबे बगल में बइठल लटकन फेरू ओ. करा के बइठा देलस आ बोलल,
" बइठ बइठ, एक बार तन्ख्वाह के सब पइसा दावं पर लगा दे गंगू, जीत गइलिस तअ सब माल तोर.कजरी के बिआहो धूमधाम से हो जाई. "
लटकन अपना झांसा में ओकरा के फांस लिहलस.
"जुआ ना खेलब... ना खेलब... तु लोग... हमरा... माई... से... बोल देब लोग... कि.... गंगुआ... जुआ .. ."
" तोरा माई से केहू ना कही, जल्दी पइसा निकाल के दांव पर रख गंगू." एकबएक लटकन ओकरा के जोर से डांट के ओहींजी बइठा दिहलस.
" तअ ...ठीक बा...आपन पर्स दांव पर लगावत बानी."
गंगू आपन पर्स सामने दावं पर रख दिहलस आ ताश के गड्डी हाथ में लेके खुदे फेटे लागल...आ मने मन बुदबुदाए लागल,
" जय माई कोलकाता आली... तोहार बचन जाए ना खाली..., बोल, का मांगअ तारे ?'' गंगू अइसन कहलस जइसे उ बड़का जुआरी होखो।
" कजो रानी के कसम, हमरा तअ बीवी चाहीं..."
तप्पू गंगूआ से बीवी कार्ड मंगलस. जइस ही गंगू ताश के गड्डी फेट के एगो कार्ड सामने फेंकलस.
'' मर गइनी..." ओकरा मुंह से निकलल.
गंगू जवन कार्ड फेंकलस, ऊ कार्ड बीवीए रहे. ठीक ओही टाइम उहां दारा पहुंच गइल.
दारा से गंगू के माई बीस हजार रूपिआ कारजा लिहले रहे, जवना के गंगू तन्खाह मिलला पर लउटा देवे के वादा कइले रहे।बाकिर जुआ में हारला के बाद तन्खाह के रूपिआ छीना जाए के

भय से उ भागे लागल। गंगूआ के भागते उहां अफरा तफरी मच गईल।
आगे आगे गंगुआ, पाछे से तप्पू, ओकरा पाछे लोरिक, लटकन आ दारा दउड़े लगलेस।
भागते में दारा तप्पू के पकड़ के ओकर पिटाई करे लागल ई कहते कि कजरी को काजो रानी काहे बोललस ह। दारा पिटाई करत बोलल,
'' हरामजादा,तें ढेर सियाना बनत बाड़े, तोर चाम छिल के भूसा भर देब। ''
ओने लोरिक रामपुरिया चाकू निकाल के गंगू के ललकरलस,
'' जीत के माल लेके भाग मत..., ना तअ चाकू मार देब... गंगू, पइसा हमरा के दे दे... ना तअ जान से हाथ धो देबे... नाहक तोर जान चल जाई...''
एकरा बाद दउर के लोरिक आ लटकन गंगुआ के पकड़ लेनलसं आ ओकर पर्स छीने लगलें. स। बाकिर गंगुआ अपना पर्स के मजबूती से पकड़ले रहे। एही बीच अब दारा तप्पू के छोड के लोरिक के पाछा भागल आ चिल्ला के कहलस,
" लोरिक, गंगुआ के छोड़ दे, ना तअ हमरा से बुरा केहूं ना होई. तोहनी तीनों के जीना हराम कर देम ...."
बाकिर दारा के बात अनसुना करके लोरिक गंगुआ के पेट में चाकू मार दिहलस। चाकू लगते गंगुआ जमीन पर गिरल तले लोरिक ओकरा हाथ से पर्स छीन के भागे लागल।
अब दारा पर्स छीने खातिर लोरिक के पाछा करे लागल। एही बीच लोरिक कतहीं पुटुस आ बेहाया के झाड़ियन के ओट में लुका गईल।
गंगुआ के पेट से खून बहे लागल। उ अपने हाथ से पेट दाब के खून रोके के चहलस, बाकिर नाकाम रहल। खून बहला से उहां के जमीन लाल हो गईल। उ खून देख के मारे डर आ भय से हताश हो गईल आ मुरछा के जमीन पर गिर गईल।
तभीए गीत गावत पगला के नजर सड़क पर गिरल गंगुआ पर पड़ल। उ उहां ठमक गइल आ ओकरा के निहारत पूछलस,
''आरे गंगुआ,... ईहां तें शराब पीके गिरल बाड़िस ...आ ... ओने तोर माई आ बहिन... राह ताकत बाड़ीसन... का... जमाना आ गइल बा। आरे गंगू भाई, उठ उठ...चल घरे चल... काहे गिरल... बाड़िस?''
अतना बोलत–बोलत पगला निहुर के अपना हाथ से ओ. करा के हिलाए–डुलाए लागल तअ गंगुआ के होश आ गइल। उ अपने सोझा पगला के देख के बेआकुल हो उठल, आ ओकरा से रोअते कहे लागल.
" पगला भाई..., हमरा... चाकू... लागल... बा, बचे के ... उमिद... नइखे... हमरा... माई आ... कजरी... बहिन के... ि खयाल रखीहअ...गलत सोहबत में हमार तन्खाह लूट गईल... भाई, हमरा बुरा काम के सजा मिल गइल...''
" ना ना... गंगू भाई ना..., तोरा कुछ ना होई...हम आ गईल बानी नूं.... अबहीं अस्पताल में भरती करायब तोरा के ... "
ढांढस बंधावत पगला कहलस आ अपना सिर में बांधल गमछा खोल के गंगुआ के पेट पर बांध दिहलस।जेकरा से खून के बहाव कम हो गईल। फेनूं अपना पीठ पर खून से लथपथ गंगुआ के लादके सड़क तक ले गईल। पगला उहां एगो ठेला रोक के ओहपर गंगुआ के रख दिहलस आ एंबुलेंस बुलावे खातिर सय नंबर पर फोन करे खातिर ठेला आला से निहोरा कइलस। ठेला आला अपना मोबाइल से रिंग कइलहस।ओने से जबाब आइल कि इंतेजार कर, कुछ पल में एंबुलेंस पहुंच जाई।न ठीके थोड़का देर में एगो एंबुलेंस आ गइल।
ठेला आला के मदद से पगला गंगुआ के अस्पताल में भर्ती करवा देलस आ गंगुआ के माई के घटना के जानकारी दे देलस।
गंगू के देह से ढेरे खून बह गईल रहे, जेसे ओ. करा देह में खून के कमी हो गईल रहे।जान बचाए खातिर अस्पताल के डाक्टर तीन यूनियन ओ पोजेटिब खून ले आवे के कहलस। अतना सुनते पगला दउर के अस्पताल के ब्लड बैंक में गईल आ जाके पूछलस,
''हमरा मरीज गंगुआ के 'ओ' पोजेटिब खून चाहीं।
'' एह बैंक में नहीं है, बाहर से मंगना होगा, पैसा जमा कीजिए खून मंगा देंगे।'' ब्लड बैंक कहलस।
''भईया, पैसा तअ नइखें। ''
'' मरीज के गार्जियन को बुलाओ।''
''खबर भेजवा देले बानी। अब आवते होई लोग। तले हमरा खून के जांच कर लिहीं ना।''
'' वाह, अकल की बात की है। वहां बेड पर लेट जाओ।''
खून जांच कइला पर पगला के 'बी' पोजेटिभ गुरुप निकलल। ओकरा से ब्लड बैंक कहलस,
''क्या नाम है तुम्हारा। मरीज से तुम्हारा क्या संबंध है?''
''जी, हमार नाम राम हटे, बाकिर लोग पगला कहेला। मरीज गंगू हमरा जान पहिचान के संघतिया हटे। केहूं तेरे एकर जान बचाई भैया।'' पगला गिड़गिड़ाइल।
''अगर तुम चाहो तो अपना खून देकर मरीज खातिर खून मंगवा सकते हो!''
''जी भैया,हमार खून ले लिहीं।''
पगला एगो बेड पर लेट गईल। अस्पताल के डाक्टर

ओकरा बांया हाथ में सूई घुसा के खून निकाल लिहलें।

'' भईया, हमार देह के समुचा खून लेके बाहर से गंगुआ खातिर खून मंगवा दिहीं, बाकिर कइसहूं ओकर परान बचाईं। अब हम जी के का करब, जब सुनैना चाची के कामे ना आइब। एगो उहे तअ बाड़ी कि उनुका दुआरी सानी पानी भेंटा जाला। बाकिर एह मतलबी दुनिया में के केकरा के पूछता भैया...''

''आरे राम, ते खून काहे देले ह? हमनी माई बेटी का मर गइल रहींस? लागता कि हमरा गंगुओ के पागल बनाके छोड़ी।''

अतना बोलते सुनैना पगला के बेड पर चहुंपली आ खिसियाईल बोल दिहली। काहे कि उनुका डर लागत रहे कि पगला के खून देला से कतहीं उनुकरो बेटा पगला मत जाय।

पगला कुछो जबाब दिहित ओकरा पहिले अस्पताल के डाक्टर साहब कहलें,

'' खून देने में अगर पांच मिनट भी देर हो जाती तो मरीज का राम नाम सत्य हो जाता। राम के पास रुपए पैसे तो नहीं थे, लेकिन एक बड़ा कलेजा जरूर था। उसने ब्लड बैंक को अपना खून दिया। बदले में अपके पुत्र के लिए खून लिया।इस उपकार के बदले आप उसे दुत्कार रहीं हैं? लानत है आप जैसी खुदगर्ज महिला पर!''

'' माफ करीं डाक्टर साहब...माफ करी... घबराहट में मुंह से निकल गईल ह... पता ना... का–का बोल दिहनीं हा।''

सुनैना अपना गलती के मान लिहली। अपमान महसूस करत उ डाक्टर से फेरू कहली,

''माफ करने वाला मैं कौन होता हूं।'' नाराजगी जताते हुए डाक्टर ने कहा, ''आज कल दूसरो की भलाई करने वाले मिलते कहां हैं! इस जहां में ईर्ष्या, डाह और नफरत की दुकानदारी चलाने वालों की भरमार है। बावजूद राम जैसे जांबाज और दयावान लोग भी हैं,जो अपनी परवाह न करते हुए दूसरों पर जान छिड़कते हैं। आपके पुत्र के लिए जो राम ने किया, उसके नेकी का कर्ज। आप चाह कर भी उतार नहीं सकती। इंसानियत के नाते उसने जो कुछ भी किया, काबिले तारीफ है... मैं राम के दिमाग का इलाज करवाऊंगा, ताकि वह और लोगों की भलाई कर सके।''

डाक्टर के मुंह से पगला के बड़ाई सुनके सुनैना के आंखी भर आईल।उ अपना संकुचित बिचार पर हतप्रभ रहली कि राम के बारे में अतना ओछ बिचार कईसे आ गईल।

सुनैना के आकुल बेआकुल दशा देखके पगला अपना जगे से उठल आ उनुका सोझा जाके खड़ा हो गईल। ओकरो आंखी से झर झर लोर चुए लागल। तले भाव विभोर सुनैना ओकरा के अपना अंकवारी में भर लिहली आ कहली,

'' डाक्टर साहब, आज से हमार दुगो बेटा, एगो राम तअ दुसरका गंगू। जीअ बेटा राम...जुग जुग जीअ...

'' चाची, हमार चाची! तोहरा के छोड़ के कतहीं ना जाइब।''

उ सुनैना के लोर पोंछत रामो रोवे लागल।

❑❑

❍ लिलोरीपथरा सब्जी बगान,
झरिया–828111- धनबाद (झारखंड)
मो–9431730244-

गजल

कौशल मुहब्बतपुरी 'कौशल'

दरिया में बाढ़ आ गइल, केकरा से पूछ के ।
दुनिया हमर दहा गइल,केकरा से पूछ के।।

लूटल केहू मँझधार में, केहुओ कछार पर।
सब के अहं आ खा गइल,केकरा से पूछ के।।

केकरा कहीं पराया हम,आपन के के कहीं।
जे मीठ माहुर खिआ गइल,केकरा से पूछ के।।

लंगोटी ले हमर खींच के,लंगटे कइल जे लोग।
मरते कफन परिहा गइल, केकरा से पूछ के।।

'कौशल' बनल नादान बा,जिनगी के मोड़ पर।
लोगवा सभे समझा गइल,केकरा से पूछ के।।

❑❑

❍ मुहब्बतपुर, मुजफ्फरपुर
बिहार–843120

करार

जितेन्द्र कुमार 'नूर'

आज अठारह साल बाद जब सुजीत सुषमा के देखलन त मन में पुरान याद फिर से ताजा हो गइल। सब कुछ भुलायल जा सकत ह लेकिन प्रेम ना। जवन याद हिरदय के पता ना कवने तह में समा गइल रहल ऊ एक–एक लकीर के सहारे फिर से तस्वीर बने लगल। नजर के सोझा कवनो फिलिम खानी कुल्हि दृस्य उभरे लागल।

सन् 2006 में सुजीत क बी० ए० के परीच्छा क सेंटर आजमगढ़ शहर के डी० ए० वी० कॉलेज में परल रहे। घर से कालेज क दूरी लगभग 35 किलोमीटर रहल आ परीक्षा सबेरे साढ़े सात बजे से। घरे से आवे में पता ना सवारी समय से मिली कि ना मिली एकर डर रहे। साइकिल से जइले में ई दिक्कत रहे कि एक त थकान हो जाई दूसरे अगर कहीं पंचर–वंचर हो गइल त परीच्छवे छूटि जाई। परीच्छा के समय चिंता कुछ जादे बढ़ जाले। ए लिए भइया कहलन कि फुआ के घरे रहि के परीच्छा दे लऽ। फुआ के घर से कालेज क दूरी पाँचे–छ किलोमीटर रहल। इहाँ से साइकिल से असानी से जायल जा सकत रहल। भइया परीच्छा के एक दिन पहिले सुजीत के ले जा के फुआ के घरे छोड़ि अइलन।

सुषमा फुआ के गाँव क रहलीं। सुषमा क रंग त पक्के पानी क रहे बकिन गढ़न एतना सुग्घर रहे जइसे दुर्गा माई क मुर्ती वाले साँचा में ढालल होखे। जे देखऽ ते देखतऽ रहि जा। रंग तऽ सुजीतो क सँवर रहे बकी भरल–पुरल चेहरा प अजय देवगन कट जुल्फी बहुत जँचत रहे। केतनी लइकी त उनकर बरवऽ निहारें। एह उमर के लइकन में बार क सउख कुछ बेसियऽ होले। ओह समय वीसीआर–सिनेमा के परभाव से लइकन में की डिजाइन क बार बड़ा चलन में रहे, जइसे कि तेरे नाम, संजय दत्त कट वगैरह–वगैरह । सुजीत के अजय देवगन कट जादा पसन्न रहे। पहिली नजर के प्यार क अधार रूप अउर सुन्दरता होला। फुआ के घर क रस्ता सुषमा के घर से हो के गुजरत रहे। सुषमा के घर से पहिले कोली रहे जहाँ से पैदल अउर साइकिल से आवल–जायल जा सकत रहे। पहिला पेपर देके सुजीत जब वापस आवत रहलें त ओही कोली में सुषमा भेंटा गइलीं। आँख मिलते सुजीत मोहा गइलें। पहिलिये नजर में सुषमा सुजीत के दिल में अइसन बइठलीं कि सुजीत क होस–हवास गायब। सुषमा उनके देखलीं त नजर झुका के मुस्किया के चलि गइलीं। सुजीत सुषमा के भा गइलें। सुषमा सुजीत के मन में अइसन समइलीं कि पढ़ाई से मन उचटि गयल। आठों पहर दिमागे में उनहीं क सूरति नाचऽ। किताब खोलें त नजर पन्ना प आ मन कहीं अउर। सुषमा बेर–बेर फुआ के घर क फेरा लगावे लगलीं। सुजीतो सुषमा क राहि अगोरे लगलें। सुजीत जब सुषमा के घर के सामने से गुजरें त सुषमा डेग प तेज आवाज में 'मेरे जीवन साथी' फिलिम क गाना चला दें– 'इस कदर प्यार तुमसे करते हैं, तुमको दुल्हा बनाएँगे हम।' कबो–कबो त खुद गावे लगें। सुजीत भी सुषमा के मन क बात बुझे लगलें। लेकिन एक त परीच्छा क समय दुसरे हितई क बात। मन भटकउला पर पेपर बिगर सकत ह। बकिन मन त पढ़इयो प ना ठहरत ह। हितई में प्रेम–प्रसंग बढ़उला प कहीं बात फूटि गइल त बड़ी बदनामी होई। फुआ का कहिहें? बाबूजी सुनिहें त कहिहें कि ए के हम परीच्छा देवे खातिर भेजले रहलीं ह, ई दुसरऽ परीच्छा देत ह। लेकिन मन ह कि बेर–बेर सुषमा के चेहरा प जा के अटकि जात ह। सुजीत किताबी प धियान लगउले क कोसिस करे लगलें। मन में जब प्रेम समा जाला कुच्छू नीक ना लगत। सुजीत मन के हाथे हारत जात रहें। मगर दिमाग कदम रोकि दे।

सुषमा जब फुआ के घरे आवें त सुजीत अक्सर किताब लेके बइठल मिलें। खिझ के सुषमा किताब छोरि लें,'का दिन भर पढ़त रहेल?'

सुजीत कहें,'का करीं, परीच्छा ह न।'

'साल भर त पढ़बे कइलऽ ह।'

'दोहरावलो त जरूरी ह।'

'अच्छा ठीक ह पढ़ऽ, आउर कवनो चीज से मतलब त बा ना।'

सुषमा खिसिया के चल जाँ।

तीन पेपर भइले के बाद चार दिन क छुट्टी पर गइल। सुजीत अपने घरे चलि अइलें।

छुट्टी के बाद वापस गइलें। सुजीत सबेरे–सबेरे दतुअन क के मुँह धोवत रहलें। ओही घरी सुषमा क सहेली गीता चापाकल प पानी भरे के बहाने अइलीं। सुजीत से कहलीं, 'भइया, तूँ घरे चलि गयल रहलऽ ह त सुषमवा कहति रहलि ह कि पता ना कतके चलि जालें अच्छा ना लगेला।'

सुजीत कहलें,'अच्छा त हमहूँ के ना लगेला लेकिन का करीं? आपन घर ह जाये के त परबे करी।'

गाँव में सब एक–दूसरे क काम आपस में मिलजुल के करा ले ला। पहिले गाँव में एगो–दुगो थ्रेसर रहें जवन खाली दिन चाहे रात में पारी के हिसाब से छ घंटा आवे वाली बिजली से चलें। सब आपन डाँठ ढोके ओहीं कहीं गाँजि दे। फुआ क गेहूँ कटल त सुजीत घरे गयल रहें। दँवरी क नंबर लगे वाला रहल लेकिन गेहूँ क बोझा ढोवायल ना रहे। साँझ के बेरा घरो भर डाँठ ढोवे खेते गयल रहे। सवेरे सुजीत क पेपर होखे वाला रहे एह लिए ऊ पढ़त रहलें। ओही समय गीता आके कहलीं,'भइया, बोझा ढोवावे ना गइलऽ ह? सुषमवा गइलि ह तोहँके बोलवलऽ ह।' सुजीत किताब रखि के भागल गइलें। जेके से प्रेम रहेला ओकरे साथे काम कयल भी बहुत नीक लगेला। प्रेम कवनो बहाने समीपता खोजेला। खेते तक पहुँचत–पहुँचत आखिरी बोझा उठि गयल रहल। सब घरे आवत रहल। सुजीत मनेमन पछताये लगलें, 'तनीसा पहिले आ गयल रहतीं उनके संघे बोझा ढोवले क मोका मिलल होत। एही बहाने कुछ देर त उनके साथे रहतीं। कुछ बातचीत त भइल होत। एतना बढ़िया मोका हाथ से निकल गयल।'

जब प्रेम क बिरवा मन में फूटे लगेला त आन्ही–बावख ओके उजारे खातिर जरूर आवेला। एही बीचे सुषमा क सादी तय हो गइल। जवने दिने सुषमा क अँचरभराई रहे ओ दिने सुजीत क छुट्टी रहे। पूरा दिन काम करत बीतल। कहीं कवनो नात–रिस्तेदार आवत हवें त बजारे से जाके साइकिल से लिया आवेके ह। कहीं पत्तल–गिलास घटि गयल त सुजीत से मँगावल जात ह। रिस्तेदारन के पानी पियावे के ह। केहू एहर से बोलावत ह केहू एहर से बोलावत ह। सुजीत उदास मन में अपने बर्बादी में दउर–धूप के सहयोग कइलें। ओ दिन सुषमा से बतियावे भर के समय ना मिलल। दिन भर त काम में बीतल। बाकी रात में जब सुजीत बिछउना प चहुँपलें थकला के बादो आँखी में नींद ना रहे। दिन भर क बटुरल दुख राती में हावी हो गयल। मन बेकल हो गयल,'अब त लगत ह कि साथ छुटि जाई। काहे सुषमा बियाह करे खातिर तइयार हो गइलीं। काहे न अपने घर वालन के मना क दिहलीं। बाकी कुछ दोस त हमरो बा। हमहूँ त उनसे कब्बों ना कहलीं कि उनके प्रेम करीला। लेकिन इहो कवनो कहे वाली बाति ह? उनके समझ जाये के चाही। बाकी बिना कहलहू त कवनो बात ना बनत। कहलो जरूरी ह। त का अब से कहि देईं? लेकिन उनकर बियाह तय हो गयल। अब ऊ का क पइहें?' जब मनई के कवनो उपाय ना सूझेला कुल भगवान प थोप देला चाहे तकदीर क दोस मान के पटा जाला। सुजीत के लगे लगल कि कुल दोस तकदीर क ह। नाहीं त एतना बियाह कइसे तय हो जात? आँख से झर–झर आँस झरे लागल। रोवत–रोवत कब आँखि लग गइल कुछ पता ना चलल।

परीच्छा बीते वाली रहे। आखिरी पेपर बाकी रहे। अन्हमुन्हारे क बेरा रहे, चइत क टहटह उज्जर अंजोरिया फरकल रहे। सुजीत कहीं से आवत रहलें। सुषमा अपने दुआरे प बइठल रहलीं। देख के खड़ी हो गइलीं। सुजीतो रुक गइलें। पुछलीं,'चउदह अपरैल के अइबऽ न?'

'सादी त अट्ठारह अपरैल के ह, चउदह अपरैल के का करब आके?'

'अपने सादी में हमके कहाँ फुरसत रही। चउदह अपरैल के साथे–साथे अम्बेडकर जयन्ती मनावल जाई। अइबऽ न?

'देखल जाई।' कहि के सुजीत जाये लगलें।

'अइहऽ जरूर।'

'समय मिली त आइब।' कहि के सुजीत चलि गइलें।

परीच्छा खतम हो गइल। सुजीत घरे जाये क तइयारी क लिहलें। सुषमा सुजीत के सबकर गोड़ धरत देखलीं त कोली में जाके खड़ी हो गइलीं। सुजीत जब साइकिल प बइठि के कोली में चहुँपलें त सुषमा साइकिल क हंडिल पकड़ि लिहलीं,'चउदह अपरैल के अइबऽ न?'

'देखल जाई।'

'हम अगोरब।'

तबले केहू आवत लउकल। सुषमा हंडिल छोड़ दिहलीं,'करार करऽ अइबऽ जरूर।'

'कोसिस करब' सुजीत अपने आँखी क पानी चोरावत, आ सुषमा के आँखी में पानी देके मुँह फेरि के चलि त गइलें बाकी मन में रहे कि कुच्छू हो जा आइब जरूर। का पता उहे आखिरी भेंट होखऽ।

विधाता क खेल निराला ह। चउदह अपरैल के सुजीत के घरे दँवरी लग गइल। बिजली से होखे वाली दँवरी बहुत समय ले ले। सन् 2000 में बिजली आ मौसम अइसन खेला कइलें कि कुल डाँठ खेते में सरि गयल रहे। बिजली आवऽ ना आउर बरखा जा ना। कई–कई बेर डाँठ झुरवावल गयल। जइसही झुरवा के बोझा बन्हा फिर बरखा हो जा। कुल गेहूँ भीजि के जामि गयल आ जामि के सरि गयल। एक्को छटाँक अन्न हाथे ना लगल। एहू साल मौसम गोंज–गाँज भयल रहे। सुजीत बाबूजी से कहलें,'आज फुआ किहन जाये के रहल ह। आज रहेदा, बिहने से दँवाई।'

'जइले बिना कवन अकाज ह? मौसम डाँवाडोल भयल ह। डँठवा सरि जाई त साल भर का खायल जाई?'

प्यार में सगरो दुनिया दुस्मन नजर आवेले। आज सुजीत के आपन बाबूजी सबसे बड़ा दुस्मन लगत रहें। 'एक दिन अउर गेहूँ ना दँवाई त का हो जाई?' उनसे बेसी गुस्सा भगवान प बरत रहे। का भगवान आजऽ तुहूँ के आवे के रहल ह? कइसो लइनियऽ भागि जाति छुट्टी मिलत।' लेकिन बिलारी के मनउले सिकहर ना टूटत। मन मारे के परि गयल। बेर–बेर काने में एक्क अवाज गूँजऽ, 'चउदह अपरैल के अइबा न?'

एहर दँवरी खतम भइल ओहर सुषमा बियहि के अपने ससुरे गइलीं। सुजीत क मन ना मानल अगिले दिन फुआ के घरे गइलें। गीता भेंटइलीं, 'अब अइला ह, बेचारी रोवत–रोवत चलि गइल।'

'हम आई के का करतीं? रोक त ना पउतीं न?'

'कम–से–कम देख त लिहले होति।'

सुजीत आँख क आँसू लिहले चलि गइलें। मन में सुषमा क कहल बात कचोटे लागल– 'चउदह अपरैल के अइबऽ न? करार करऽ ....'

❑❑

❍ डी० ए० वी० पी० जी० कॉलेज

जरावऽ दियना

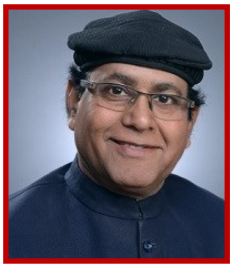

डॉ कमलेश राय

होई सगरो अंजोर हंसी घरे– घरे भोर
कि जरावऽ दियना, भारत माता के मंदिरवा
जरावऽ दियना ।

एगो दिया धर ऽअंगना में एगो दिया दलानी
एक दिया घर के पिछवारे भुइंया परल पलानी
नाहीं गोसयां गोहार ,नाहीं सूझे उजियार
कि जरावऽ दियना, जहां जिनगी अन्हरवां
जरावऽ दियना ।

एगो दीया गंग– जमुन के जेकर निर्मल पानी
भरल परल जेकरा अंचरा में अनगिन अमर कहानी
लेके असरा उजास पोंछे सब कर पियास
की जरावऽ दियना, चलऽ ओही जलधरवा
जरावऽ दियना ।

एक दिया ओ महतारी के जे शहीद जन्मावे
बलिवेदी पर हिय क अपना बिहंसत फूल चढ़ावे
खोके सोना नियर लाल जेकर अंचरा निहाल
की जरावऽ दियना , ओही माई के ओसरवां
जरावऽ देना ।

एक दिया ओकरे खातिर जे सूतल सपन जगावे
सबद सबद ,आखर आखर में मन कऽ आस जोगावे
लेके हिया जग पीर जइसे तुलसी कबीर
कि जरावऽ दियना , ओही जोगिया दुअरवा
जरावऽ दियना ।

भारत माता के मंदिर में देव लाख चौरासी
केहू विराजे कनक भवन में केहू भूंइ के वासी
नाहीं परदा ओहार जहां देवता उघार
कि जरावऽ दियना , चलऽ ओही देवघरवा
जरावऽ दियना ।

❑❑

❍ मऊ, उ0 प्र0

आकृति विज्ञा 'अर्पण'

पढ़ ललमुनिया

पढ़ ललमुनिया तोरे पढ़ले
घोर अन्हारे दीप जरी ।
बढ़ ललमुनिया तोरे बढ़ले
एक दुनिया के डेग बढ़ी ।

ऊ दुनिया जेकर बोली
दबा गईल कहले से पहिले
ऊ जीवन जेकर तरुणाई
बुढ़ा गईल बढ़ले से पहिले

आपन सपना खुदे भुलवलस
ओकरे आँखिन जोत जरी ।
एक दुनिया के डेग बढ़ी ....।
घोर अन्हारे दीप जरी।

सजिहे सुंदर खोता चिरई
ताना बाना नेह डोर के
शाख से अपना छूटे ना ऊ
कसि के बनिहे शीर्ष छोर के ।

जेकर सोरि धरा धारेले
ओकरे नवकी सोर धरी
एक दुनिया के डेग बढ़ी....।
घोर अन्हारे दीप जरी।

ते नदिया जेकर धारा
:प धरेले अनघ अनघ
सब सभ्यता तोरे से ही
ऊपराईल बा पनग पनग ।

हँस ललमुनिया तोरे हँसले
तिमिर कलश में भोर भरी ।
घोर अन्हारे दीप जरी....।
एक दुनिया के डेग बढ़ी ।

❑❑

दुनिया देखी हिम्मत खांटी

माथ लगा के चन्नन अइसे
ए बबुआ ई सोना माटी
बीज लक्ष्य के जम के साधे
दुनिया देखी हिम्मत खांटी ।

कदम बढ़ाव धीर धरे तू
धीरे धीरे सब हो जाई
तोहरे साथे बरम बाबा
तोहरे साथे काली माई

खटिया जस जो होई दुनिया
याद रखे कि तूंही पाटी
दुनिया देखी हिम्मत खांटी.......

मेहनत रथवा कबो न रोकिहे
इनके उनके जिन तू तकिहे
साध साध के शब्द खरचीहे
आला बाला मत तू बकिहे

याद रखे कि करम के खेती
जे जो बोई ऊहे काटी
दुनिया देखी हिम्मत खांटी....

तू ओह धरती से बाड़े कि
जेह पर गोरख गाथा गइलें
वीर कुंवर के चौड़ा सीना
जियक् कबीरा अलख जगइलें

जेकरे टिकुली में हो लासा
ऊहे त माथे पर साटी
दुनिया देखी हिम्मत खांटी।

❑❑

❍ गोरखपुर,उ0 प्र0

अन्हरिआ में दउरत आदमी

कृष्ण कुमार

हाईटेक के घनाघोर बदरी छावला के बादो शक्ति के भक्ति तनिको कम नईखे भइल।आज के दउरत– भागत जिनिगी में केहु लगे केहु के बतकहि सुने के बेंवत नइखे।केहु आपन वाजिब स्थिति कबूल करे के तइयार नइखे।बाकिर तबो ईश्वरीय शक्ति के करीब–करीब सभे मानता।भगवान, जेकर स्थान सभका से ऊपर बा, उनका दरबार में लोग माथा पटक के अपना गलती के माफी मांगता। जिनिगी में कुछ बढ़िया पावे के लालच उनका के खींच–खांच के भगवान के दरबार में पहुंचा देला।चाहे ऊ भिखारी होखे चाहे अरबपति।सभकर मुखिया उहे बाड़न।उनका सोझा मोंछ अईंठें के हियाव केहु के नइखे परल।उनका ले अईंठल त गइल,एकरा के सभे मानेला।धरम जिनिगी के सभ किरिया–करम में समाइल बा।चाहे केहु कतनो अधिका एडभांस हो जाओ बाकिर ईश्वर आ धरम के लाग–लपेट से अपना के नइखे छिनगा सकत।एह झमेला से अपना के बिरले लोग ही छिनगवले बाड़ें।सउंसे सृष्टि के कमान भगवाने के हाथ में बा।बिना उनका कृपा के एगो पतई ना डोले।सभकर निमन आ बाउर कामन के ऊ देखत रहेलें।एह बतकहि के सभे पतिआला।

जन्म के साथे आदमी के धार्मिक संस्कार शुरू हो जाला,चाहे ऊ कवनो धरम से जुड़ल होखे। ओकर पालन – पोषण भी धारमिक संस्कारन के ही बीचे होला।पूजा– पाट आ धरम के प्रभाव जीवन के हरेक पहलू पऽ परेला।धन खातिर लक्ष्मी के,शक्ति खातिर दुर्गा के आ ज्ञान खातिर लोग माई शारदा के पूजा करेला।मुक्ति के इच्छा के चलते लोग मुए खातिर मोक्ष के नगरी काशी के 'मुक्ति लाभ भवन' में पहुँच जाला।ओकरा एह बात के सोरहो आना विश्वास बा,'काश्याम् मरणान् मुक्तिः ।काशी में मुए से जीवन –मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाईं।

कर्म–प्रधान संसार में पूजा –पाट आ धरम के महत्व तनिको कम नइखे भइल।आपन लोक परलोक सुधारे खातिर लोग का–का नइखे करत।एह में पूजा–पाट से लेले अनेक तरीका के कर्मकांड शामिल बा।थाइलैंड के प्रोम्मानी बौद्ध मंदिर में कोना–कोना से पढुआ, धनी–गरीब सभे पुनरजन्म खातिर पहुंच रहल बाड़ें।ई एगो अचरज के बात बा कि जिअते–जी पुनरजन्म कइसे होखे लागल।पुनरजन्म करावे वाला भिक्षु लोग के कहनाम बा, ''एह से आदमी के पुरान दुख–दलिदर भाग जाई आ नया जिनिगी के शुरुआत होई...।''

ओइजा के पुनरजनम के तरीका एकदम अजूबा बा। मंदिर में एगो बहुत बड़ घर बा।ओहि घर में नौ गो ताबूत राखल बा।पुनरजन्म के एह काम में एक साथे एगो दल में नौ आदमी के राखल जाला। एक आदमी के फीस के रूप में दू सई तिरपन रोपेया देबे के परेला।हरेक आदमी के थोरे देर तक ताबूत में ओठंघें के परेला।ओकरा ओठंघते पुरोहित के आदेश के मोताबिक आंख बंद कऽ के कफन ओढ़े आ हटावे के परेला।गोड़ उठा के चटकवाहे प्रार्थना करे के परेला।एह तरीका से कुछ मिनट में ही आदमी के पुनरजन्म हो जाला।एह पुनरजन्म के सबसे बड़ कारण ई बा कि लोगन के एह बात के विश्वास हो गइल बा कि अइसन कइला से सब दुख– बलाई उड़िया जाई।ओह लोग के एह बात के भी पोख्ता विश्वास बा कि पराशक्ति अर्थव्यस्था के ठीक कऽ दी।थाइलैंड के अर्थव्यवस्था चरमरा गइल बा।एह से ओइजा के लोग कर्मकांडी हो गइल बाड़ें।

आदमी में किसिम–किसिम के वृत्ति पावल जाला।ओह में डर भी एगो वृत्ति हऽ।आदमी के एह वृत्ति के पूरा–पूरा दुहाई कहल जा रहल बा।अनगिनत ज्योतिषी,तांत्रिक,नजूमी आ काला जादू के माहिरन के सउंसे धंधा आदमी के एहि वृत्ति पऽ टिकल बा।केहु के भीतरी दैवी शक्ति होखे एकर कवनो आधार नइखे आ भूत, प्रेत,जीन,मरही,बामत, चुड़इल, किचीन,बंगालीन,औघड़, ब्रह्म, नट, खबीश आ मनुसदेव एह सभ के कवनो अस्तित्व नइखे।मिथ्याभ्रम के चलते आदमी मनोरोगी हो जाला। एह ले आदमी जब कवनो अनहोनी बतकहि आ काम करे लागेला,चाहे डेराये लागेला,तब मान लिहल जाला कि ओकरा के कवनो प्रेत–छाया पकड़ लेले बा।एकर फैदा पाखंडी ओझा लोग उठावे लागेलें।भूत भगावे के नाम पऽ एक से एक न खड़ा चालू कऽ देलें...।

अघोरी बाबा के छिरकल भभूत से सोझा राखल बर्तन के पानी में आगिग लागि जाला। एह

बात पऽ केकरा विश्वास ना होई?पानी में आग लागते सोझा बइठल मेहरारू कांपे लागेले।ऊ मेहरारु कुछ कहल चाहेले तले बाबा ओकरा के लात–घुंसा से पीटे के काम लगा देलें।ओह मेहरारू के चीख बाबा के कामयाबी में बदल जाला...।

सोखा भगत के कुछ दोसरे लोलारक बड़ुए।जर–जुआन मेहरारून के गरम छड़ से दाग–दाग के आपन नवटंकी देखावेलें।ऊ मेहरारू डाक–डाक चिचिआलीस, ''हमरा के छोड़ दीं ए बाबा....'' बाकिर ऊ केहु के ना सुनेलें।जब ले ऊ मेहरारू आपन चिचिआइल ना बन्द करेले तबले ऊ ओकरा के दागते चल जालें।

शायर मंदिर के पीछुति बैंड बाजा पऽ नाचत फुलवन्ति के नागा बाबा चमड़ा के चाभुक से मारत–मारत बाम कबार देलें।जब ओकर गोड़ लड़खड़ाये लागेला तब नागा बाबा के पीटाई के चाल तेज हो जाला।बेऔलाद फुलवन्ति सास आ सवांग के सोझा बेबस हो जाले।ऊ कुछुओ ना बोल पाव. ले।नाचत नाचत गीर के बेहोश हो जाले।सास –सवांग के सकुन मिलेला,कि चल,भूत भाग गइल।चमतकारन पऽ विश्वास अंधविश्वास के सबसे मजबूत दीवार हऽ।चमतकारिन के सोझा जब केहु चुनौती देबे वाला खड़ा हो जाला तऽ ओकर देवता पीछुति परा जालें। ओहनिन के तर्क–वितर्क करे वाला आदमी ना चाहीं।

बिआह के बाद लमहर समय गुजर गइल आ कवनो बाल–बच्चा ना भइल,तऽ एकरा फिकिरि लोग परेशान हो जा तारें। सन्तान पावे के चाहत उनका के अहथिर नइखे रहे देत।एकरा खातिर लोग एक से एक उधामत करऽ ता। दरगाह शरीफ पहुंच जाता। चादर चढ़ावऽ ता।मुरगा,बकरा के बलि करऽ ता।ब्रह्म स्थान में पहुंच के भखवटी भाखऽता।ओझा के सोझा एक से एक जलालत सहे खातिर मजबूर होता।ओकरा पीछे बस एके बात मन में रहेला कि बाल–बच्चा बुढ़ारी के लकड़ी होई।बाकिर बुढ़ारी के लड़ाई में ऊ कहंवा तक सहारा बनी आ साथ दिही,एह बात के कवनो गारंटी नइखे।ना एह पऽ ऊ कबो सोचे विचारेला।ओह लोग के दिमाग में ई अंधविश्वास एह कदर समा गइल बा कि ओकर शैतान, ओझा आ सुफिये निकाल सकऽता। एह वैज्ञानिक जुग में भी लोग सच्चाई से तनिको अवगत नइखन। शैतान से मुक्ति खातिर पूजा–अर्चना तऽ करते बाड़े साथे उनका जवन ना करे के चाहिं उहो करे खातिर तइयार बाड़ें।जहंवा तक खानदान चलावे के सवाल बा,ओकरो कवनो ठीक– ठेकान नइखे।रावन के बारे में कहल जाला,सौ पुत सवा लाख नाती, सेकरा घर में दीया ना बाती....।'' एह से कहल बड़ा मोश्किल बा कि काल्हुका होई? एकर कवनो ठौर–ठेकान नइखे । निरधारक केहु दोसर बा। जेकरा के केहु नइखे जानत आ ना आगे जान पाई..

आज सदेह असुरन के बीचे लोग जी रहल बाड़ें।असुर अनेक तरीका के रूप धरे में सक्षम बाड़ें।एह ले ओहनिन के पहचानल कठीन बा।अति आधुनिक बेटा धऽ के लोगन के बीचे ऊ घुम रहल बा। जहरखुराना अपना शिकार के परभावित करे खातिर बढ़िया भेष–भूषा में हाजिर हो रहल बा। जइसे सीता हरन करे खातिर रावन साधु के रूप में पंचवटी में आइल रहे।शराब पीअल,भूत–प्रेत भगावल मोका पाके मेहरारून–लइकिन से छेड़खानी कइल, केहु के बेग आ पर्स उड़ा दिहल,गरदन से चेन–हार खींच लिहल, दुश्मनी निकाले खातिर केहु से मारपीट कइल चाहे जान मारल, करकस आवाज में लाउड–स्पीकर बजावल आ एकरा अलावे बहुत कुछ अइसन कइल जवन केहु ना केहु के गड़ेला ऊ सभ असुरे के वृत्ति हऽ। ओकरा कपार पऽ ना सींग होला आ ना मुंह में बड़–बड़ दांत। हमनिन के समझिला कि पुराना– जमाना में राक्षस होत रहन जवन दुर्गा, राम आ कृष्ण के हाथे मारल गइलन।ई हमनिन के भूल बा।आज भी ऊ सभ कायम बाड़ें।बाकिर ऊ अइसन ना मयावी बाड़ें कि उनकर पहचान कइल कठीन बा....।

आखिर ई का हऽ?आ ई के हऽ?आज एकर पता कइल जरूरी बा।धूप मुंडेर पऽ चढ़ गइल बा।आ चढ़ल धूप के मुंडेर लांघे में तनिको देरी ना लाग. ।करिया कपड़ा पऽ कवनो रंग ना चढ़े,बाकिर करिया दिल के आदमी आपन रंग रोजे–रोज बदलेला।एह रंग के पकड़ला के बादे आदमी अपना के सही राह पऽ ले आ सकऽता।आदमी उहे हऽ जे बुरा वक्त पऽ गोड़ धऽ के आगा बढ़ि जाओ।लहर के खिलाफ पंवर के नदी पार कइल ही जिनिगी हऽ। बहाव के साथे तऽ लाश भी बह जाला...।

सूचना– क्रांति भारत के दुनिया के आगे गिनाये वाला देशन के कतार में ले आ के खड़ा कऽ देले बा।बाकिर अफसोस के ई बात बा कि आज हमनी के समाज एकइशवीं सदी में समा चुकल बा,चनरमा के बाद आदमी विजय खातिर मंगल ग्रह के ओरे बढ़ रहल बा बाकिर तबो अतीत के अज्ञान में लोग भटक रहल बाड़ें।अंधविश्वास समाज के हरेक वर्ग के गिरफ्त में ले लेले बा। अंधविश्वास के जाल में सिर्फ अनपढ़ लोग ही ना पढ़ुला लोग भी बड़–बड़ डिग्री लेले फंसल बा।जादू–टोना, झाड़–फूंक आ जंतर–मंतर जइसन अंधविश्वास के नाम पऽ घिनौना अपराध कइल जा रहल बा।एकरा के रोके खातिर कानूनी प्रतिबंध के जरूरत बा।अंधविश्वास आदमी के मन के भ्रम हऽ आ एकरा के आत्मविश्वास के बूता पऽ ही दूरूदूरावल जा सकऽता ....।

❑❑

आरा,मो नं 9431098005

हे चच्चा चुपचाप रहा

उमाशंकर शुक्ल दर्पण

हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में,
अबकी बेरिया तोहार भतीजा,
खड़ा होई परधानी में।

चौराहे पे कम जाल करा,
दोहरा गुटखा कम खाल करा,
भरि –भरि गाल फुलैले बाट्या
पहिले ऐके साफ करा।
हम्मै हरदम हुरपेटै ला
चाची से कहब दलानी में,
हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में।

गांव कै छोटका बड़का सब,
सबके सब भैवद्दी बा,
नहरी पे सब हमरे संगे
खेलले झाबर कबड्डी बा,
गांव कै नैकी दुलहिन के
भौजी कहिके गोहराईला,
आशीष मिली खुब गहबर हमके
झुकि ऋझुकि अंगुरी सोहराईला,
गाल चिकोटि के देवरू हमके
कहैनी मिठकी बानी में,
हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में।

पूरब टोला से पच्छू तक
सबकर नाम हम जानी ला,
जहै से नेवता मिल जाला,
भौंरी औ चोखा खाईला।
बाबा –अईया काका– काकी संग
हसि –हसि के हम बतियाईला,
नेहिया के भंडार बसत है
ओनके ओसारे छान्ही में,
हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में।
हे चच्चा चुपचाप रहा

गांव के हम विकास करब
अन्हियारें में परकास करब,
जेहर कब्भौ न काम भईल
उहां कामे कै बरसात करब,
न केहू से सिकाईत चाचा
न झगड़ा करब नादानी में,
हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में।

हमरे कामे में न टांग अड़ाया
न मरिहा कौनो फंदा चच्चा,
हमहू पढ़ले लिखले बाटी
हम अनपढ़ नाही बंदा चच्चा।
सज्जन के संग सज्जन हम रहबै,
शैतानन संग शैतानी में।
हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में।

चकरोड सड़क सब सुन्नर होई
फुलवारी में हा महकी,
पेड़ लगी हर जगह हो चच्चा
फरी फुलाई औ गमकी।
न करी केहू कै क्यो कब्जा
फरजी वसीयत बेईमानी में।

हे चच्चा चुपचाप रहा
बहुत किहा मनमानी में,
अब की बेरिया तोहार भतीजा
खड़ा होई परधानी में।

❑❑

❍ ग्राम पोस्ट ,पक्खनपुर विछैला,
जिला अम्बेडकरनगर नगर,
उत्तर प्रदेश। पिन 224125
दूरभाष 8882168961

भोजपुरी साहित्यनामा — 2025

डॉ.सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के विकास के दिसाँई भोजपुरी समाज निरंतर प्रयासरत बा।भोजपुरी— विकास खातिर दर्जनन भोजपुरी संस्था लगातार कार्यक्रम आयोजित करत रहल बाड़ी सँ।साहित्यकार —कलाकार—राजनेता सभे अपना ओर से भोजपुरी के विकास खातिर हर संभव प्रयास कर रहल बा।भोजपुरी साहित्य के विकास के दिसाँई सबहर रचनात्मक प्रयास चल रहल बा।हर तरे के बिधान में विविध विषय—वस्तु पर रचनाकार लोग कलम चला रहल बा।अश्लीलतापरक गायन के मुखर विरोध हो रहल बा।सार्थक आ सोद्देश्य गायकी के सराहना मिल रहल बा। अश्लीलता आ जातीयतापरक गायन के प्रतिरोध में समानान्तर रूप से आज अनगिनत गायक—गायिका लोग सक्रिय हो गइल बा जवना के नतीजा बा कि अइसनका गायकी के बाजार अब डाउन होखे लागल बा। जन—जागृति के जरिए भोजपुरी आउरो तेजी से अपना माथे सटल एह कल.क के धो सकत बिया।

2025 में 'विश्व भोजपुरी सम्मलेन' के नई दिल्ली आ देवरिया में संपन्न प्रान्तीय सम्मेलन जहाँ खूब चरचा में रहल बा ओजवे बहुत पुरान आ लगातार सक्रिय 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना' के 28वाँ अमनौर अधिवेशनो भोजपुरी के 'आठवीं अनुसूची' में पइसार के असरा—भरोसा जगावला के दिसाँई एक बेर फेर काफी चर्चित रहल बा।अबकी एह मंच से फेनू एक बेर एगो कद्दावर भोजपुरिहा सांसद ई विश्वास दिलवले बाड़न कि बरिस भीतरे भोजपुरी के सांविधानिक मान्यता के लेके कुछ खुशखबरी जरूर सुने के मिली।भोजपुरी आन्दोलन के गति देबे में डॉ.संतोष पटेल जी के नेतृत्व में 'भोजपुरी जन जागरण अभियान,नई दिल्ली' एहू साल जन्तर — मन्तर(नई दिल्ली)पर आपन धरना —प्रदर्शन के क्रम सफलतापूर्वक जारी राखे में सफल रहल बा।आज सैकड़न भोजपुरी संस्था/संस्थान— मसलन 'मैथिली—भोजपुरी अकादमी' नई दिल्ली, 'भोजपुरी अध्ययन केन्द्र,वाराणसी' (उप्र.), 'पूर्वांचल एकता मंच (लखनऊ)', 'पाती' मंच(बलिया), 'जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद' , 'भोजपुरी साहित्य विकास मंच'(प.बंगाल),'भोजपुरी फाऊंडेशन' (यूपी), 'आखर'(सीवान),'यायावरी'(गोरखपुर), 'भोजपुरी समाज', 'अखिल भारतीय भोजपुरी समाज '(दिल्ली), 'माई' (प्रयागराज), 'जीवनोदय शिक्षा समिति'(गाजीपुर), 'प्रगतिशील भोजपुरी समाज'(देवरिया ,यूपी), 'पंचमेल' (छपरा),'हबीब भोजपुरी विकास मंच '(छपरा) आदि विभिन्न रूपन में भोजपुरी विकास में आपन योगदान दे रहल बाड़ी सँ।

एह साल दिल्ली ,प्रयागराज,वाराणसी,गोरखपुर, देवरिया , अमनौर (छपरा),कोलकाता,बलिया , गाजीपुर, मोतिहारी, लखनऊ, बेतिया, महराजगंज आदि अनेक जगहन पर भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के बढ़ावा बदे अनेक सफल आयोजन भइलन हँ सँ।

भोजपुरी भाषा,साहित्य,समाज आ संस्कृति पर आधारित अनेक आलेख भोजपुरी पत्रिकन के अलावे हिन्दी पत्र—पत्रिकनो में प्रकाशित भइल बा।भोजपुरी पत्रिकन में 'जोहार भोजपुरिया माटी', 'पाती', 'भोजपुरी साहित्य सरिता' , 'भोजपुरी वार्ता' , 'सँझवत ', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' , 'भोजपुरी अमन' आदि पत्रिकन में बहुत ढंगगर रचना छप रहल बाड़ी सँ। 'जोहार भोजपुरिया माटी' आ 'पाती' के तऽ हर अंक विशेषांक —जस आ रहल बा जवन बहुत उपयोगी आ संग्रहणीय हो जा रहल बा।भोजपुरी ई —पत्रिकन के रूप में 'भोजपुरी जंक्शन', 'सिरिजन' आ 'मैना' आदि पत्रिकन के योगदान बहुत महत्वपूर्ण रूप में सोझा आइल बा। एह साल छपल 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के अमनौर अधिवेशन के स्मारिका—'इयाद—3' आ बच्चू पांडेय जी पर छपल अभिनंदन ग्रंथ —'बच्चू बाबा —स्मृति संचय' (संपादक—भगवती प्रसाद द्विवेदी)भोजपुरी साहित्य के विकास में बराबर इयाद कइल जाई।

एह पृष्ठभूमि पर विचार करत जब हमनीं भोजपुरी लेखन आ प्रकाशन पर नजर दउड़ावत बानीं तऽ स्थिति कवनों निराशाजनक नइखे बुझात। आईं सभे एह सूची के तनिका तिकवल जाव—

2025 में प्रकाशित महत्वपूर्ण भोजपुरी किताबन के सूची :

नाम — लेखक/संपादक —विधा —प्रकाशक

क—साहित्येतिहास/जीवनी/व्यक्तित्व—अभिनंदन ग्रंथ :

1—भोजपुरी कविता के इतिहास—डा.ब्रजभूषण मिश्र—भोजपुरी काव्येतिहास—मैथिली भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली।
2—भोजपुरी प्रतिभाएँ—संपादक—डॉ.ब्रजभूषण मिश्र—भोजपुरी —प्रतिभा परिचय —भोजपुरी साहित्य अकादमी व मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद,भोपाल ।
3—आधुनिक भोजपुरी साहित्य के इतिहास—आचार्य शुभनारायण सिंह 'शुभ '—साहित्येतिहास—शिवालिक प्रकाशन, नई दिल्ली
4—भोजपुरी भाषा और कैथी लिपि — पृथ्वीराज सिंह —भाषा विज्ञान—मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली।

5–भोजपुरी सिनेमा के इतिहास–मनोज भावुक–मैथिली–भोजपुरी अकादमी,दिल्ली।
6–ब्रजभूषण मिश्र–भोजपुरी के समर्पित व्यक्तित्व–संपादक–कनक किशोर ,सर्वभाषा ट्रस्ट।
7– बच्चू बाबा : स्मृति– संचय–संपादक–भगवती प्रसाद द्विवेदी, बच्चू पांडेय कला वीथी,छपरा।
8–वीरांगना के अमरगाथा–शिवानुग्रह नारायण सिंह–जीवनी–अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना।

ख–समालोचना/काव्यशास्त्र/भाषा विज्ञान/व्याकरण

1– भोजपुरी साहित्य–समय के साखी –डॉ.ब्रजभूषण मिश्र–समालोचना–अभिधा प्रकाशन,मुजफ्फरपुर।
2– भोजपुरी कविता में अलंकार, रस,छंद–डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, परिवर्द्धन सहयोगी –आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' (परिवर्द्धित संस्करण)–डॉ. ब्रजभूषण मिश्र व हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'–काव्यशास्त्र –अभिधा प्रकाशन , मुजफ्फरपुर।
3– भोजपुरी कविता :रुचि आ रचाव–सुनील कुमार पाठक–समालोचना–भोजपुरी प्रकाशन (सर्वभाषा ट्रस्ट), नई दिल्ली।
4–भोजपुरी उपन्यास आ देस–जितेन्द्र कुमार–आलोचना –न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5–भोजपुरी साहित्य के विविध आयाम–संतोष पटेल–समालोचना
वी.एल.एम.एस.पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली।
6–ककहरा –डा.देवेन्द्र नाथ तिवारी–आलोचना – भोजपुरी प्रकाशन (सर्वभाषा)नई दिल्ली।
7–भोजपुरी रामगीत–दिवाकर पांडेय–गीत संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन ,नई दिल्ली।
8–भोजपुरी कविता में किसान–संपादक–कनक किशोर– समालोचनात्मक आलेख संग्रह–भोजपुरी प्रकाशन, (सर्वभाषा ट्रस्ट) नई दिल्ली।
9–कुछ पारम्परिक, कुछ सामयिक–कनक किशोर–आलेख संग्रह–श्रीनर्मदा प्रकाशन, लखनऊ।
10–भोजपुरी भाषा का व्याकरण एवं साहित्य–डॉ. बलदेव यादव–शिवांगन पब्लिकेशन।
11–भोजपुरी भाषा के समाजशास्त्रीय अध्ययन–डा. गोपाल अश्क–भाषा –शोध–नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमांडू,नेपाल।

ग– कविता /गीत/गजल संग्रह

1–प्रतिनिधि कविता : भोजपुरी–संपादक:अरुणेश नीरन, सह संपादक– डॉ. बलभद्र आ डॉ. प्रकाश उदय, कविता संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन।
2–देखावा के जिनगी –नुरैन अंसारी –गजल संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन ।
3–नजरिया के पानी –अर्जुन पाठक 'विकल' –गीत संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन।
4–चानी के चनरमा –मधुबाला सिन्हा,कविता संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन।
5–राधा–सवैया संग्रह – केशव मोहन पांडेय – सर्वभाषा प्रकाशन ।
6–देखत हँसे धतूरा – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी – सर्वभाषा प्रकाशन ।
7–घमछहियाँ –अश्विनी द्विवेदी 'नमन' – गीत संग्रह – सर्वभाषा प्रकाशन ।
8–केहू केतनो दुलारी बाकिर माई ना होई –सुभाष चंद्र यादव–गीत संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन ।
9–अनबोलता–डॉ. संतोष पटेल – कविता संग्रह – सर्वभाषा प्रकाशन ।
10–धरती के गीत–सुरेश कांटक–कविता संग्रह –भोजपुरी साहित्यांगन चौरिटेबल ट्रस्ट, पटना।
11–पूर्व राग –आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन ' –काव्य–श्वेतवर्णा प्रकाशन ,नोएडा ।
12–हो न हो – कनक किशोर–कविता संग्रह – ज्ञानमुद्रा प्रकाशन,भोपाल।
13–ना बरगद के छाँव ना बाबा के गाँव–कनक किशोर–कविता संग्रह–नर्मदा प्रकाशन, लखनऊ।
14–प्रेम के रंग अजूबा–कनक कबीर–दोहा संग्रह–श्रीनर्मदा प्रकाशन, लखनऊ।
15–भोजपुरी बालगीत–संग्रह कर्ता–चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, संपादक–कनक किशोर व दिलीप कुमार–श्रीनर्मदा प्रकाशन, लखनऊ।
16–भूषण रामायण – वद्याभूषण सिंह 'कवि जी – लोकधुन पर आधारित काव्य – जानकी प्रकाशन, पटना।
17–धरती के गीत–सुरेश कांटक–गीत–कविता संग्रह–भोजपुरी साहित्यांगन चौरिटेबल ट्रस्ट, पटना।
18–लिहलैं जनम रघुरैया – रामनिवास यादव – कविता संग्रह – विकल्प प्रकाशन, दिल्ली।
19–भोजपुरी गीत कवित्त–डॉ.शंकर मुनि राय–कविता संग्रह–अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूट र्स, नई दिल्ली।
20–गुजर रहल बा जिन्दगी–अनिता शाह –ओरिएंटल पब्लिकेशन, काठमांडू,नेपाल।
21–सउँसे चान आकासे – वीणा पांडेय 'भारती' – गीत संग्रह – जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर।
22–जिनिगिया के थाती –माया शर्मा – सर्वभाषा प्रकाशन।
23–बेचैन संदेश–शिव संदेश–गजल संग्रह–भोजपुरी प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमांडू,नेपाल।
24–हमार गाँव–राम बहादुर राय–कविता संग्रह–न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
25–चलऽ चलीं गँउवां के ओर–कैलाश नाथ शर्मा गाजीपुर –जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर।

घ–कहानी/उपन्यास/नाटक–एकांकी/निबंध/कथेतर गद्य/अनुवाद/विविध

1–जिनिगी के धाह,जीये के चाह–डॉ.संध्या सिन्हा –कहानी संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन
2–खुखड़ी – रेणु यादव – कहानी संग्रह – सर्वभाषा प्रकाशन
3–पिरितिया के डोर–शकुंतला शर्मा शकुन –सर्वभाषा प्रकाशन
4–ऊसर के फूल–नरेंद्र शास्त्री–उपन्यास–सर्वभाषा प्रकाशन ,नई दिल्ली।
5–निमिया रे करुअइनी – मीनाधर पाठक – उपन्यास –भोजपुरी प्रकाशन (सर्वभाषा), नई दिल्ली।
6–मेला –चंदेश्वर परवाना –कहानी संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन ,नई दिल्ली।
7–लकीर –रामयश अविकल–कहानी संग्रह–सर्वभाषा प्रकाशन ,नई दिल्ली।
8–अपने देसवा नीक बा–संतोष पटेल–कहानी संग्रह–वी.एल.एम.एस.पब्लिकेशन,प्रा.लि.नई दिल्ली।
9–फनिया बध–डॉ.दिवाकर राय–नाटक–
10–बिटिया के बिदाई – अरविंद चित्रांश – लोकनाट्य –राजसूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली।
11–भोजपुरी साहित्य संचयन –प्रो.चितरंजन मिश्र व विमलेश मिश्र –भोजपुरी गद्य–काव्य संचयन–सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली।
12–भोजपुरी चित्रकला:विविध आयाम–पृथ्वीराज सिंह–सारव प्रकाशन ,छपरा ।
13–धम्मपद–(भोजपुरी अनुवाद) – अनुवादक – पृथ्वीराज सिंह –सारव प्रकाशन ,छपरा।
14–सूरज डूबे रे नदिया–गोपाल अश्क–ललित निबंध–ओरिएंटल पब्लिकेशन, काठमांडू ,नेपाल।
15–एक पर एक–शिवानुग्रह नारायण सिंह –ललित निबंध संग्रह–सारव प्रकाशन, छपरा।
16–भोजपुरी नवग्रह चेतना –कुमार अजय सिंह
17एगो किताब : मतारी –बाप खातिर – अन्तोन मकारेंको , अनुवादक – डॉ.रंजन विकास–भोजपुरी साहित्यांगन चौरिटेबल ट्रस्ट ,पटना।
18– ई त ऊ ह –अनुवादक – नर्मदेश्वर-अंग्रेजी कवितन के भोजपुरी अनुवाद–अनुज्ञा प्रकाशन, नई दिल्ली।

– भोजपुरी साहित्य में प्रकाशन के काम अधिकतर लेखकीय प्रयासे से हो रहल बा।सरकारी संस्थन के सहयोग से बहुते कम किताब छप पावत बाड़ी सँ।साहित्य अकादमी /एन. बी. टी./कवनों राज्य के भाषायी अकादमी /सरकारी भा सरकार से वित्तपोषित संस्थन आदि के सहयोग भोजपुरी प्रकाशन के लिहाज से नगण्ये मानल जाई।

एह साल प्रकाशित किताबन में 60 गो से जादे के सूची हम तैयार कर सकल बानीं।पिछिलिका दू साल लेखाँ एहू साल भोजपुरी काव्य– संग्रह के संख्या सर्वाधिक 25 से ऊपर बा।ओकरा बादे कहानी–उपन्यास भा समालोचना–साहित्येतिहास आदि से जुड़ल किताब छपल बाड़ी सँ।एह साल छपल किताबन में दस गो किताब तऽ अइसन जरूर बाड़ी सँ जवन आगहूँ आपन उपयोगिता आ प्रासंगिकता सुदीर्घ काल तक साबित करे में सफल रहिहें सँ।समालोचना के नाम पर पुस्तक–समीक्षा जादेतर नजर आवत बा।कवनों एगो रचनो के आधार बनाके पाठ–आधारित समीक्षा के ओर सक्रियता बढ़ल बा। तुलनात्मक आलोचना में कहीं–कहीं बहुत सामान्य कोटि के रचनन के भाव चढ़ल दिखत बा।भोजपुरी कविता में अभियो गीत–गजलन के तूती बोल रहल बा।विचारप्रधान मुक्तछंदी आ नया–नया बिम्बन आ प्रयोगन के लिहाजन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के प्रति कवनों विशेष रुझान एजवा कमे लउकत बा।कहानी,उपन्यास, लघुकथा आ नाटक के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करे के जरूरत बा।भोजपुरी साहित्य के इतिहास–लेखन के दिसाँई डॉ.ब्रजभूषण मिश्र आ आचार्य शुभनारायण सिंह ' शुभ ' के कृति जरूर सामने आइल बाड़ी सँ जवन साहित्येतिहास–लेखन के प्रति भोजपुरी के बढ़त डेग के निशानी बाड़ी सँ बाकिर अभियो भोजपुरी साहित्य के इतिहास–लेखन के क्षेत्र व्यापक इतिहास–बोध आ आधुनिक दृष्टि से भरल–पुरल चिन्तन वाला सर्जक के बाटे जोहत बा। एह जरूरत के सामूहिक रचनात्मक प्रयास के जरिये पूरा कइल जा सकत बा।कथेतर गद्य आ ललित निबंध के क्षेत्र में डा.बलभद्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी , सौरभ पांडेय, चंद्रेश्वर आ रवीन्द्र श्रीवास्तव 'परिचय दास' आदि बढ़िया काम कर रहल बानीं सभे बाकिर युवा पीढ़ियो का एह दिसाँई मैदान मारे के सोचे के चाहीं।लोकधुनन पर आधारित भोजपुरी कविता में आधुनिक भाव–बोध के पिरोवत कुछ बहुत उत्कृष्ट रचना हरेन्द्र हिमकर,कमलेश राय, सुनील कुमार 'तंग',शशि प्रेमदेव,दिनेश पांडेय, सुशांत शर्मा, मिथिलेश गहमरी,मनोज भावुक, संतोष पटेल,जयशंकर प्रसाद द्विवेदी,गुलरेज शहजाद, नुरैन अंसारी आदि कवियन के कलम से लगातार सामने आ रहल बाड़ी सँ।आज भोजपुरी साहित्य में तीन–तीन पीढ़ियन के रचनाकार एके साथ सक्रिय बाड़न। इहे कारण बा कि आज भोजपुरी के सृजनात्मक प्रयास में पर्याप्त विविधता आ रुचिरता देखे के मिल रहल बा।भोजपुरी साहित्य खातिर 2025 के वर्ष रचनात्मक उपलब्धि वाला तऽ मानल जाई बाकिर एही साल तीन गो मशहूर भोजपुरी साहित्यकार– रामदरश मिश्र, तैयब हुसैन 'पीड़ित', गंगा प्रसाद 'अरुण' आ अरुणेश 'नीरन ' जी के बिछोह भोजपुरी साहित्य खातिर अपूरणीय क्षति रहल।

दरअसल ,भोजपुरी लेखन आ प्रकाशन आज पूरा तरे एगो जिद,जुनून आ जज्बा वाला काम बा जवना खातिर कबीरी मन के जरूरत बा –''जो घर जारे आपना ,चले हमारे साथ।'' एह काम में ऊहे टिक पाई जेकर हौसला बुलंद होखे, व्यापक मानवीय संवेदना आ सामाजिक सरोकारन से गहिर लगाव होखे। ऊ 'इश्क– मतवाला ' होखे – अपना दुनियाँ के सजावे–सँवारे ले जादे , दुनियादारी निभावे खातिर य अपना के खपा देबे खातिर।भोजपुरिया मनई खातिर ई कवनों बड़हन बात नइखे।

❑❑

पटना,बिहार।

भोजपुरी भाषा विज्ञान के एगो महत्वपूर्ण पुस्तक – ‘ भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी’

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी भाषा ओकर साहित्य आ व्याकरण का उपलब्धता का चलते पढ़ल, जानल आ परिचित होखल आसान बा बाकिर भोजपुरी में भाषा विज्ञान के उपलब्धता बहुते कम बा। एह डिसाइ भाषा विद शुभ नारायण सिंह ‘शुभ’ जी के पुस्तक ‘भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी’ से सरोकार भइल । ढेर कुछ जाने समुझे के सहज सुभाग भेंटल। भाषा का ह, ओकर व्याकरण काहें होखे के चाही, भाषा के इतिहास, भूगोल , शब्द संरचना , वाक्य विन्यास , उत्थान पतन, उत्पत्ति आ रूप परिवर्तन के सांगोपांग विवेचन जाने समुझे खातिर एगो सुन्नर पोथी भेंट. इल। साँच काहल जाव त ‘ भाषा विज्ञान भाव विचार प्रकट करे क साधन ह , जेमे शब्द , शब्दार्थ आ व्याकरण पर विशेष धियान दीहल जाला।

‘भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी’ पुस्तक के रचनाकार शुभ नारायण सिंह ‘शुभ’ जी दू खंड में समायोजित क के एगो पुरहर पोथी भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा परोसले बाड़न। पहिल खंड के 9 अध्याय में भाषा,भाषा विज्ञान के रूप रेखा,भाषा विज्ञ. ान के विशेष क्षेत्र आ संबंध, भाषा उत्पत्ति के सिद्ध ान्त , बोली भाषा आ विभाषा के आपसी संबंध , आध ुनिक भारतीय भाषा आ वर्गीकरण, बिहारी भाषा भोजपुरी,माइठी आ मगही , भोजपुरी भाषा परिचय, नामकरण आ लिपि , भौगोलिक विस्तार आ रूप–स्वरूप बा। उहें दोसरा खंड के 8 अध्याय व्याकरण के बा। मने ई अपने आप में एगो सोगहग पोथी बा।

एह पुस्तक के विस्तारित भूमिका डॉ जौहर साफियाबादी जी लिखले बाड़न। उहाँ के एह पुस्तक के पढ़े ला बखूबी रुचि पैदा क देले बाड़न । ओकरा से इतर एह पुस्तक पर डॉ राजेश कुमार माँझी, प्रेम. चंद, विमलेंदु पाण्डेय आ डॉ अर्जुन तिवारी जी के विमर्श आ टिप्पड़ी एकर महातिम बढ़िया से सोझा राख रहल बा।

मानवीय भाव विचार सम्प्रेषण के बरियार आ अनिवार्य माध्यम के भाषा कहल जाला । भाषा पर काम करे वाला विदेशी आ भारतीय विद्वान लोग भाषा के परिभाषित कइले बा। संस्कृत का ‘भाष’ धातु का संगे आंग आ टॉप प्रत्यय का जुड़ला से भाषा शब्द के उत्पत्ति भइल बा । ‘भाष’ धातु का प्रयोग स्पष्ट बोलला का अर्थ में होला। एही से विद्वान लोगन के मत बा कि भाषा उ साधन ह, जवना से बोले वाला का भाव के स्पष्ट अभिव्यक्ति हो जाला आ बोले वाला के विचार के सुने वाला खूब नीमन से समुझ लेला। मूल रूप से भाषा दू प्रकार के होला– (क) सांकेतिक भाषा (ख) असांकेतिक भाषा

दुनिया के एकमात्र सुरक्षित भाषा जवना के प्रकृति प्रदत्त भा दैव भाषा कहल जाला। एकरे माध्यम से एगो मनई दोसरा मनई से संकेत आ हाव भाव से आपन मनोभाव प्रकट करेला।

असांकेतिक भाषा ओह भाषा के काहल जाला जवना में कुछ निश्चित संकेत क के ओ. करा से अर्थ आ भाव के ज्ञान प्राप्त कइल जाला । असांकेतिक भाषा लिखित आ मौखिक दूनों रूप में होला। भाषा सटीक परिभाषा कई विद्वान लोग दीहले बा। ओहमें से डॉ श्याम सुन्दर दास जी के परिभाषा देखल जाव–

“मनुष्य मनुष्य का बीच वस्तुअन का विषय में आपन इच्छा भा मनोभाव का विनिमय खातिर जवन ध्वनि संकेत के व्यवहार कइल जाला, ओ. करा के भाषा कहल जाला।”

भाषा के विभिन्न पहलुअन के सांगोपांग गहिर अध्ययन का सूत्रन के बारीकी से जाने के कला के नाम भाषा विज्ञान ह । मने भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के भाषा विज्ञान कहल जाला । भाषा विज्ञान के संबंध साहित्य आ व्याकरण से त होखबे करेला संगही इतिहास, भूगोल चाहे मनोविज्ञान सबसे एकर संबंध कार्य शैली आ मनोदशा के अनुरूप होखेला।

साहित्य शब्द के व्युत्पत्ति का बारे में कहल गइल बा – ‘हितेन सह इति साहित्यम’। सार्थक शब्दन से भाषा आ भाषा से साहित्य के

निर्माण होला आ साहित्य से भाषा विज्ञान के अटूट संबंध होला। एकरा से ई स्पष्ट होता कि कवनो भाषा का उत्पत्ति से लेके वर्तमान तक के अध्ययन भाषा विज्ञान करेला।

शब्द का अनुशासन के व्याकरण कहल जाला, जवना के प्रयोग भाषा का अशुद्धि के शुद्ध करे खातिर होला। व्याकरण के आचार्य लोग के कहनाम बा– "व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यान्ते शब्दाः प्रकृति अनेनेति व्याकरणम्"। मने जवना शास्त्र में शब्दन के उत्पत्ति आ प्रकृति आदि का संबंध में अध्ययन कइल जाला आ जवन हर भाषा के आपन आपन होला , उहे व्याकरण ह। व्याकरण का आधार पर व्यक्त कइल गइल मनोभाव के अर्थ स्वतः स्पष्ट हो जाला। एही से भाषा विज्ञान के संबंध व्याकरण से होत रहेला। एकरा संगही भाषा विज्ञान के ओतने महत्वपूर्ण संबंध भूगोल, इतिहास, मनोविज्ञान, मानव विज्ञान, शरीर विज्ञान, तर्क शास्त्र, आ भौतिक विज्ञानों से बा।

भाषा उत्पत्ति का सिद्धान्त का विषय में लेखक दूनों मार्ग (प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष) के ज्ञात सिद्धांतन के विषद विवेचन कइले बाड़न। प्रत्यक्ष मार्ग के 11 गो सिद्धान्त आ अप्रत्यक्ष (परोक्ष) मार्ग के 3 गो सिद्धांतन पर विमर्श करत एह निष्कर्ष पर पहुँचत बाड़न कि कवनो भाषा उत्पत्ति के सिद्धांतन से स्पष्ट आ ठोस तथ्य प्राप्त नइखे भइल।

बोली, भाषा आ विभाषा के आपुसी संबंधन के निरूपण आ बोली आ भाषा के अंतर का संगही एगो बोली के भाषा बने के कारणन पर तार्किक विचार लेखक कइले बाड़न।

पूरा संसार में बोलियन भा उपभाषन के अलावे कुल्हि भाषन के संख्या लगभग दू हजार का आसपास मानल गइल बा। एकरा के 12 वर्गन में बांटल गइल बा–

1– भारोपीय 2–बन्टू 3–एस्किमो 4–फिन्नों उग्रीय 5–काकेशीय 6–सेमेटिक–हेमेटिक 7–तुर्क मंगोल 8–द्रविण 9–आष्ट्रिक 10–भोट चीनी 11– अमेरिकन आदिवासी आ 12–उत्तरी–पूर्वी सीमांत वर्ग

भारत आ ईरान के लोग अपना के आर्य कहत रहे , एही से एह लोग के भाषा के आर्य भाषा कहल गइल । ई दू भाग में बाटे–

1– भारतीय आर्य भाषा
2– इरानियन आर्य भाषा

विकास का अनुसार भारतीय आर्या भाषा के 3 भाग में बाँटल गइल ।

1– प्राचीन आर्य भाषा – संस्कृत
2– मध्य कालीन भारतीय आर्य भाषा जइसे –पालि , प्राकृत आ अपभ्रंस
3– आधुनिक भारतीय आर्य भाषा जइसे – हिन्दी , बंगला,मराठी , गुजराती ।

डॉ ग्रियर्सन के आर्यभाषा के वर्गीकरण एह प्रकार से बा –

(क) **बाहरी उपशाखा**

1– **उत्तर–पश्चिम समुदाय** –
(i) लहंडा आ पश्चिमी पंजाबी
ii) सिंधी

2– **दक्षिणी समुदाय** – मराठी

3– **पूर्वी समुदाय** – (i) उड़िया (ii) बिहारी (iii) बंगाली (iv) असमिया

(ख) **मध्य उपसाखा** – बीच के समुदाय – पूर्वी हिन्दी

केंद्रीय भा भीतरी समुदाय

1– पश्चिमी हिन्दी 2– पंजाबी 3–गुजराती 4–भीली 5– खानदेशी 6– राजस्थानी से बा।

पहाड़ी समुदाय

1– पूर्वी पहाड़ी भा नेपाली 2– मध्य आ केंद्रीय पहाड़ी 3– पश्चिमी पहाड़ी

भारत में आर्यन के दू गो जत्था आइल । दोसरका जत्था मध्य प्रदेश में बस गइल आ वैदिक संस्कृति के नीव डललस।

डॉ ग्रियर्सन अपना वर्गीकरण में बाहरी उपसाखा के पूर्वी समुदाय में बिहारी भाषा के स्थ. ान देले बाड़न। उहाँ के बिहारी भाषा से तात्पर्य भोजपुरी ,मैथिली आ मगही से बा। डॉ ग्रियर्सन का अनुसार बिहारी भाषा के उत्पत्ति –

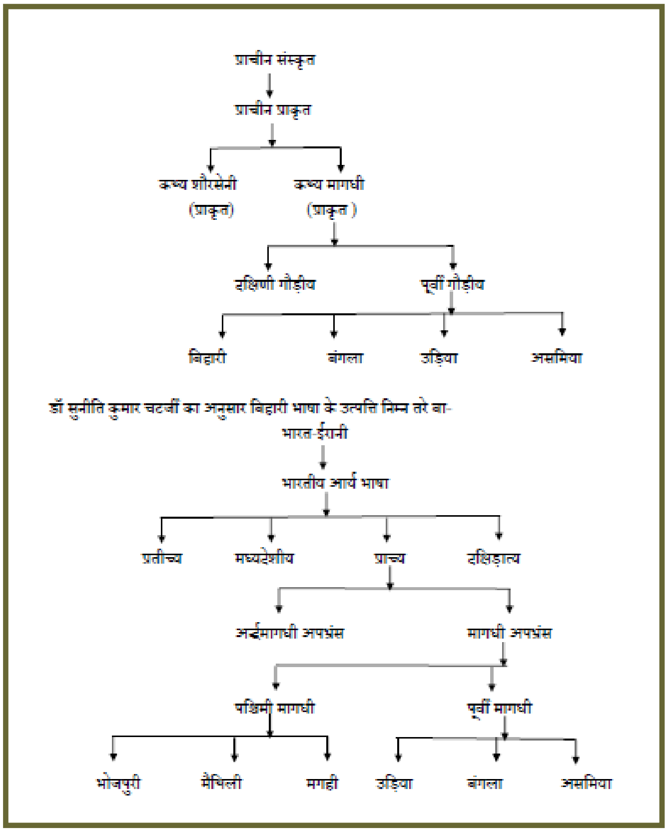

लेखक शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी भोजपुरी भाषा के नामकरण के लेके डॉ ग्रियर्सन आ डॉ उदय नारायण तिवारी जइसन भाषा विद लोग से सहमत बानी । मने भोजपुरी बोली के नामकरण शाहाबाद जिला के भोजपुर परगना का नाम पर भइल । जवन प्राचीन काल में भोजपुर प्रांत कहात रहे आ उहाँ के शासक भोजदेव रहस ।

पूरा भारत में लगभग 327 गो भाषा आ 25 गो लिपि बा, जवना में भोजपुरी के लिपि देवनागरी बा। बहुत लोग भोजपुरी के लिपि काइठी मानेला बाकिर लेखक तर्क से एकरा से असहमत बाड़ें। एह विषय में उहाँ के तर्क – "भोजपुरी के सही रचना अमीर खुसरो का समय से शुरू भइल । अमीर खुसरो तुर्की लिपि में लिखल शुरू कइलन , जवन आज उर्दू लिपि कहात।"

14वीं–15वीं सदी में कबीरदास जी एगो बरियार भाषा मान के रचना शुरू कइनी आ इहे कारण बा कि उहाँ के भोजपुरी के आदि कवि मानल जाला। उहाँ के एगो रचना देखीं–

हमरी बोली पूरब की, हमे लखै ना कोय
हमरा त सोई लखै, धुर पूरब का होय ।

भोजपुरी बोले वाला लोग के क्षेत्रफल विद्वान लोग का अनुसार लगभग 43000 (तैंतालीस हजार) वर्गमील बा। डॉ उदय नारायण तिवारी जी का अनुसार भोजपुरी बिहार, उत्तर प्रदेश ,नेपाल का मध्य पश्चिम से लेके मध्य प्रदेश के सरगुजा रियासत तक आ झारखंड में पलामू आ जसपुर तक बोलल जाला।

डॉ ग्रियर्सन भोजपुरी के चार गो रूप मनले बाड़न, जवन उत्तरी, दक्षिणी पश्चिमी आ नगपुरिया कहाला। एकरा इतर दू गो अउर रूप बा जवन मधेशी भोजपुरी आ थारु भोजपुरी कहाला। उत्तरी भोजपुरी के सरवरिया आ गोर खपुरी दू गो विभाषा ह। एही लेखा पश्चिमी भोजपुरी के काशिका कहल जाला।

भोजपुरी खाली भारते ना बलुक विश्व के कई देसन जइसे –मॉरीशस, फीजी, हालैण्ड, सूरीनाम, फ्रांस, त्रिनिनाद , केनिया, भूटान, ने. पाल, गुयाना आ सिंगापुर आदि में फइलल बा।

भाषा विज्ञान के काम बेगर व्याकरण के पूरा ना हो सकेला। एही से अब व्याकरण के कुछ बात–

व्याकरण अइसन विधा ह,जवन कवनों भाषा के अनुशासित राखेला। एकरा माध्यम से भाषा के वर्ण,शब्द चाहे वाक्य आदि के व्याख्या कइल जाला।

भाषा विद आ एह पुस्तक 'भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी' के दोसरका खंड के 8 अध्याय में व्याकरण के हर अवयव पर विचार आ विवरण मजमून का संगे प्रस्तुत कइले बाड़न। एह पुस्तक में वर्ण विचार(स्वर आ व्यंजन), शब्द संरचना आ वाक्य विन्यास, संज्ञा, सर्वनाम विशेषण, क्रिया, काल, लिंग, वचन, कारक, अव्यय, प्रत्यय, समास, संधि, वाच्य आ विराम विचार विस्तार से कइल गइल बा। छंद आ ओ. करे अंग पर उदाहरण का संगे विचार भइल बा। एही खंड में पर्यायवाची, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थक शब्द सहचर आ विपरितार्थक शब्द उदाहरण का संगे विवेचित कइल गइल बा। संगही मुहावरा, कहाउत आ बुझउवल, अनेक शब्द खातिर एक शब्दो के ढेर थोर बात बाटे।

'भारतीय भाषा विज्ञान आ भोजपुरी' पुस्तक के पढला का बाद हम ई कह सकत बानी कि ई पुस्तक शोधार्थी, विद्यार्थी आ भोजपुरी प्रेमी लोग खातिर बहुते उपयोगी बिया। अइसन बहुमूल्य पोथी भोजपुरी माई के अँचरा में डाले खातिर रचनाकार शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी के ढेर ढेर साधुवाद । जय भोजपुरी।

❑❑

❍ **बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)**

'आस–अँजोर': सामाजिक सच्चाई, मानवीय संवेदना आ भोजपुरी स्वाभिमान के जिअत–जागत दस्तावेज

डॉ.संतोष पटेल

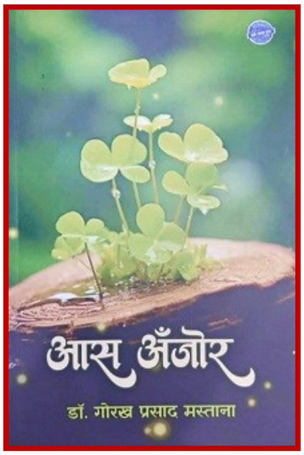

समय आ समाज के आईना साहित्य खाली मन–बहलाव के साधन ना होला, बलुक ई अपने समय के एगो दस्तावेज होला। डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना जी के अभी हाल में आइल काव्य–संग्रह 'आस–अँजोर' एह परिभाषा पर एकदम खखरा उतरत बा। जइसन कि कवि खुद अपनी भूमिका ('आपन कहनाम') में लिखले बाड़ें कि ''साहित्य में समय–समय के विमर्श दरसावल जरुरी हऽ''. अगर साहित्य में आज के समय के चिंतन ना होई, त उ तालाब के सड़ल पानी जइसन हो जाई.

'आस–अँजोर' नाँव ही एह संग्रह के मूल आत्मा के साफ कर देला। इहाँ 'अँजोर' उमीद के निशानी ह, आ 'आस' उ संघर्ष ह जवन समाज में फइलल 'अन्हरिया' (बुराई, शोषण, गरीबी) के मेटावे खातिर कइल जा रहल बा। कवि के मकसद साफ बाकृभोजपुरी भाषा में सत्ता द्वारा बिछावल गइल अन्याय के खिलाफ खड़ा होखल। ई संग्रह खाली गीतन के संकलन ना ह, बलुक एगो सामाजिक आन्दोलन के मशाल ह।

काव्य–संवेदना के अलग–अलग रूप

एह संग्रह के 71 रचना में जिनगी के कई गो रंग देखे के मिलेला. एकरा के मुख्य रूप से नीचे दिहल गइल हिस्सा में बाँट के समझल जा सकत बा:

भोजपुरी अस्मिता आ भाषा के संघर्ष

संग्रह के शुरुआत ही 'भोजपुरी आन्दोलन गीत' से हो रहल बा, जवन कवि के अपनी माई–भाखा के प्रति गहरा लगाव के देखावत बा. कवि के एह बात के गर्व बा कि भोजपुरी संत लोग (कबीर, गोरखनाथ) आ कलाकार लोग (भिखारी ठाकुर, महेंद्र मिसिर) के भाषा ह.

कवि भोजपुरी के दुनिया भर में फइलाव के बारे में लिखत बाड़ें:

''एह भासा में बीस करोडन के मन रचल बसल बा / एकर सुगन्ध, सूरीनाम, मारिसस ले चहुँपल बा''

बाकिर, एह गर्व के साथ

एगो टीस भी बा –संवैधानिक मान्यता के. कवि साफ शब्दन में चेतावनी देत बाड़ें कि अब ''हक हिस्सा'' चाहीं आ भोजपुरी जवान जाग चुकल बा। ई खाली भावुकता ना, बलुक एगो राजनैतिक माँग ह जवन एह संग्रह के क्रांतिकारी तेवर देत बा।

राजनैतिक व्यंग्य आ व्यवस्था पर चोट

'आस–अँजोर' के सबले बड़ ताकत एकर तीखा राजनैतिक व्यंग्य बा। डॉ. मस्ताना सत्ता के चरित्र के खूब नीमन से पहचानत बाड़ें। 'अनेयाय', 'वाह रे नेयाय!', 'छप्पन ईंच', आ 'झूठ के बछरु' जइसन कविता आज के राजनैतिक हालात पर करारा चोट ह।

कवि न्याय व्यवस्था के पोल खोलत कहत बाड़ें कि कोर्ट–कचहरी में न्याय एगो सपना जइसन बा, जहाँ गरीब खातिर मातम (मरसिया) बा आ अमीर खातिर शहनाई बाजत बा ''
गरीब ला मरसिया हवे, जग जानेला / अमीर ला, शुभ राग भरल शहनाई हऽ''

आज के राजनीति में धरम आ राष्ट्रवाद के नाँव पर जे खेल चल रहल बा, ओकरा के भी कवि बेबाकी से उघार लेले बाड़ें। 'छप्पन ईंच' कविता में उ लिखत बाड़ें: ''कहे लोग जे बाटे हमरी छप्पन ईंची छाती राम / साँच हवे कि लोकतन्त्र ला उहे लोगवा घाती राम''

कवि के मानल बा कि 'राम राज' के नाँव पर जनता के भरमावल जा रहल बा, जबकि असलियत ई बा कि 80 करोड़ लोग मुफ्त राशन पर निर्भर बा. 'झूठ के बछरु' कविता में उ कहत बाड़ें कि झूठ के बछरु हर जगह घूम रहल बा आ सच्चाई (ईमान) के दीया बुता रहल बा. मीडिया, जेकरा के लोकतंत्र के चौथा

खम्हा कहल जाला, ओकर भूमिका पर भी कवि 'भटकाव' आ 'भरम जाल' जइसन कविता में सवाल उठवले बाड़ें।

किसान, मजदूर आ गरीबी के पीड़ा

गाँव आ किसान मस्ताना जी के कविता के केंद्र में बाड़ें। 'चरचा', 'गरीबी के पहाड़ा', आ 'किसान के पीड़ा' जइसन रचना में गँवई भारत के दरद छलक रहल बा। कवि पूछत बाड़ें कि महल पर त सयकड़ों गीत लिखाला, बाकिर टूटल मड़ई (झोपड़ी) पर गजल कब लिखाई

''गीत सय सय लिखाते बा महल पर ६ केहू त कुछु लिखे, मड़ई ढ़हल पर''

किसानन के दुर्दशा के वर्णन करत उ लिखत बाड़ें कि जे दोसरा के पेट भरे खातिर पसीना बहावेला, आज ओही के पेट पर लात मारल जा रहल बा.

खास तौर पर, कोरोना काल के विपत पर लिखल गइल कविता ('कोरोना काल के हाल', 'आपन माटी') पाठक लोग के रोवा देवे के ताकत राखेले। मजदूरन के नंगे पाँव पलायन, भूख–प्यास आ शासन के संवेदनहीनता के एतना मार्मिक वर्णन भोजपुरी साहित्य में कम मिलेला: ''छाला परल, फफोला जागल ऐड़ी फाटे लागल / अबहीं बड़ा दूर घर बा ई, फिकीर काटे लागल''

पारिवारिक रिश्ता आ मानवीय मूल्य

तमाम संघर्षन के बीच, डॉ. मस्ताना रिश्ता के गरमाहट के नइखें भूलत। 'माई' आ 'बाबू जी' कविता माई–बाबूजी के प्रति अथाह प्रेम आ श्रद्धा के निशानी ह।

'माई' कविता में माई के अँचरा के छाया आ लोरी के वात्सल्य बा, त 'बाबू जी' कविता में पिता के तीरथ आ धाम से भी बड़ बतावल गइल बा:

''बाबू जी के चरनीयाँ, चारो धाम लागेला / उनका नेहिया के छाहें कहाँ घाम लागेला''

'बेटी' कविता में कवि बेटी के घर के मान, अभिमान आ दूनो कुल (नईहर आ सासुर) के रोशन करे वाला बतवले बाड़ें. एकरे साथे, सयुक्त परिवार के टूटे के दरद 'भुला गइल' आ 'बँटवारा' जइसन कविता में बतावल गइल बा, जहाँ एके आँगन में दीवार खड़ा हो गइल बा.

प्रकृति आ लोक–संस्कृति

कवि के जुड़ाव अपनी माटी से गहरा बा। 'नारायनी (गंडक नदी)' कविता में उ गंडक नदी के दु रूप देखावत बाड़ें–एगो जे जीवन देवेली आ संस्कृति के पालना ह, आ दोसर उ जे बाढ़ के समय 'काल' बन के आवेली।

ऋतु–वर्णन में भी कवि माहिर बाड़ें। 'अगराईल जाड़' में जाड़ा के मानवीकरण कइल गइल बा, जहाँ जाड़ा 'जवान' होके अकड़ रहल बा आ सूरज 'कनिया' (दुल्हिन) नियर सरमा रहल बाड़ें।

छठ परब पर आधारित 'खरना–गीत' आ 'कातिक' कविता में लोक–आस्था, शुद्धता आ उत्सव के जिअत चित्र बा।

दार्शनिक चेतना आ सामाजिक सुधार

कवि खाली समस्या के रोना नइखें रोवत, बलुक समाधान के ओर भी इशारा करत बाड़ें। 'बुद्ध के चरनीयाँ' कविता में उ पाखंड आ मनुस्मृति आधारित भेदभाव के नकारत बुद्ध आ कबीर के रस्ता (समता आ ज्ञान) के अपनावे के सलाह देत बाड़ें. उ साफ कहत बाड़ें:

''टीका, चन्नन, जनेव हऽ छल कपट कुल्ही समझा दीं''

ई प्रगतिशील चेतना डॉ. मस्ताना के एगो आधुनिक आ तार्किक कवि के रूप में स्थापित करत बा।

शिल्प आ भाषा–सौष्ठव

भाषा शैली:

डॉ. मस्ताना के भाषा एकदम सहज, प्रवाहपूर्ण आ 'खाँटी' भोजपुरी बा. ओमे बनावटीपन नइखे। उ देशज शब्दन के प्रयोग बड़ा खूबसूरती से करेलें, जइसेकृघुनाइल, अतकही, हिलकोर, फुलचुभी, नेवर, भमोर आदि।

उदाहरण खातिर, रिश्ता में आइल खोखलापन खातिर 'घुनाइल लरही' (घुन लागल रस्सी) के रूपक केतना सटीक बा.

प्रतीक आ बिंब:

कवि 'दीया' आ 'अन्हार' के मुख्य प्रतीक बनवले बाड़ें। 'झटकारीं अन्हार के' कविता में उ कहत बाड़ेंकृ''जागऽ एगो दीआ जरावऽ ६ भागो दूर अन्हरिया रे।''

एकरे अलावा, 'सूरज', 'नदी', 'नाव', 'मड़ई' आ 'महल' जइसन बिंबन के जरिया उ अपनी बात असरदार तरीका से रखत बाड़ें।

सीमा आ संभावना

हालाँकि ई संग्रह भाव आ विचार पक्ष में बहुत समृद्ध बा, तबो कतहुँ–कतहुँ विषय के दोहराव महसूस होला। गरीबी आ राजनैतिक भ्रष्टाचार पर कई गो कविता एके तरे के भाव के व्यक्त करेली सन। जदी एह विषय में तनी अउरी विविधता रहित, त संग्रह के असर आउर जादे रहित। हालाँकि, कवि के मकसद बार–बार चोट करिके सुतल समाज के जगावल बा, एह से एह दोहराव के 'आग्रह' के रूप में भी देखल जा सकत बा।

निष्कर्ष

अंत में, डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना जी के 'आस–अँजोर' भोजपुरी साहित्य के एगो महत्वपूर्ण उपलब्धि बा। ई संग्रह खाली कवितन के किताब ना ह, बलुक ई:

* प्रतिरोध के आवाज हः जे सत्ता के अन्याय आ सामाजिक पाखंड के खिलाफ बोलत बा.

* ममता के गीत हः जे माई, माटी आ माई–भाखा के प्रति प्रेम लुटावत बा।

* चेतना के अँजोर हः जे अंधविश्वास के अन्हार के चीर के तर्क आ ज्ञान के 'अँजोर' फइलावल चाहत बा।

कवि के ई संदेश कि "मन के उदास अँगना में भोर बनि के आईं ना /छपलस अन्हार सगरो, अँजोर बनि के आईं", पाठक लोग के मन में एगो सकारात्मक ऊर्जा भर देला। आज जब भोजपुरी फूहड़ता के आरोप से जूझ रहल बा, अइसन समय में 'आस–अँजोर' जइसन साहित्यिक आ वैचारिक कृति के आवल सुखद हवा के झोंका जइसन बा। ई किताब हर उ आदमी के पढ़े के चाहीं जे भोजपुरी समाज के धड़कन आ ओकर संघर्ष के समझल चाहत बा।

समीक्षित कृतिः *आस–अँजोर*
(भोजपुरी गीत, कविता संग्रह)
रचनाकारः *डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना*
प्रकाशकः *भोजपुरी प्रकाशन, नई दिल्ली*

❑❑

❍ **द्वारिका, नई दिल्ली**

शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

आर्किमिडीज के यूरेका

मिस्र के सिराक्यूज प्रान्त के राजा हेरॉन महान,
सोना–चाँदी, हीरा–रतन पर छिरिकत रहले जान।
रोज नया किसिम–किसिम के गहना–गुरिया गढ़ावे,
मोती–मूँगा–हीरा–पन्ना आउर जाने का ना जड़ावे !

एक बेर ओकर मन में आइल नया मुकुट बनवाईं
शुद्ध सोना के चमकत मुकुट माथे रोज सजाईं।
भइल आदेश सोनार के त मुकुट बना के लाइल,
चमकत–दमकत मुकुट देख राजा मने–मन मुस्काइल।

बाकि मन के कोना में एगो खटका जागल,
सोना खरा ना हवे एकर शक–सुबहा लागल।
रखलस एह विचार के अपने सभाजन के आगे,
बिना तूड़ले जँचाई कइसे, उपाय ना कवनों लागे।

भइल सहमति बोलावे के आर्किमिडीज जेकर नाम,
तरह–तरह परयोग में जुझल वैज्ञानिक बुद्धिमान।
आर्किमिडीज ले मुकुट हाथ में उलट–पलट परखलें,
उपाय तत्काल ना सुझल त मोहलत लेके परइले।

सोंचत जोहत समाधान के बुद्धि उनके हेराइल,
असली–नकली जाँची कइसे बुद्धि रहे भरमाइल।
दिमाग थकाइल, तन थकाइल, नाहिं मिलल उपाय
मन के फरहर करे खातिर गइलन हौदा में नहाय।

हौदा में जइसहीं डूबल देह, कुछ पानी बाहर बहल,
देख के ई पानी के बहल, बुद्धि उनके खुलल।
बोल पड़लें– "अरे इहे राज हउवे, मिलल आज उपाय!"
नंगे देह शहर भर दौड़लें– "यूरेका!!" चिल्लाय।

राज दरबार में भइल पेशी कि गइलन ई पगलाई,
बाकि उ त नाचत रहन– प्रयोग सफल बा भाई।
मँगवइलन मुकुट के साथे, सोना ओतने भार के,
पानी के एगो नाद मँगवइलन, देखे सभे चिहार के।

बारी–बारी सोना आ मुकुट के पानी में डुबवले,
पानी के स्तर केतना बदलल, एकरा के नपवले।
आइल अंतर नाप में, कहलें– निर्णय बा हमार,
सोना में मिलल बा चाँदी, धोखा देलस सोनार

कवनों वस्तु अपना घनत्व बराबर, पानी के हटाई,
सोना हलुका, चाँदी भारी बस इहे अंतर भेंटाई।
भइल सोनार के फजीहत मिलल जेल के दुआर,
आर्किमिडीज के बुद्धि के सभे कइल जय जयकार।

घनत्व के खेल समझ के भइल आसान विज्ञान,
भारी से भारी बोझ उठाके जइसे तैरे जलयान।
पानी के बहल देख के जइसे जागल विचार महान,
अइसने ढेर घटना के, इतिहास में भइल बा पहचान।

❑❑

❍ **उत्तम नगर, नई दिल्ली**

विष्णुदेव तिवारी

हमार उहाँ के

सुनले बानीं
मेहरारू के ओठ पर अमरित बसेला
हमार उहाँ के हथवो में अमरित बसल बा
उहाँ के डालल
एको चिटुकी चीनी से
चाहावा
अत मीठ हो जाला कि
हमरा पत पारी कान पकड़े परेला——
ना, ए दादा, अब ना!
साठा भइलीं
अब जो चिनियाइब त
कुछ बाकी ना रही
मए काम–धाम छोड़ के
सरिहावे परी
सब खाता–बही।

❑❑

❍ **बक्सर,बिहार**

रामप्रसाद साह

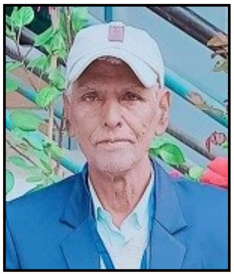

दोहा

पूत देवकी जेल में,जलमल बांटे लाल ।
अत्याचारी कंस के, आठवां हवे काल।।

माई ममता कोख के, खुसी आस उल्हास।
कइसे बाँची पूत के ,भेज नन्द के पास।।

सोना गेहूँ खेत में, कउनी लामा पोंछ।
मकई पोरठ बालमें,कृषक के उँचा मोछ।।

झनझन बाजत बा चना,तिसीठोप बा नाक।
पग पायल बा मसुर के,कृषिबाला के धाक।।

छाक भरल पानी परल,शीतल धरती आग।
सुख्खा दु:खा लोग के, चमकल बाटे भाग।

लगहर जेकर गाय बा,ओकर चमके रूप।
गोबर करसी मान पर,फसल खेत से भूप।

हाथे नइखे चोंच से, बिनल करी आकाश।
आपन हउवे तकनिकी,रंगमहल के बास।

नाके नतिया नाथ कह,गर में बा गरदांव।
अँगना घर में कैद बा,खुला कहाँ बा गाँव।

हवे जलम जे शक्स के, सरस लिखस साहित्य।
चन्दा चमके रात के, उदय सुभे आदित्य।।

❑❑

❍ **कलैया, नेपाल**

परधान काका

कनक किशोर

पात्र –
परधान काका – गाँव के मुखिया
ललन – गाँव के अनपढ़ युवक
मोहन – पत्रकार
(दृश्य मुखिया जी के दलान, बइठका में चार गो कुर्सी टेबल लागल बा, टीवी चल रहल बा, मुखिया जी चाय पी रहल बाड़े, ललन के आगमन)

ललन – गोड़ लागत बानीं काका
परधान काका – खुश रहऽ ललन। अकेले केने चलले हऽ।
ललन – रउवे पासे अइनीं ह।बाते अइसन रहे कि दूसरा भीरी ना कह पइतीं।
परधान काका – अइसन कवन बात रहे कि तूं अकेले में कहल चाहत बाड़ऽ। कवनो मदद के जरूरत बा का?
ललल – ना जी कवनो जरूरत रहित त रउवा से कहे में का दिक्कत रहे।बाकिर बाति अइसन बा कि कहत ठीक नइखे लागत।
परधान काका – बुझवलिया जनि बुझावऽ, सीधे बाति कहऽ।
ललन – एगो दूगो कहित त का रहे संउसे गाँव कहत बा कि चिरई – चुरूंग के कहो चील – गिद्ध, सियारो एह गांव में बिला गइल मुखिया जी के कारण।हम नइखीं समझत कि अइसे काहे लोग कहत बा। हमरा सुन के ठीक ना लागल।केकर – केकर मुँह बन्द करतीं।सोचनीं रउवा के बता दीं एही से अकेले अइनीं ह।
परधान काका – बाति ठीक कहत बाड़। हमरो कान में बाति ई आइल बा।तोहरा के सफ़ाई देब त तूं केकरा – केकरा के समझइबऽ आ तोहार बाति पर केतना आदमी बिसवास करी। आगे चुनावो बा सांच बाति सामने ना आई त ओकर असर चुनावो पर पड़ी।
ललन – त बताईं का कइल जाय कि सच्चाई लोगिन के सामने आ जाय।
परधान काका – अइसन करऽ कि झपटले जा के मोहन के अबहीं बुला ले आवऽ उनुकर विडियो मशीन के साथे। हम आपन बाति सबके सामने रखल चाहत बानीं लोकल चौनल पर।
ललन – ठीक बा।

(ललन अलोता जाई के मोहन के बाति समझा बुला ले आवत बाड़न साथे)
परधान काका – मोहन हम चाहत बानीं कि जवन दोष गाँव हमरा पर लगावत बा ओकर सच्चाई तूं अपना चैनल के माध्यम से लोगिन के सामने रखऽ।
मोहन – ई त हमार कामे ह। रउवा ई बताईं कि गांव से चिरई – चुरूंग, चील – गिद्ध, सियार भा दोसर जैवविविधता नष्ट हो रहल बा, हो गइल बा ओकर कारण का बा?
परधान काका – जैवविविधता के नष्ट होखे के दोष लोग हमरा माथे मढ़त बा काहे कि रसायन – कीटनाशक के उपयोग गाँव में हम शुरू कइनीं आ करवइनीं।हम एकरा से इंकार नइखीं कर सकत बाकिर ई कहब कि अनेक प्रजातियन के जीव – जंतु के गाँव से बिलाये के कारण हम ना एह गाँव के लोग बा। पैदावार बढ़ावे खातिर जरूरी बा रसायन – कीटनाशक के उपयोग बाकिर एगो सीमा में,आँखि मूंद के ना।हम उपयोग कइनीं ओह सब के एगो सीमा में, जरूरत मुताबिक साथे अपना खेत में कंपोस्टो डलनी। नतीजा हमार खेत के माटी के उर्वरा बांचल रहल।बाकिर हमरा मनो कइला पर लोग पैदावार बढ़ावे के लोभ में आँखि मूंद के अधिका रसायन – कीटनाशक के उपयोग कइल जेकर नतीजा खेत के उर्वरा शक्ति त गइबे कइल साथे चिरई – चुरूंग, चील – गिद्ध, सियार आ ना जाने कतने जीव – जंतु के ले गइल अपना साथे।अति सर्वत्र वर्जित असहीं नइखे नूं कहल गइल।मनई के रहन – सहन, खान – पियान, जोत – कोड़, पैदावार के तरीका सब जिम्मेवार बा एह खातिर। ई ना बूझि के हमरे के गाँव दोषी ठहरावत बा त गाँव परधान के नाते हमरा कवनो इंकार नइखे एह से।बाकी अंत में कहब अबहूं लोग चेते, जब जागऽ तबे बिहान।ई बाति तूं आज सांझि के अपना चैनल पर दिखा दिहऽ बाकिर फैसला गाँव के लोगिन के हाथ।

❑❑

❍ राँची, झारखंड

सपना के गठरी

स्वर्ण लता

महेंद्र के माई के महेंद्र से ढेर लालसा रहे। महेंद्र के बाबू कमला आपन इकलौता बेटा के इंजीनियर बना के आपन सपना पूरा कइल चाहत रहन।दस बिगहा जजात रहे बाकिर जिनिगी भर तन के एगो सुबहित बस्तर ना भेंटल।जबकी उनुके साथ के पढ़लका माहटर भा अमीन बन गइलन स त मटका के कुर्ता चमकावत रहेलन स।मदना अफसर बन गइल त मैदानो होखे चारे चक्का से जाला। कमले से सुनले रहीं कि मदन अपना बेटी के बियाह में पटना से कैटरिंग वाला के बोलवले रहे।कमल के त एगो बेटी रहे जेकर बियाह में इज्जत बचावे में दू बिगहा खेत बिका गइल रहे। समाज में दहेज आ देश में महंगाई देखि के कमल कहत रहन दइब बेटी पइसे वाला घरे दिहऽ हमरा जस घर खातिर बेटी लक्ष्मी ना माथ के भार होले।

महेंद्र पढ़े में तेज रहन बाकिर दुइयो बेर में इंजीनियरिंग के एंट्रेंस परीक्षा ना निकाल पवले। कमला एक बिगहा खेत बेच बंगलोर इंजीनियरिंग कॉलेज में महेंद्र के नाम लिखवा देले कि आगे के खर्च के व्यवस्था बैंक लोन से कर लेब। प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज शिक्षा के व्यापार बना देले बाड़न स। कमला कॉलेज के भारी फीस भरे खातिर शिक्षा लोन खातिर दसों बैंक में दउड़ले बाकिर लोन स्वीकृत ना भइल। स्थिति महेंद्र के नाम कटे के आ गइल। महेंद्र के माई कमला से कहली हमनी के बाद ई खेतवा महेंद्र के नू होई। महेंद्र के नोकरिया हो जाई त ऊ खेती करे अइह.। रउवा सोचीं जनि खेत बेच बबुआ के पढ़ा दीं। कवनो उपाय ना देख कमला मान गइले आ चार साल के पढ़ाई में चार बिगहा खेत बिका गइल।दस बिगहा के जगह कमला के चार बिगहा खेत रह गइल जेकरा से खरचियो ठीक से ना जुटे। चूल्हा ठंडाये के नौबत आ जाए बाकिर महेंद्र के लेके सपना के रंगिनियत कम ना होत रहे। दूनों बेकत के जिए के आधार सपने रहे।

महेंद्र चतुर्थ वर्ष में रहन त ओहि कॉलेज के अनुषंगी इकाई सुधा डेयरी में चयन हो गइल साफ्टवेयर मैनेजर के पद पर २.५ लाख के पैकेज पर।ना चाहतो योगदान कर लेले पढ़ाई खत्म भइला पर। इंजीनियर महेंद्र के ओहिजा कंपनी के दूध के बिक्री के हिसाब के साथे पशुअन के स्वस्थ के जिम्मेवारी के निर्वाह करे के पड़त रहे।उनुका अपना सिनियर के बात इयाद आ गइल जे महेंद्र के राति में पढ़त देख बोलले रहन पढ़ बबुओ पढ़ बेचे के त तेले बा, पढ़इया एहिजे धरल रह जाई। महेंद्र के माई – बाबू के सपना आ आपन कैरियर इयाद आ गइल। भविष्य के सोचके आपन इस्तीफा दे घरे आ गइलन। बेरोजगार लइका के हाल धोबी के कुकुर जस होला ना घर के ना घाट के। महेंद्र नौकरी खातिर ढेर हाथ गोड़ मरले सब बेकार।माई – बाबू के सपना रहन महेंद्र जे अब माथ के भार बनि गइल रहन।

इंतजार के घड़ी आ बेरोजगारी के दिन कटले ना कटे। बेरोजगारी में अपने जिनिगिया भार हो जाला त दूसर केहू भार बूझे त एह में गलत का बा। महेंद्र बड़ी हिम्मत कके बाबूजी के कहले कि हमार रूमेट बी टेक के बाद फाइनांस में एम बी ए कइले रहे आजु इंग्लैंड में साठ लाख के पैकेज में बा। हमहूं सोचत रहीं कि एम बी ए कर लितीं त नौकरी मिल जाइत। कमला कहले कि बेटा बाप के सपना होला।तू हमार सपना रह बाकिर इहो सांच ह सबके सपना पूरा ना होखे।तू जानत बाड़ कि कइसे बी टेक कइले बाड़ऽ।अब हमरा ताकत नइखे आगे पढ़ावे के।ना पास में संसाधन बा ना तोहरा से आसे रहल।अब जे बुझाय अपना बले करऽ। महेंद्र कहले हम राउर बेटा हईं।रउवे जस कुछ हमरो सपना रहे ऊ अबहीं मरल नइखे हमरा आँखिन में ऊ जिंदा बा।हम घर छोड़ जात बानीं ओह सपना के पावे खातिर । रउरा आ माई के आँखिन के सपना पूरा करे लायक हो जाइब त आइब ना त समझब महेंद्र दुनिया के मेला में भुला गइल। असहूं बेटा के काम ह बाप – दादा के संपत्ति बढ़ावल बाकिर हम त सब ताप गइनीं अपना बेकाम के पढ़ाई में।

महेंद्र घर छोड़ पटना पहुंच गइले।ना एह शहर में कवनो आथ अलम ना जेब में पइसा। शहर में लोग अपनों के पहचाने से इंकार कर देला त अनजान महेंद्र के माथ छुपावे के जगह कहां मिलित।कबो स्टेशन पर त कबो बस स्टैंड में, कबो मंदिर में त कबो रैन बसेरा में राति काटत आ लंगर में खाना खात महेंद्र के दिन कटत रहे कि एक दिन एगो भला मानुष शर्मा जी से भेंट हो गइल। महेंद्र के हालत पर तरस खाके

शर्मा जी आपन खाली गैरेज महेंद्र के रहे खातिर दे देलन। महेंद्र टियूशन पढ़ा के आपन खर्च निकाल लेत रहन।बचल समय में प्रतियोगिता के तैयारी करत रहन। क्लर्क, चपरासी,वनरक्षी, सिपाही से लेके बीपीएससी परीक्षा तक में तीन साल लागल रहले बाकिर कहीं ना निकाल पवले। कबो पेपर लीक त कबो पैरबी पुत्र आजु के व्यवस्था में सरकारी नौकरी के महेंद्र के सपना निगल गइल। सरकारी सेवा के सपना बिखरत देख महेंद्र कुछ अउर काम के बारे में सोचे लगले बाकिर उनुकर बुद्धि काम ना करे।आपन सपना के बिखरलो पर माई – बाबू के सपना उनुका मन के आगे बढ़े खातिर बाध्य करत रहे।

शर्मा जी के गैरज में रहत महेंद्र शर्मा जी के बड़ बेटी मनोरमा,जे फिजिक्स में पी जी करत रहे, के पढ़े में मदद कर देत रहन। शर्मा जी के काम में हाथ बँटा देत रहन। शर्मा जी सरकारी काम से पटना के बाहर रहत रहन त मनोरमा के युनिवर्सिटी छोड़े आ ले आवे के काम महेंद्र के रहे।मनोरमो के महेंद्र के साथ बढ़िया लागत रहे।ई नजदीकी कब प्रेम में बदल गइल ई महेंद्र – मनोरमा के पता ना चलल बाकिर जब पता चलल त ऊ लोगिन एक दूसरा के साथ जिनिगी बितावे के निर्णय ले लेल लोग। महेंद्र के घर से दूर एगो आपन परिवार मिल गइल रहे। मनोरमा जब महेंद्र से आपन संबंध के जानकारी आपन माई के देली आ समझवली त उनुका मनोरमा – महेंद्र के संबंध पर ऐतराज ना रहे। मनोरमा के बाबूजी के कान में जब मनोरमा – महेंद्र के संबंध के बात गइल त उनुका एह संबंध पर आपत्ति रहे। आपत्ति के मुख्य कारण महेंद्र के बेरोजगार भइल रहे। काहे कि शर्मा जी के महेंद्र के साथ बेटी के संबंध में बेटी के भविष्य अंधकारमय लागत रहे। मनोरमा के माई कतनो समुझवली ऊ ना मनले। महेंद्र बात कइल चहलन त शर्मा जी साफ कह देले एह विषय में हम तोहरा से बात ना कइल चाहब।ई देख मनोरमा खुद बाबूजी से बात करे के निर्णय लेली आ कहली बाबूजी हमरा के रउवा पढ़ा के एह लायक बना देले बानीं कि हम आपन जीवन महेंद्र के साथे सुखमय बना लेब। ठीक बा महेंद्र आजु बेरोजगार बाड़े बाकिर उनुका अंदर खुद्दारी मरल नइखे। जेकरा भीतर हौसला आ खुद्दारी रही ऊ कबो भूखे ना मरी।बिसवास रखीं हमनीं का मिलके एगो नया खुशहाल जिंदगी बिताइब जा एकर भरोसा बा। बेटी के बात सुनके आ ओकर आँखिन में महेंद्र के प्रति प्रेम आ बिसवास देखिके आपन सहमति दे देलन। महेंद्र – मनोरमा कोर्ट मैरिज कर शादी के बंधन में बंध गइल लोग।

शादी के बाद महेंद्र मनोरमा से कहले कि माई – बाबू के सपना हमरा इयाद बा हमार अइसे तोहरा घरे बइठल रहला से ना पूरा होखी।काल्हु तोहार बाबूजी से मिले शाह साहब आइल रहन।बइठका में इंतजार करत रहन त हमरा से बात होखे लागल।ऊ हमार माइनिंग इंजीनियरिंग के डिग्री के जनला बाद कहले कि हमार लौह अयस्क के खान चाईबासा में बा तू हमरा साथे चलऽ हमार खदान में एगो प्रबंधक के जगह खाली बा। हमहूं सहमति दे देनीं।काल्हु उनुके बोलेरो से साथे चल जाइब।हमार बैग तइयार कर दिहऽ। महेंद्र कहले ई परिवर्तन हमरा जीवन में तोहरा अइला से भइल ह। हमरा खातिर तू बहुत शुभ बाड़ू। मनोरमा कहली हम ना रोकब बाकिर हमार सपना दूनों बेकत मिल के कुछ विशेष करे के बा। रउवा खुशी खुशी जाईं,हमार मंगलकामना रउवा साथे बा। अब राउर सपना हमार सपना हो गइल बा। दशहरा ले हमार पी एच डी के रिजल्ट आ जाई। दशहरा में आइब त हम कुछ विशेष बात करब।

महेंद्र के चाईबासा खान के नोकरी पसंद आ गइल रहे।उनुका रहे आ खाये के व्यवस्था कंपनी के होस्टल में रहे। वेतन के कुल पइसा बांच जात रहे जे ऊ मनोरमा के आधा आ आधा बाबूजी के भेज देत रहन। मनोरमो एगो प्राइवेट कोचिंग क्लास ज्वाइन कर लेले रही जेह में फिजिक्स के क्लास लेत रही।उनुको हर माह बढ़िया भुगतान मिल जात रहे। सितंबर के अंत में मनोरमा के पी एच डी अवार्ड मिल गइल। ओने महेंद्र के बाबूजी के महेंद्र के नोकरी आ शादी के पता महेंद्र के चिट्ठी से चलल त फोन करके कनिया के साथे गांवे आवे के कहले त महेंद्र कहले बाबूजी राउर सपना अबहीं अधूरा बा हम माई आ राउर सपना के गठरी जोगा के रखले बानीं अपना आंखिन में। हम जल्दी आइब रउरा लोगिन के पास। ढेर दिन दूर रहनीं अब ना रहब, जल्दी आइब,कहत फोन रख देले।

दशहरा के छूट्टी में महेंद्र पटना मनोरमा भीरी गइले त बाबूजी के बात बतवलें। मनोरमा कहली शादी करके परा गइनीं केहू अइसन करेला। अब हम ना जाए देब।अब एहिजे रहे के बा।राउर परिवार के सपना के गठरी पर हमरो अधिकार बा। कवनो बहुरिया के ससुराल के सुख – दुख बिना

मंगले ओकरा आंचर में आ जाला।माई – बाबूजी के सपना के गठरी अब हमरा हवाले करीं, मिलजुल के पूरा कइल जाई। महेंद्र कहले ई त ठीक बा बाकिर चाईबासा जाए से जनि रोकऽ हम ओकरे बले बाबूजी के सपना पूरा करब। मनोरमा कहली शाह साहब के नोकरी से बेसी के नोकरी पटना में मिल जाई बाकिर हमरा मातहत काम करे के होई, मंजूर होखे त बोलीं। महेंद्र कहले बुझवलिया जनि बुझावऽ, खोल के बोलऽ। मनोरमा कहली कि हमरा के रउवा पढ़वले बानीं, हम राउर टैलेंट से परिचित बानीं।आठ – दस महीना के कोचिंग क्लास आ प्रबंधन के हमरो अनुभव बा ई देख हम कोचिंग क्लास खोले के निर्णय लेले बानीं।राउर देल पइसा आ अपना कमाई के पइसा लगा के हम बगल के बनत मार्केट कम्प्लेक्स में एगो बड़ जगह भाड़ा पर लेले बानीं आ ओकर अग्रिम तीन लाख दे चुकल बानीं। फर्निशिंग के पइसा हमार सखी पुष्पा लगवली ह। रउवा मैथ,हम फिजिक्स आ पुष्पा केमेस्ट्री के क्लास लिहें।आई आई टी के तइयारी करावल जाई। कोचिंग के नाम रउवा डिसाइड करे के बा दसमी के दिन उद्घाटन, पूजा, हवन करा लेल जाई। महेंद्र के आपन सपना के गठरी हलुक बुझाए लागल।कबो मनोरमा के त कबो अपना के दे खस आ कहले कि अब सपना के गठरी हम का खोलीं तू त पहिलहीं खोलिके सजा लेले बाड़ू। अगर तोहरा ऐतराज ना होखे त हम कोचिंग क्लास के नाम ' के के एडवांस कोचिंग सेंटर ' रखल चाहत बानीं।के के के मतलब कमला – किरण, बाबूजी – माई के नाम। हमरा ऐतराज काहे होई? मनोरमा कहली। महेंद्र कहले ठीक बा बाकिर मनोरमा, डाइरेक्टर के त अनुमोदन लेल जरूरी बा कहत मनोरमा के अपना देने खींच लेले। मनोरमा सरमा के हाथ छोड़ा लेली। मनोरमा चाहत रही के महेंद्र के माई – बाबूजी एकर उद्घाटन करस बाकिर महेंद्र मना कर देले ना ई काम के शुरुआत उहां सभे से आशीर्वाद लेके तोहरा हाथे शुरू कइल जाई, तू हमनी खातिर लक्ष्मी हऊ। अबहीं सपना के गठरी में अउर बहुत कुछ बा ऊ सब पूरा करि माई – बाबूजी के बोलाइब, अबहीं तनी धीरज धरऽ। ' के के एडवांस कोचिंग सेंटर ' के उद्घाटन मनोरमा के हाथे हो गइल आ तीन महीना के अंदर गति पकड़ लेलस।शहर के प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर में के के कोचिंग के नाम आ गइल।अगिला दशहरा तक शहर के अलग–अलग इलाका में के के कोचिंग के पांच गो फ्रेंचाइजी खुल गइल।शहर के किनारे छव बिगहा जमीन में आलिशान बिल्डिंग आ चारदीवारी खड़ा हो गइल – नाम दिआइल के के फार्म हाउस, जेकर उद्घाटन के तिथि चइत नवमी के पुजाई के दिन तय भइल। महेंद्र आ मनोरमा के गिनती शहर के गणमान्य लोगिन में होखे लागल।

महेंद्र मनोरमा संगे फगुआ में गांव पर गइले त दूनों बेकत के देखि कमला आ किरण के आँखि जुड़ा गइल।पतोह के अइला के खुशी में भर गांव मिठाई बंटाइल, सत्यनारायण भगवान के कथा भइल। महेंद्र के देखि कमला के सभ सपना पूरा हो गइल। गांव से लौटत खा महेंद्र माई – बाबूजी के साथे पटना लेले अइले।माई – बाबूजी के हाथे नवमी पुजाई के दिन ' के के फार्म हाउस ' के उद्घाटन भइल। महेंद्र कहले कि बाबूजी राउर सपना के गठरी ढेर दिन ले ढोवनी आजु उतार के रउरा आ माई के चरण में रखत बानीं, स्वीकार करीं। सपना के गठरी उतारि आज हम रउवा चरण में रखे में सफल भइनीं, राउर बहुरिया मनोरमा के बल पर। अब रउवा लोगिन हमनी जोरे एहिजे रहब गांव पर के जमीन पर बाबा के नांव से एगो स्कूल खोलवा दिहीं आजुले गांव में लइकन के पढ़े खातिर बढ़िया स्कूल तक नइखे। कमला बेटा – पतोह के छाती से लगा लेले। कमला आ महेंद्र के आंखि से झर झर आंसू बहे लागल।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

सोनी पाण्डेय

आखिर में जवन बचल

आखिर में जवन बचल
ओहि के बचावे में लागन रहलीं
चौउका में बाचल रोटी
सबका भूख मेटावे भर ना रहे
पर एतना भरोसा रहे कि
बचल बा एगो रोटी चौउका में

एगो चिट्ठी बचवले रहलीं आखिर ले
ए उम्मीद में कि भेजब सन्नेस
एक न एक दिन
हमार आखिर चिट्ठी जबले बचल बा
बचल बा इ भरोसा कि
तोहसे नेह–नाता बचल बा
लिखब जरूर तोहके चिट्ठी
भेजब तोहके मन क बात आपन

नेह से भरल गगरी
अक्सर छूटत–टूटत बचल
बहुत कम बा नेह दुनिया में
सबकेहू ओही के तोड़े में लागलबा
सब केहू उजारे में लागल बा नेह–नाता
हम बचावेलीं नेह क गगरी
कोने कतारी, कोठा, अंटारी में
उम्मीद बा बचल रही एहि तरे नेह दुनिया में

बचावे की कोशिश में
जवन बचल आखिर में
उ हमार अकेलापन रहे
बहुत हल्ला बा बाहर
अब ध लेहल चाहत बानी चुप्पी
इ भरोसा बा हमके कि
बचल रहब हमहूँ
बचल रहले की आखिरी उम्मीद लेखा।

❑❑

❍ **आजमगढ, उत्तर प्रदेश**

सविता गुप्ता

आजकल बिआह में

शादी बिआह में देखऽ
आजकल बस होखऽता शोबाजी ।
आशीष देबे माई बाबू ,चाहें होखे न राजी ।

दुल्हा दुल्हिन गुण ना दिल मिलऽल पतरा के देखाई ?
दूर आँख से पानी लाज बस देबे के बा बधाई ।

पूछा पाछी आ निमन्त्रण सभे वाटसैप से जाता।
बिआह के नेग चार ,रसम
सगरो अब बिलाइल जाता।

किसिम किसिम के खाना अउर
सजावट के देखावा बा।
पात के भोज ,पुड़ी, बुनिया, खाजा ,कसार , हेरात बा।

घर फ्लैट में समाईल टीना में माढ़ो तइयार बा।
भुलाइल लोक गीत अब तऽ फिल्मी गीतन के बहार बा।

नेवता में लिफाफा अउर पे टी एम के बा जमाना ।
डेस्टिनेशन बिआह के चलन बा देखऽ लुटाता खजाना ।

❑❑

❍ **राँची झारखंड**

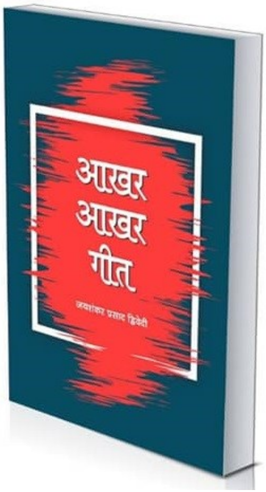

गीत

डॉ उषा किरण

सरसो फुलाई गइले, मन हरिआई गइले
अब रउआ सुध लिउ, हमरो सजनवा।

आम मोजराइल, कुहके कोयलिया
मन अकुलाइल, सँझिया बिहानिया
झिरी–झिरी ओस झरे, दुअरा अंगनवा
अब रउआ सुध लिउ..... ।

लह–लह करत बाटे , खेत खरिहानी
खुशिया में झूमत बाड़े, सब ही परानी
बाट हम जोहतानी, भोर भिनुसरवा
अब रउआ सुध लिउ.... ।

टह–टह खिलल बाटे, सेमर के फूलवा
झूलतारी पुरवइया, मस्ती में झुलवा
दिन–रात बटिया, बहारी हम अंचरवा
अब रउआ सुध लिउ.... ।

❑❑

❍ **पूर्वी चम्पारण, बिहार**

सुदामा जी के तकलीफ

विद्या शंकर विद्यार्थी

संघतिया के बात बा बिपतिया निहारऽ
सुनऽ गिरधारी नाथ हलतिया सम्हारऽ

कवनी जिनिगिया के भोगींला ई दुखवा
पतझड़ के पतझड़ बा बगिया के रूखवा
धार में डूबावऽ चाहे, संसतिया उबारऽ।

तोहरा दोअरिका में आस अइलीं लेके
हालत बा पातर आ रहींला दुख सेके
कांट डालऽ चाहे अब रहतिया बहारऽ।

हँसे के तजुर्बा ना आइल हमरा खुलके
जादे कहाइल होई त माफ करिहऽ भूलके
लोरवा के बाद बा, दरदिया बिचारऽ।

❑❑

❍ **रामगढ़, झारखंड**

केशव मोहन पाण्डेय

सपना

हमहूँ सपना देखेनी
सपनवे ओढ़ेनी
सपनवे बिछावेनी,
पेट के क्षुब्धा /सपनवे से मेटावेनी।
सपने से चलत सँसरी बा
जेकरा लगे सपना नइखे
ओकर जिनगी तऽ
जीअतके में फँसरी बाऽ।
हमरा लगे /झोरा भर के सपना बा
सपना के अंबार बा,
सपना नइखे तऽ
सब धूराऽ, /सपनवे से परिवार बाऽ।
सपना हऽ/बाबूजी के असरा के
माई के जोगावत रिश्तन में
मुस्कान के /आ दिदिआ के बज़ड़ी के,
चिरइया के /खुलल आसमान के
सपना हऽ अंर्धागिनी के
लइकन के /दुअरा के बकरी के,
सपनवा तऽ हमरो बा
नून, तेल, लकड़ी के।
स्पना /पढ़ाई के
लिखाई के /रिश्ता निभवला के
जोरन पेठवला के
कान में अँगुरी डाल/बिरहा गवला के
घर के /दुआर के
सोंझका ओरी के /सरकत लरही के,
सबके अँखिया में बसेला सपना
हाँड़ी पर चढ़त परई के।
खाली सुतले में मत देखीं
सपना–रोग के /दवाई के,
अँखियो उघार देखीं
सपना के सच्चाई के।
जो जी जीन से जुगुत करेब तऽ
सगरो बिपत धूरा हो जाई,
तनी चाह के तऽ देखींऽ
राउर सगरो सपना
पूरा हो जाई।।

❑❑

❍ **उत्तम नगर, नई दिल्ली**

डॉ. सुमन सिंह

❍ **सहायक आचार्य**
हिंदी विभाग
मुकुलारण्यम् महाविद्यालय, सिगरा ,वाराणसी

उहे अदिमिया

" का भइया ! तोहार चाल हमके तनिको ना समझ में आवेला।अइसन धउरवला ह कि हाँफत–हाँफत करेजा दुखाय लागल। अइसन ऊँहवा का रहल ह भाय कि हेतना डेराय गइला ह ....आंय।" आपन गोल –गोल आँख नचावत, बहुत मुश्किल से मनोज अपने हंफरी के कंट्रोल करे क कोशिश में लगल रहलन।परताप मुस्कियात चाह पियत कनखी से चौरसिया ओरी ताकत पुरहर भेद से भरल रहलन।जेतने मनोज परेशान ओतने परताप उनकी ओर से बेधियान।

" का हो भइया लोग ! कवने ओरी से गोल आवत हे ? का परभू इनहुँ के त ना ले लिहला अपने चपेट में।देखा बचवा बनारस में रहके बाबा बिसनाथ के बाहन सांड –वांड़ के चपेट में भले आ जइहा बाकिर एह परताप के चपेट में मत अइहा नाहीं त कवनों करम तोहार छूटी ना।लुटाय–पिटाय के बरोबर हो जइबा।" कह के चौरसिया हँसे लगलन।चौरसिया के हँसी क फुलझड़ी जेतने छूटे ओतने परताप के आँखि से क्रोध क लुत्ती छिटके।

खिसियात ,दाँत किटकिटावत कहलन –

" देखा ! इहे कुल सहूर तोहार हमके सोहाला ना।जब देखा तब पीछे पड़ल रहेला तू।एक त हम तोहार परमानेंट ग्राहक अउर दूसरे प्रचारक।. अपने फेसबुक से लेके इंस्टा तक रील बना –बना के हम तोहार मुफ्त में प्रचार करीला का इहे कुल प्रपंच सहे खातिर। तोहके त हमार एहसान मानके स्पेशल चाह मुफ्त में पिआवे के चाही आ तू बेइज्जत करे में लवलीन हउवा।जा भइया बहुत देखलीं बाकिर तोहरे नियन एहसान फरामोस ना देखलीं।चला अब बनाइए देले हउवा त मनोज ओरी से आज क चाह पिया दा। काल्हीं से त आपन राम तोहरी ओरी चरन धरें त पाप।" परत.ाप क खुनुस चाय के भाप संगे ऊपर उठत अदरक –इलायची के सुगंध साथे उड़त जात रहे।

मनोज क धियान इन्हन लोग के कलह–कुचरचा ओरी तनिको ना रहे ऊ त गुरुजी के बंद केवाड़ अउरी तीन बार खटकत कुंडी के रहस्य में उरझल रहलन।उनके चिंता में बूड़ल देख के अपने तिरछी मुस्कान के काबू में करत परताप कहलन " अच्छा ! चला आज दिन बिसराम करा हमरे रूम पर।साँझी के सिवसंकर भैया से फिरो भेंट मुलाकात क कोसिस होई।ठीक न ?" मनोज के कान्ही पर हाथ धरत उठ खड़ा भइलन परताप।संगे चलत तन क असंगत भइल मन दुनू जानी के पकड़ से बाहर रहे।केहू तरे एहर –ओहर क बात करत, बिगरल मन के ठेकाने लगावे क कोशिश करत फिरो साँझी क शिवशंकर गुरू जी के गली में दुनू जनी ठाड़ रहलन।परताप के एना पारी कुंडी खटखटावे खातिर मनोज के धकिआवे के ना पड़ल।किवाड़ भेड़ल रहल , ओकरे फांफर में से बलब क पियरका रोशनी बाहर झाँकत रहे। रोशनी क ओट लिहले परताप भीतर देखे और ई जाने क पूरा कोशिश कइलन कि भईया कहीं एने –ओने हउवन कि ना। भइया त ना बाकिर जवने साया के छाया से ऊ बचल चाहत रहलन ऊ उनके धर लिहलस।परताप ओकरे चंगुल में फँसल अइसे दि ाघिआये लगलन कि मनोज डर के मारे काँपत थरथर आवाज में पूछ बइठलन–

" का भइल भइया ? कवनों असगुन –वसगुन .... ।"अबहीं बात पूरा ना हो पावल कि परताप बुदबुदइलन –

" गोड़ लगत हईं भउजी। मनोज आवा गोड़ लागा भाय।" मनोज सोहर के गुरुजी के पत्नी क गोड़ लगलन।उनके लगल क गुरुजी ना सही उनकर अर्धांगिनी सही।आधा पुण्य त ऊ कमाई लिहलन।परताप अबहीं कुछ पुछले चाहत रहलन कि मनोज बाल सुलभ जिज्ञासा लिहले पूछ बइठलन – " गुरुजी हईं न घरे अम्मा जी ! ?"

" के अम्मा ह इँहा ? आंय ?।" एतना सुंदर –सुभेक मेहरारू क बोली बानी एतनो उरेठ आ करकस हो सकेला,सपनों में ना सोचले रहलन मनोज।अकबका के गुरुजी के अर्धांगिनी ओरी निरखे लगलन।

" केवन गुरू आ केकर गुरू जी रे ? " मनोज के हतचेत देखके परताप मोर्चा सम्हरलन।

" अरे ! आप गुरुजी क अर्धांगिनी! त हमहन क अम्मा भइलीं न ? एही से ई मनोज कहलन ह आपके अम्मा।"
" हम अपने लइकन क आजी –अम्मा हईं।कुल्ह टोला –महल्ला क ना।हे रे बीखुआ पानी पीआव ... तोहन बइठा।हम बोलावत हईं।" कहके गुरुआइन भीतर चल गइलीं।ई लोग बैठका में बइठ के पानी आ गुरुजी क इंतजार करत रह गईलन बाकिर बीस–पच्चीस मिनट के बाद भी केहू ना आइल। हिम्मत करके परताप ओह कमरा ओरी गइलन जवने में गुरुआइन अदृश्य हो गइल रहलीं।
" ए भउजी ! भइया कब ले अइहन।कुछ बात भइल ह आपकै ?"
" आइल बा ? एतना हाली त हम मर जाइब तब्बो ना आई त तोहरे बोलवले आई निस्तनिया।"
" हम गुरुजी के पूछत रहलीं हं।"परताप घबरा गइलन।
" त का हम कवनों आन के कहत हईं ?" गुरुआइन क पारा चढ़े शुरू हो गइल रहे।
" त आप उनहीं क बात करत हईं ? परताप खीस सम्हारत कहलन।
" त केतना अदिमी रहेलन एह घर में ? "
" एगो ऊ पापी त एगो ऊ।" एह 'ऊ' के समझे में माथा चकरा गइल परताप क। पीछे से मनोज उजबुक नियन इनहन दुनू जानी क बवाल बतकही सुनत रहलन।
" के पापी ? बोले में परताप क जीभ लड़खड़ा गइल।
" ऊहे अदिमिया।" गुरुआइन तमक के कहलीं।
" कवन ? आपकै ?" परताप हरान हो गइल रहलन।
" त का अनकर ?" कुढ़न से लाल हो अइलीं अम्मा।
" हम गुरुजी के पूछत हईं ,बीखुआ के ना ए भउजी " परताप रुआँसा हो गइलन।
" हमहूँ त ओही अदिमिया के बतावत हईं।"
" त का फोन ना उठावत हउवन का गुरुजी ? " एना पारी मनोज पुछलन।
" कवन गुरू जी ,केकर गुरू जी। मुँहफूंकना कब ले गुरू बन गइल ? आज ले हमार फोन उठवले ह कि अब उठाई ।पानी पिआवे के कहलीं ह त मोहपातर फरार हो गइल ह। " गुरुआइन अउर लाल अंगार।
" हमहन बीखुआ के ना गुरू जी के पूछत हईं।"अब परताप अउर मनोज दुनू जनी क धैर्य जबाब दे देले रहल।
" त का हम पिंगल पढ़त हईं कि तोहके ना बुझात ह पापी !" दाँत पीसत गुरुआइन कहलीं। अब दुनू जनी क सब्र क बाँध टूट गइल रहे बाकिर गुरु जी से भेंट मुलाकात क कवनों उपाय नजर न आवत रहे तब्बो मनोज के लगे कि कवनों भी पल उनकर श्रद्धेय आ जइहन। इंतजार जारी रहे।

❑❑

क्रमशः

❍ वाराणसी (उ0 प्र0)

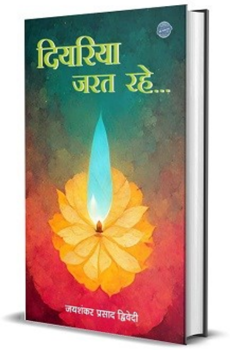

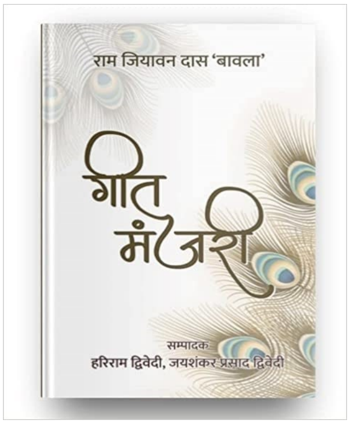

सूत्रधार कौन?
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
आखर आखर गीत
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
दियरिया जरत रहे...
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
उचरत हरिनन्दी के पीर
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
धक् से लागल बात बावरी
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
राम जियावन दास 'बावला'
गीत मंजरी
(तब आ अब)
भोजपुरी साहित्य में महिला रचनाकारन के भूमिका

KBS AIR & GAS
KBS Air & Gas Engineering
SALE & SERVICE
* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.
Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana